



दि ग्राम टुडे

उत्तरा खंड,मध्यप्रदेश, उत्तर प्रदेश,. राजस्थान,बिहार,महाराष्ट्र, गुजरात, संघ प्रदेश एवम बुंदेलखंड से एक साथ प्रसारित

वर्ष : 07 अंक : 50

रविवार 29 सितम्बर, 2024,

मूल्य : 2.00 रु. पृष्ठ : 08

आजमगढ़ मे मे बोले अनिल राजभर कहा सपा राज मे होता था दंगा भाजपा राज मे कानून है चंगा

दी ग्राम टुडे पेपर आजमगढ़ मे पहुंचे प्रभारी मंत्री अनिल राजभर ने कहा- अखिलेश यादव व सपा कानून व्यवस्था पर उठ रही सवाल तो इससे बड़ा दुर्भाग्य कुछ नहीं, सपा राज में था दंगा, योगीराज में कानून व्यवस्था का डंका

अखिलेश यादव के लगातार भाजपा पर कानून व्यवस्था के साथ तमाम मुद्दों पर हमले पर आजमगढ़ पहुंचे प्रभारी मंत्री व सूबे में कैबिनेट मंत्री अनिल राजभर ने पलटवार किया है। उन्होंने कहा कि कानून व्यवस्था पर अखिलेश यादव और समाजवादी पार्टी अगर सवाल उठा रही है तो इससे बड़ा दुर्भाग्य क्या हो सकता है। भारतीय जनता पार्टी को इन तथाकथित समाजवादियों से सीखने की जरूरत नहीं है। वहीं उन्होंने अखिलेश यादव पर हमले जारी रखा। प्रभारी मंत्री अनिल



राजभर आजमगढ़ के नेहरू हाल सभागार में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के जन्मदिवस को लेकर पार्टी के सेवा

परखवाड़ा में उत्साह के साथ भाग ले रहे हैं। आज की इस गोष्ठी में आजमगढ़ मऊ बलिया के लोग शामिल हुए हैं। पूर्व छ्त्रअखिलेश यादव पर प्रभारी मंत्री ने कहा कि बार-बार छोटी-छोटी बातों को ट्वीट कर वह व्यवहारिक दुनिया से कट रहे हैं। इसी लिए उनकी यह स्थिति है। मंत्री ने कहा कि पिछले कई दिनों से प्रदेश के कई जिलों में भारी बारिश हो रही है। प्रकृति की आपदा है। दिक्रतों का सामना करना पड़ रहा है। लेकिन बार-बार इसको सोशल मीडिया पर वायरल कर बाल की खाल नहीं निकालनी चाहिए। वहीं उन्होंने कहा कि अखिलेश यादव जी की सरकार में दंगा होता था और वर्तमान में योगी सरकार में कानून व्यवस्था में डंका बज रहा है। यह सभी को दिख रहा है। उन्होंने कहा कि लोकसभा चुनाव में भ्रामक नारा देकर उन्होंने कुछ सीट पर जीत हासिल कर ली लेकिन यह बार-बार नहीं हो

सकता। यही उनकी दिक्रत है। अब उनको समझ में नहीं आ रहा कि वर्ष 2027 में होने वाले विधानसभा चुनाव में वह कैसे लोगों को गुमराह करेंगे। उन्होंने आने वाले दस सीटों के उपचुनाव में भी अखिलेश को चुनौती दी। वहीं कहा कि आरक्षण को लेकर अखिलेश यादव और उनके दोस्त राहुल गांधी की असलियत सामने है। दलित व पिछड़ा वर्ग देख रहा है। अब उनकी बात में कोई नहीं आएगा। अमेरिका में अखिलेश के दोस्त राहुल गांधी की दिल की बात जवान पर आ गई। आरक्षण को लेकर उन्होंने जो कहा वह सबके सामने है। जनता भी देख रही है कि वर्तमान सरकार मैं कहीं कोई संविधान पर किसी प्रकार की आंच नहीं है। बल्कि सम्मान ही हो रहा है। वहीं भारतीय जनता पार्टी में कार्यकर्ताओं की सुनवाई न होने को लेकर उन्होंने कहा कि सामंजस्य की कहीं कोई कमी नहीं है।

मृतक परिवार के घर पहुंचे विधायक ने दी सांत्वना

मोहनलालगंज लखनऊ मार्ग दुर्घटना में हुई बहरौली के युवक की मौत पर पूर्व विधायक शोक संतप्त परिवार के घर पहुंच कर शोक संवेदना व्यक्त की मोहनलालगंज विधानसभा क्षेत्र के पूर्व सपा विधायक अंबोश सिंह पुष्कर सुवंस खेड़ा मजरा बहरौली के रहने वाले राजकुमार उर्फ शिवकुमार 32 वर्ष जो कि चालक थे टी पी नगर से वापस अपने घर जा रहे थे कि बलिया एक्सप्रेस वे पर पोखरा रसूलपुर के निकट सर्विस रोड पर वाहन की जोरदार टक्कर से कर क्षति ग्रस्त हो गई और वह उसी कर में 27 सितंबर को मार्ग दुर्घटना के कारण मृत्यु हो गई थी यह जानकारी मिलने



पर पूर्व विधायक श्री पुष्कर ने शोक संतुप्त परिवार से मिलकर सांत्वना दी,मृतक के परिवार में उसकी पत्नी सोनी ,पुत्री काव्या, पुत्र युग 8 माह

परिवार में है राजकुमार की मौत से पत्नी का बुरा हाल था वहीं मासूम पुत्र को तो यह भी नहीं पता कि उसके सिर से पिता का साया छिन गया ।

लोअर परेल में 520 करोड़ की नई कार पार्किंग से 300 करोड़ का नुकसान



माटुंगा, मुंबादेवी, फोर्ट और वली के अंतर्गत उन्नत मल्टीलेवल इलेक्ट्रोमैकेनिकल कार पार्किंग सिस्टम (शटल और रोबोपार्कर सिस्टम) में पिछले नुकसान को नजअंदाज कर मनपा ने फिर से लोअर परल के डामर प्लांट में 548 कार पार्किंग के लिए 520 करोड़ के टेंडर जारी किए हैं। इस टेंडर में ठेकेदारों और अधिकारियों की मिलीभगत मानते हुए रद्द कर कार्रवाई की मांग आरटीआई कार्यकर्ता अनिल गलगली ने की है। लोअर परल में 520 करोड़ की इस नई कार पार्किंग, जिससे 300 करोड़ का नुकसान होगा।

आरटीआई कार्यकर्ता अनिल गलगली द्वारा मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे,

उपमुख्यमंत्री देवेन्द्र फडणवीस और मनपा आयुक्त भूषण गगरानी को भेजे गए पत्र में कहा गया है कि पिछली शिकायत पर कोई ध्यान दिए बिना अधिकारियों ने साउथ लोअर परल में डामर प्लांट में 548 कार पार्किंग के लिए 520 करोड़ का नया टेंडर जारी कर दिया है। हर कार के पीछे 95 लाख खर्च होगा। इससे इस टेंडर में 300 करोड़ का घाटा होगा। इसमें कोई संदेह नहीं है कि इस निविदा में मूल उपकरण निर्माण भागीदार सभी निविदाकारों में से मेसर्स सोंटेफिन पार्किंग प्राइवेट लिमिटेड ही होगी। इसके पूर्व मनपा द्वारा सौंपे गए कार्यों में माटुंगा, फ्लोरा फाउंटेन और वरली शामिल हैं। फ्लोरा

फाउंटेन (विशाल कंस्ट्रक्शन) में 70 करोड़ से 176 कार पार्किंग की व्यवस्था की गई है। प्रति कार की कीमत 39.77 लाख है। वरली (श्री एंटरप्राइजेज) में 640 कार पार्किंग कार्य 216.94 करोड़ रुपये में दिए गए हैं और प्रति कार लागत 33.90 लाख है, जबकि माटुंगा (रेलकॉन इंफ्रास्ट्रक्चर प्रोजेक्ट) में 475 कार पार्किंग कार्य 103.87 करोड़ रुपये में दिए गए हैं और प्रति कार लागत 21.87 लाख है। इसके अलावा एमएमआरडीए के मालवणी में 669 कार पार्किंग का काम 150 करोड़ की लागत से दिया गया है, जहां प्रति कार लागत 22.42 लाख है। अनिल गलगली के अनुसार, निविदा जारी करते समय अधिकारियों द्वारा मूल्य मूल्यांकन ठीक से नहीं किया गया था क्योंकि दरों का कोई विश्लेषण नहीं किया गया था और न ही विभाग ने भारत भर में कार्यान्वित की जा रही अन्य समान परियोजनाओं को मूल्य मूल्यांकन के लिए संदर्भ बिंदु के रूप में लिया था। सीपीडब्ल्यूडी,

एनएचआईडीसीएल, रेलवे, दिल्ली मनपा, एमएमआरडीए जैसे अन्य सरकारी विभाग कम दरों पर समान/समकक्ष कार्य कर रहे हैं, लेकिन वे मुंबई महापालिका के बाहर से आउटसोर्स किए गए काम की तुलना में 200 से 300 प्रतिशत अधिक भुगतान कर रहे हैं। यह तब स्पष्ट हो जाएगा जब महापालिका एमएमआरडीए के साथ-साथ कुछ केंद्रीय सरकारी एजेंसियों से अपने बोली दस्तावेज और लागत अनुमान साबित करने का अनुरोध करेगी। दिलचस्प बात यह है कि नगर पालिका द्वारा पूर्व में कराए गए अनुबंध कार्य की लागत इस टेंडर से 60 प्रतिशत कम है। मनपा के अधिकारी महा पालिका की तनख्वाह ले रहे हैं और ठेकेदार के पक्ष में टेंडर की कीमत में भारी वृद्धि करके मुंबईकरों के पैसे हड़प रहे हैं। अनिल गलगली ने कहा है कि अगर ऐसे वर्ग के अधिकारियों के खिलाफ कार्रवाई की गई तो भविष्य में कोई भी ऐसा काम नहीं करेगा।

प्रोफेसर डॉ दयानंद तिवारी को आशीर्वाद गौरव सम्मान



अनुकरणीय है महाराणा प्रताप का व्यक्तित्व, युवाओं को प्रेरणा लेनी चाहिए - पणिकर

दि ग्राम टुडे नाथद्वारा। महाराणा प्रताप के जीवन में प्रेरणा लेनी चाहिए, महाराणा प्रताप के व्यक्तित्व व कृतित्व को अपने जीवन में उतारना चाहिए ये विचार समाजसेवी एवम वरिष्ठ व्याख्याता पुष्पेंद्र पणिकर ने उपली ओडन स्थित नाथद्वारा इंस्टीट्यूट ऑफ बायोटेक्नोलॉजी एंड मैनेजमेंट में राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई के तत्वावधान में महाराणा प्रताप के व्यक्तित्व और कृतित्व विषय पर आयोजित कार्यक्रम में बोल रहे थे। उन्होंने कहा कि महाराणा प्रताप देश के वीर सपुत एवं युवाओं के प्रेरणा स्रोत हैं। वे उच्च गुणों और मानवीय भावनाओं से संपन्न थे। उनका व्यक्तित्व अनुकरणीय है। दृढ़ निश्चय एवं कर्तव्य



पालन की सीख लेनी चाहिए। कार्यक्रम में प्रबंध निदेशक दीपेश पारीख, प्राचार्या डॉ रंजना शर्मा, पीआरओ धर्मेरा पालीवाल सहित व्याख्या और विद्यार्थी मौजूद थे।

एसीपी रजनीश वर्मा ने होटल,ढाबा संचालकों को दिए सावधानी बरतने के निर्देश

मोहनलालगंज लखनऊ होटल ,ढाबा,रेस्त्र संचालकों संग बैठक कर एसीपी ने बिना आई डी के आगुतकी को रूम न देने तथा निजता संबंधी जानकारी के प्रति सजग करते हुए 3 वर्षों तक रिकॉर्ड रखने का निर्देश दिया। मोहनलालगंज कोतवाली में सहायक पुलिस आयुक्त रजनीश वर्मा ने क्षेत्र के ढाबा,होटल ,रेस्त्रा संचालकों की बैठक बुलाई जिसमे एसीपी ने सभी संचालकों /मालिकों को निर्देशित किया कि किसी भी आगुतक के आने पर उसके विषय में पूर्ण रूप से जानकारी कर ले और आई डी देखे कि जो आई डी ग्राहक ने दी है क्या उसका फोटो मेल खा रहा है,जितने भी ग्राहक ठहरे उन सभी की आई डी जरूर देखें तथा



रजिस्टर में ग्राहक का मोबाइल फोन नंबर अंकित करे ,एवम ग्राहक का पूर्ण विवरण तीन वर्षों तक अपने पास सुरक्षित रखे,पार्किंग सड़क पर न होने दे जिससे वाहनों का आवागमन आसान रहे,होटल में रुकने वाले व्यक्ति संदिग्ध प्रतीत हो तो तत्काल पुलिस को

सूचना दे,अपने आस पास रहने वालो को रूम न दे,होटल में पुलिस अधिकारियों एवम संबंधित क्षेत्र पुलिस चौकी का नंबर अंकित करे,होटल में आने वाले ग्राहक की आई चेक करे कि कोई कपल नाबालिग तो नही है,किसी कपल को एक दो घंटे के लिए

रूम न दे।सबसे महत्व पूर्ण बात पर जोर देते हुए एसीपी रजनीश वर्मा ने कहा कि सभी संचालक सीसी टीवी कैमरे उच्च कोटि के लगवाए जिसमे एक माह तक की रिकार्डिंग सुरक्षित रहे ,चेक आउट से पहले देखे की किसी प्रकार का कोई कमरा तो नही लगा दिया गया है ताकि प्रत्येक व्यक्ति की निजता पर कोई सवाल न खड़ा कर सके अग्नि समन संयंत्र रेगुलर चेक करते है निकास द्वार दोनो ओर से रखे ताकि (आपदा) इमरजेंसी के वक्त सुरक्षित निकास की जानकारी ग्राहक को भी होनी चाहिए, ब्लू ऑपिंट रिसोर्ट के प्रबंधक विनय कुमार पाण्डेय ने कहा कि ऐसी व्यवस्था पहले से संचालित है।

संक्षिप्त समाचार

हाई टेंशन लाइन की चपेट में विद्युत कर्मचारी झुलसा

संवाददाता-विजय सैनी नैमिषारण्य(सीतापुर)दी ग्राम टुडे शनिवार को नैमिष रेलवे स्टेशन पर विद्युत लाइन पर काम करते हुए एक रेलवे कर्मचारी झुलस गया । यह कर्मचारी रेलवे स्टेशन पर बाधित विद्युत सप्लाई को ठीक करने गए थे। स्टेशन मास्टर अनुराग कुमार के अनुसार, शनिवार को सुबह से स्टेशन पर विद्युत नहीं आ रही थी जिस कारण स्टेशन के कंप्यूटर सहित कई उपकरण कार्य नहीं कर रहे थे, जिसकी सूचना बालामऊ की गई थी । बालामऊ से हरिपाल उम्र 45 वर्ष और सर्वेश स्टेशन की कनेक्टिंग लाइन को ठीक कर रहे थे । कनेक्टिंग लाइन पर काम करते हुए हरिपाल को करंट लग गया और उसका शरीर जलने लगा । अचानक छूटने पर उसका शरीर नीचे गिर गया और कर्मचारियों ने एम्बुलेंस बुलाकर उसे नजदीकी नैमिष स्वास्थ्य केंद्र पर ले जाया गया, जहां से उसे सीतापुर के लिए रिफर कर दिया गया ।

राष्ट्रीय मानवाधिकार संगठन ने अखिलेश कुमार मिश्रा को बनाया गुजरात का प्रदेश संरक्षक

पीडब्ल्यूएस शिक्षालय के राष्ट्रीय टीम में सम्मिलित हैं अखिलेश कुमार मिश्रा। आर के पाण्डेय, दि ग्राम टुडे, सूरत। राष्ट्रीय मानवाधिकार एवं ध्रष्टाचार नियंत्रण ब्यूरो ने उत्तर प्रदेश तथा गुजरात के वरिष्ठ समाजसेवी व वलसाड निवासी अखिलेश कुमार मिश्र को गुजरात का प्रदेश संरक्षक मनोनीत किया है। उपरोक्त जानकारी देते हुए राष्ट्रीय मानवाधिकार संगठन के महिला विंग की राष्ट्रीय अध्यक्ष श्रीमती मनीषा पाण्डेय ने बताया कि अखिलेश कुमार मिश्र वर्तमान में राष्ट्रीय मानवाधिकार संगठन में सूरत के मंडल अध्यक्ष हैं तथा उनके संगठन व शिक्षालय के प्रति निःस्वार्थ भाव से समर्पण, सहयोग व सेवा भावना के चलते उन्हें राष्ट्रीय मानवाधिकार संगठन में गुजरात का प्रदेश संरक्षक मनोनीत किया गया है। बता दें कि वलसाड निवासी अखिलेश कुमार मिश्र परमशक्ति धाम, अयोध्या में निर्माणधीन पीडब्ल्यूएस शिक्षालय के निर्माण व संचालन संबंधी राष्ट्रीय टीम में भी सम्मिलित हैं।



टीबी मुक्त पंचायत के लिए समेकित प्रयास की जरूरत - जिलाधिकारी विरोध प्रदर्शन में भारी संख्या में छात्र जदयू के कार्यकर्ताओं ने हिस्सा लिया



मुजफ्फरपुर। 28 सितंबर
मैं कोई निर्देश या आदेश नहीं दे रहा हूं। मैंने खुद टीबी मरीजों को देखा है। कितना शारीरिक कष्ट में जीते हैं। टीबी उन्मूलन की जिम्मेदारी सिर्फ टीबी कार्यक्रम में शामिल लोगों की नहीं बल्कि इसके लिए समेकित प्रयास की जरूरत है, ताकि पोलियो की तरह इसका उन्मूलन संभव हो सके।

रेबीज जानलेवा है पर रोकथाम संभव है- डॉ एसके मिश्रा



दि ग्राम टुडे संवाददाता लखीमपुर खीरी। विश्व रेबीज दिवस के अवसर पर जिला चिकित्सालय मोतीपुर ओयल में एक गोष्ठी का आयोजन किया गया। जिसकी अध्यक्षता प्रभारी सीएमएस डॉ एसके मिश्रा ने की। बैठक में रेबीज होने के कारण व उससे बचाव संबंधी विचारों को स्वास्थ्य कर्मियों को बताया गया अपने संबोधन में डॉ एसके मिश्रा ने बताया कि रेबीज वायरस (आरएबीवी) संक्रमित जानवर की लार या मस्तिष्क/तंत्रिका तंत्र के ऊतकों के साथ सीधे संपर्क (जैसे कि आपकी आंखों, नाक या मुंह में टूटी हुई त्वचा या श्लेष्म झिल्ले के माध्यम से) फैलता है। रेबीज घातक है लेकिन रोकथाम योग्य है। यह लोगों और पालतू जानवरों में फैल सकता है, यदि

ये बातें जिलाधिकारी सुब्रत सेन ने शनिवार को समाहरणालय के सभागार में टीबी फोरम मीटिंग के दौरान कही। बैठक के दौरान जिलाधिकारी ने जिले में टीबी की वर्तमान स्थिति, स्क्रीनिंग और चल रहे जागरूकता कार्यक्रम का भी जापजा लिया। उन्होंने कहा कि टीबी उन्मूलन के लिए हमें बहुआयामी सोंच पर काम करना होगा। स्क्रीनिंग

फर्जी शारीरिक प्रशिक्षण प्रमाण के आधार पर कार्यरत दर्जनों शिक्षकों के विरुद्ध विभाग को पत्र - अभिजीत कुमार



दरभंगा। मानवाधिकार इमरजेंसी सोशल हेल्पलाइन के प्रदेश अध्यक्ष (अपराध एवं सामाजिक सुरक्षा) अभिजीत कुमार के द्वारा शिक्षा विभाग मुख्य सचिव एवं जिला स्तरीय अधिकारी को पत्र भेज फर्जी शारीरिक शिक्षकों के विरुद्ध अभिलंब विधि सम्मत कार्रवाई का अनुरोध किया है पत्र में उन्होंने लिखा कि दरभंगा जिला अंतर्गत अधिक संख्या में कुशेश्वरस्थान पूर्वी एवं पश्चिमी में प्रखंड अंतर्गत मध्य विद्यालय एवं उत्क्रमित मध्य विद्यालय में दर्जनों

फर्जी शारीरिक प्रशिक्षण प्रमाण पत्र के आधार पर अपना नियोजन करा सालों से विद्यालय में पदस्थापित हैं इसमें से कई शिक्षक वर्तमान में प्रधानाध्यापक भी बने हुए हैं जबकि वास्तव में यह आधिकांश शारीरिक शिक्षक राज्य से बाहर दिल्ली और अन्य राज्य के फर्जी शारीरिक प्रशिक्षण प्रमाण पत्र के का उपयोग कर अवैध लाभ प्राप्त किए है सभी के शारिरिक प्रशिक्षण प्रमाण पत्र का भौतिक सत्यापन उपरान्त जल्द ही विभागीय एवं वैधानिक कार्रवाई होगी का अनुरोध किया गया है।

ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय के कुलपति के आदेश से एनएसएस के चार कार्यक्रम पदाधिकारियों की हुई नियुक्ति

मीर मो0 शहनवाज - दरभंगा । ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा के कुलपति प्रोफेसर संजय कुमार चौधरी के आदेश से विश्वविद्यालय क्षेत्र स्थित चार महाविद्यालयों में एनएसएस के कार्यक्रम पदाधिकारियों की नियुक्ति कार्यक्रम समन्वयक प्रथम के द्वारा की गई है, जिनमें स्नातकोत्तर विभागों की एनएसएस इकाई में रसायनशास्त्र विभाग के सहायक प्राध्यापक डॉ सोनू राम शंकर, दूरस्थ शिक्षा निदेशालय, दरभंगा के अंतर्गत संचालित बी एड नियमित विभाग में सहायक प्राध्यापक डॉ उदय कुमार, जी के पी डी कॉलेज, कपूरीग्राम, समस्तीपुर में दर्शनशास्त्र के



सहायक प्राध्यापक प्रो सुभाष चन्द्र राय तथा आरसीएस कॉलेज, मझौल, बेगूसराय में राजनीति विज्ञान विभाग के सहायक प्राध्यापक डा विपिन कुमार के नाम शामिल हैं। कार्यक्रम समन्वयक डॉ आर एन

दरभंगा । दरभंगा में छात्र जदयू ने विरोध प्रदर्शन किया। बीते दिनों दिनांक 21.09.2024 को छात्र जदयू मिथिला विश्विद्यालय इकाई द्वारा अध्यक्ष आसिफ कमाल के नेतृत्व में विश्विद्यालय में व्याप्त कुव्यवस्था और भ्रष्टाचार के विरोध में उग्र धरना-प्रदर्शन आयोजित किया गया , इसमें मिथिला विश्विद्यालय के अंतर्गत आने वाले चारों जिलों से भारी संख्या में छात्र जदयू के कार्यकर्ताओं ने भाग लिया. छात्र जदयू के आंदोलन को प्रदेश उपाध्यक्ष शिक्षा प्रकोष्ठ अशोक कुश सिंह, सीनेट मेबर अजीत चौधरी, जिला प्रवक्ता कमलेश मंडल, डॉश इमाम साहब, पूर्व अध्यक्ष मुजम्मिल रजा आजमी , छात्र जदयू जिलाध्यक्ष पुरुषोत्तम चौधरी, विवि उपाध्यक्ष अशित भारद्वाज, विवि प्रवक्ता मोश जमशेद आदि ने कहा की छात्र जदयू सदस्य छात्र छात्राओं के हक और मांगों के लिए आंदोलनरत रही है। आगामी दिनों में छात्र संघ चुनाव में छात्र जदयू मिथिला विवि के सभी जिलों में अपना परचम लहराने का काम करेगी और माननीय मुख्यमंत्री श्री नीतीश कुमार के सपने को साकार करने का काम करेगी। छात्र जदयू के विश्विद्यालय अध्यक्ष आसिफ कमाल ने कहा की हमारी विभिन्न मांगों को यदि बिन्दुवार पूरा नहीं किया गया तब छात्र जदयू मिथिला विवि के सभी जिलों में उग्र आंदोलन को बाध्य होगी।

उग्र विरोध को देखते हुए, बी.सी डॉश संजय कुमार चौधरी ने आसिफ कमाल सहित छात्र जदयू के शिष्ट मंडल से वार्ता की पहल की। इस वार्ता में कुलसचिव अजय कुश पंडित, प्रॉक्टर अजयनाथ झा, स्टेट आफिसर कामेश्वर पासवान शामिल थे। और यह सुचित करते हुए प्रसन्नता हो रही है की हमारी मांगों से कुलपति महोदय सहमत हुए।

छात्र जदयू ने इन्हीं मांगों को लेकर किया जोरदार आंदोलन

1. छात्र संघ चुनाव सत्र नियमित होने के बाद कराया जाए.



2. छात्र कल्याण पदाधिकारी को उनके असंतोषजनक कार्य पद्धति के कारण पदमुक्त किया जाए.

3. डाटा सेंटर का संचालन लखनऊ - कलकत्ता के बजाय परीक्षा भवन से सुचारू रूप से चले.

4. सीएम लॉ कॉलेज को पुनः खोला जाए.

5. सभी भ्रष्ट पदाधिकारी,प्रधानाचार्य, कर्मचारियों को अविलंब पदमुक्त किया जाए.

6. विश्विद्यालय के केंद्रीय पुस्तकालय का ऑटोमेशन कराया जाए.

7. पीजी सत्र 2024-26 में नामांकन की अप्लाई तिथि बढ़ाई जाए.

8. विश्विद्यालय मुख्यालय तथा इसके अंगभूत सभी कॉलेज - महिला

पदाधिकारियों/कर्मचारियों के लिए शौचालय की व्यवस्था एवं उसकी नियमित देख-रेख / साफ-सफाई सुनिश्चित की जाए.

9. कॉलेज में अत्यन्तत छात्रों के लिए छात्रावास की अविलंब व्यवस्था की जाए और अवैध कब्जे को तुरन्त हटाया जाए।

क्काओं में सद्दाक हुसैन, चंदन कुमार, दुर्गानंद ओम प्रकाश, जितेंद्र पासवान, फरदीन अहमद खान, शफी साजिद, मोश अफसार, कबीर, लक्ष्मी कुमारी, अंजलि कुमारी, ज्योति कुमारी, अशरफ शेख, मशीरा फातिमा, मुकुंद कुमार, सत्यम कुमार, उदय यादव, तरुण यादव, ऋषिकेश कुमार, सुरैया जमीन, नविया नादिया, मोहम्मद सितारे, शाहनवाज अहमद, सलीम रजा आदि ने अपने - अपने विचार व्यक्त किए।

स्वच्छता केवल एक शब्द नहीं है, बल्कि यह हमारे जीवन का एक अनिवार्य हिस्सा - प्रो प्रेम मोहन मिश्रा



प्रथम कर्तव्य है। जल स्रोतों- नदी, तालाब आदि की सुरक्षा और स्वच्छता हमारे भविष्य के लिए बहुत आवश्यक है। यह केवल हमारी जिम्मेदारी नहीं है, बल्कि हमारा नैतिक दायित्व भी है। उन्होंने छात्राओं को स्वच्छता के महत्व को समझाते हुए कहा कि हर नागरिक को अपने आस-पास के जल स्रोतों की सुरक्षा में योगदान देना चाहिए। संस्थान में प्रतियोगिताएं गत 26 से 28 सितंबर तक चली, जिसमें भाषण, निबंध, गूगल प्रश्नोत्तरी, रंगोली और चित्रकला प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं। विभिन्न श्रेणियों में छात्राओं ने उत्कृष्ट प्रदर्शन किया। भाषण प्रतियोगिता में रचना- प्रथम, आकांक्षा- द्वितीय एवं सानिया परवीन- तृतीय, निबंध प्रतियोगिता में सानिया परवीन- प्रथम, तान्या कुमारी- द्वितीय एवं अमृता राज- तृतीया, गूगल प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता में रूपाली-

प्रथम, रूपा- द्वितीय एवं ज्या- तृतीय स्थान, रंगोली प्रतियोगिता में लक्ष्मी व दिव्या- प्रथम, पायल व स्वाति-द्वितीय एवं खुशी व आकांक्षा- तृतीय स्थान, चित्रकला प्रतियोगिता में स्वाति सुमन- प्रथम, अंशु कुमारी- द्वितीय तथा जया ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। इन सभी सफल प्रतिभागियों को 02 अक्टूबर, 2024 को गांधी जयंती के अवसर पर समाहरणालय दरभंगा में पुरस्कार देकर सम्मानित किया जाएगा। कार्यक्रम का संचालन राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई की कार्यक्रम पदाधिकारी डॉ रश्मि कुमारी ने किया, जबकि अतिथि स्वागत अंजली राज एवं धन्यवाद ज्ञापन सानिया परवीन ने किया। इस आयोजन में माय भारत, दरभंगा के मुकेश कुमार झा, नेहरु युवा केन्द्र, दरभंगा के पूर्व प्रशिक्षक कुमार अनुराग, संस्थान के सभी शिक्षक, शिक्षकेतर कर्मचारी और छात्राएँ

मवि केवटी (बालक) में शिक्षा चौपाल आयोजित



दि ग्राम टुडे, केवटी (दरभंगा) प्रोजेक्ट वेब्स्ट लर्निंग के अंतर्गत राजकीय मध्य विद्यालय केवटी (बालक) में शनिवार को =शिक्षा चौपाल% का आयोजन किया गया। इस अवसर पर कक्षा 6 से 8 तक की छात्र - छात्राओं ने विज्ञान प्रदर्शनी में अपने प्रदर्श को विद्यालय में प्रदर्शित किया। डीडीओ सह प्रधानाध्यापक रामदेव यादव की अध्यक्षता में आयोजित इस शिक्षा चौपाल में छात्र - छात्राओं के

अभिभावकों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।

छात्र - छात्राओं के द्वारा बनाए गए प्रोजेक्ट्स को देखकर उनके अभिभावक बेहद उत्साहित और संतुष्ट नजर आ रहे थे। उन्होंने इस कार्यक्रम की सराहना भी की। इस दौरान अभिभावकों को सम्मानित भी किया गया।कार्यक्रम में सहायक शिक्षक संजय प्रसाद गुप्ता , धर्मजीत कुमार सहित विद्यालय के सभी शिक्षकों ने सक्रियता पूर्वक हिस्सा लिया।

केवटी में रंगदारी व मारपीट मामले के फरार दो आरोपी गिरफ्तार

दि ग्राम टुडे, केवटी (दरभंगा) - केवटी थाने की पुलिस ने क्षेत्र के दो अलग - अलग गांव में छापामारी कर रंगदारी एवं मारपीट के मामले में फरार चल रहे दो आरोपी को गिरफ्तार किया है। इसमें डलवा गांव निवासी रामकरण यादव के पुत्र राजा कुमार एवं क्यामचक गांव निवासी दिनेश यादव उर्फ मटेरण यादव के पुत्र निपुण कुमार यादव शामिल है। पुलिस ने दोनों को पुछताछ एवं सीएचसी, केवटी - रन्वे में स्वास्थ्य परीक्षण कराने के बाद शनिवार को न्यायिक हिरासत में भेज दिया। इस संबंध में क्यामचक गांव निवासी विष्णु यादव के पुत्र चन्द्रशेखर यादव ने इसी वर्ष 30 मार्च को केवटी थाना में रंगदारी एवं मारपीट आदि मामले की प्रार्थमिकी (124 / 24) दर्ज कराते हुए मझिगामा गांव के दयाराम यादव के पुत्र गोलू कुमार व डलवा गांव के राम करण यादव के पुत्र राजा कुमार एवं अज्ञात दो लोगों को आरोपित किया था।

क्या राहुल गांधी ब्रिटेन के नागरिक भी हैं?



रामस्वरूप रावतसरे

राहुल गाँधी की नागरिकता का मामला बढ़ता चला जा रहा है। इलाहाबाद हाई कोर्ट ने इस मामले दायर की गई याचिका केंद्र सरकार से जवाब तलब किया है। हाई कोर्ट ने गृह मंत्रालय से राहुल गाँधी की नागरिकता पर उठे सवालों का जवाब देने को कहा है। राहुल गाँधी की नागरिकता पर पहले भी विवाद हो चुका है। इस मामले में अन्य लोगों ने भी देश की अलग-अलग कोर्ट में याचिकाएँ दायर की हुई हैं। सुप्रीम कोर्ट भी इस मामले में याचिका पर सुनवाई कर चुकी है।

इलाहाबाद हाई कोर्ट की जस्टिस राजन रॉय और जस्टिस ओम प्रकाश शुक्ला की बेंच ने 25 सितम्बर, 2024 को एस विनेश शिशिर की याचिका पर सुनवाई की। शिशिर ने हाई कोर्ट के सामने दावा किया है कि राहुल गाँधी के पास ब्रिटेन की नागरिकता है। शिशिर ने इस मामले में सीबीआई जाँच की माँग की है। याचिकाकर्ता शिशिर ने हाई कोर्ट को बताया कि उन्होंने केंद्र सरकार के गृह मंत्रालय के सामने राहुल गाँधी की याचिका को लेकर दो आवेदन दिए हैं। यह आवेदन नागरिकता कानूनों के तहत दिए गए हैं। याचिकाकर्ता शिशिर ने गृह मंत्रालय में दिए गए आवेदनों पर कार्रवाई के लिए इलाहाबाद हाई कोर्ट का रास्ता लिया है। हाई कोर्ट ने इस पर सुनवाई करते हुए गृह मंत्रालय से पूछा है कि उसने इन आवेदनों पर क्या एक्शन लिया है। हाई कोर्ट ने एंजिशनल सॉलिसिटर जनरल सूर्यभान पाण्डेय को आदेश दिया है कि वह गृह मंत्रालय की कार्रवाई का ब्यौरा कोर्ट के सामने रखें।

इलाहाबाद हाई कोर्ट ने कहा कि वह अभी राहुल गाँधी की नागरिकता का परीक्षण नहीं कर रहा बल्कि वह यह जानना चाहता है कि आखिर गृह मंत्रालय इस मामले पर क्या कार्रवाई कर रहा है। हाई कोर्ट ने इससे पहले इसी मामले में डाली गई याचिका वापस लेने की अनुमति दी थी। यह याचिका भी शिशिर ने ही लगाई थी। केंद्र सरकार के गृह मंत्रालय के पास नागरिकता कानून के तहत यह शक्ति है

कि वह किसी भारतीय नागरिक की विदेशी नागरिकता अपनाने के कारण और समय की जानकारी जुटा सके। शिशिर का आवेदन गृह मंत्रालय से राहुल की नागरिकता रद्द करने की माँग करता है। याचिकाकर्ता शिशिर का दावा है कि राहुल गाँधी ब्रिटिश नागरिक हैं और ब्रिटिश सरकार ने 2022 में भेजे गए इमेल में इस बात के संकेत दिए हैं। यह भी बताया गया है कि ब्रिटिश सरकार राहुल गाँधी की नागरिकता पर तब तक जानकारी सार्वजनिक रूप से नहीं देगी जब तक गाँधी स्वयं इस बात के लिए आवेदन पर हस्ताक्षर ना कर दें।

सुब्रमण्यम स्वामी ने राहुल गाँधी की नागरिकता को इससे पहले दिल्ली हाई कोर्ट में याचिका डाली थी। 20 अगस्त, 2024 को दिल्ली हाई कोर्ट ने इस मामले में सुनवाई की थी। दिल्ली हाई कोर्ट ने इस याचिका को जनहित याचिका (पीआईएल) बेंच को स्थानांतरित कर दिया था। सुब्रमण्यम स्वामी ने अपनी याचिका में दावा किया था कि राहुल गाँधी एक ब्रिटिश नागरिक हैं और इस संबंध में अपनी जानकारी छुपाई है। स्वामी ने इस संबंध में कहा था कि उन्होंने गृह मंत्रालय में आवेदन दिया है लेकिन इस पर कोई कार्रवाई नहीं हुई है। वह इस याचिका पर कार्रवाई की माँग कर रहे थे। इस याचिका पर गुरुवार (26 सितम्बर, 2024) को होनी है।

राहुल गाँधी की नागरिकता को लेकर विवाद पहली बार नहीं हो रहा है। राहुल गाँधी

की नागरिकता का विवाद सुप्रीम कोर्ट तक जा चुका है। इससे पहले दिल्ली के दो लोगों ने राहुल गाँधी की नागरिकता पर प्रश्न उठाए थे। उन्होंने दावा किया था कि एक कम्पनी के 2005-06 के रिकॉर्ड में राहुल गाँधी को ब्रिटिश नागरिक बताया गया था। याचिका में दावा किया गया था कि राहुल गाँधी ने स्वेच्छ से ब्रिटिश नागरिकता ली है और इसकी जानकारी नहीं दी है। उन्होंने कहा था कि यह जनप्रतिनिधित्व अधिनियम का उल्लंघन है। राहुल गाँधी का मामला जब सुप्रीम कोर्ट पहुँचा था तो उसने इस याचिका को रद्द कर दिया था। 2019 में सुप्रीम कोर्ट की एक बेंच ने सुनवाई करते हुए कहा था कि यदि कोई कम्पनी अपने कागजों में किसी को ब्रिटिश नागरिक बता देती है तो इससे वह वहाँ का नागरिक नहीं हो जाता। सुप्रीम कोर्ट ने यह भी कहा था कि याचिकाकर्ता समाजसेवा करने की राजनीति कर रहे हैं।

कोर्ट ने सवाल उठाए थे कि आखिर याचिकाकर्ताओं ने 2019 का इन्तजार राहुल गाँधी की नागरिकता पर याचिका डालने के लिए क्यों किया ! इस दौरान गृह मंत्रालय ने भी राहुल गाँधी से उनकी नागरिकता पर स्थिति साफ करने को कहा था। गृह मंत्रालय ने राहुल गाँधी को नोटिस जारी करके तथ्य देने को कहा था। इसको लेकर काफी बवाल हुआ था। सिर्फ 2019 में ही नहीं बल्कि 2015 में भी सुप्रीम कोर्ट ने ऐसी ही याचिका को ‘अजीब’ करार दिया था। कोर्ट ने इस दौरान राहुल गाँधी को

ब्रिटिश बताने के दावे के आधार वाले दस्तावेज पर भी प्रश्न उठाए थे। तब भी सुप्रीम कोर्ट के सामने यही दावे किए गए थे कि राहुल गाँधी ब्रिटिश नागरिक हैं और यह बात कम्पनी रिकॉर्ड से सामने आई है। राहुल गाँधी की नागरिकता को लेकर लड़ाई मात्र कोर्ट में ही नहीं बल्कि संसद तक पहुँच चुकी है। भाजपा सांसद महेश गिरी ने ऐसे ही आरोप राहुल गाँधी के खिलाफ संसद की एंथिक्स कमिटी के सामने लगाए थे। एंथिक्स कमिटी ने भी राहुल गाँधी से जवाब माँगा था।

राहुल गाँधी ने इस मामले में संसद कि एंथिक्स कमिटी के नोटिस पर जवाब दिया था। राहुल ने एंथिक्स कमिटी की नोटिस के सवाल पर बताया था कि उन्होंने कभी भी ब्रिटिश नागरिकता के लिए आवेदन ही नहीं दिया। उन्होंने कहा था कि नागरिकता को लेकर प्रश्न उनकी छवि धूमिल करने के उद्देश्य से उठाए जा रहे हैं। उन्होंने यह भी कहा था कि वह एंथिक्स कमिटी को अपने तरीके से निपट लेंगे। राहुल गाँधी की बहन और कांग्रेस नेता प्रियंका गाँधी ने इन दावों को हास्यास्पद करार दिया था। प्रियंका गाँधी ने कहा था कि राहुल गाँधी इस देश में पैदा हुए और यहीं के लोगों के सामने पले बढ़े हैं। प्रियंका गाँधी ने कहा था कि उनके भाई की नागरिकता पर उठाए गए सवालों को आधारहीन करार दिया था। प्रियंका गाँधी ने कहा था कि नागरिकता के विषय में पूरा देश जानता है

(सार्वभौमिक आतंकवाद) वैश्विक युद्ध में हुक्मरानों की फूरता । कैसे हो समाधान ?



मानसिक विकृति के शिकार कुछ बंदूकधारियों द्वारा निरिह लोगों की हत्या कर अपना मकसद साध लेना ही आतंकवाद की श्रेणी में नहीं आता है,बल्कि शक्ति संपन्न राष्ट्रों द्वारा अपनी विस्तार वादी सामंती अवधारणा को पूरा करने के लिए छोटे देशों पर हमला करना भी आतंकवाद ही है धा रुस यूक्रेन युद्ध और इजरायल फलस्तीन हमास युद्ध इसका ताजा उदाहरण है ।अमेरिका की दादागिरी, चीन का पागलपन, उत्तर कोरिया की सनक इन सबके दर्दनाक उदाहरण है जो अपनी व्यवसायिक ,सामरिक और मानसिक सनक को पूरा करने के लिए किसी भी देश को नेस्तनाबूद कर नागरिकों पर कहर ढाकर उन्हें मौत के घाट उतार देते हैंइहं यह सब अंतर्राष्ट्रीय सामूहिक बलात आतंकवाद ही हैंइहं भारत एक सशक्त और बलशाली देश होने के बावजूद शांति की नीति को अपनाए हुए है और वैश्विक शांति का संदेश भी देने का प्रयास कर रहा है ऐसे देशों को साधुवाद देना

चाहिए और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर महाबली राष्ट्रों की विस्तार वादी तथा सामंती गतिविधियों की सार्वजनिक निंदा भी की जानी चाहिए

आतंकवाद एक मानसिक विकृति की विचारधारा है, जिसके द्वारा हिंसक माॉसि और गतिविधियों से जनमानस अशांति और भय की स्थापना करके अपने लक्ष्य की प्राप्ति का प्रयास करना होता है। जिससे किसी भी क्षेत्र में आधिपत्य का अधिकार प्राप्त करने के लिए हिंसा और आतंक का सहारा लेकर जनमानस में अशांति का वातावरण निर्मित करने अपने मंसूबे पूरे कर आर्थिक सामाजिक और राजनैतिक विध्वंस का तांडव मचाना होता है। कुछ व्यक्तियों के समूह द्वारा संचालित मानव विरोधी गतिविधियां ही हैं जो कि समाज के विरुद्ध लूट, अपहरण, बम विस्फोट,हत्या जैसे जघन्य अपराधों को जन्म देती है। आतंकवाद मूलतः धार्मिक, राजनीतिक, सामाजिक परिवेश लिए हुए होता है। भारत में आतंकवाद धार्मिक और राजनीतिक ज्यादा परिलक्षित हुआ है। भारत में कश्मीर, लद्दाख, असम में विभिन्न अलगाववादी समूह द्वारा हिंसक अपराधिक कृत्य कर लोगों को भीषणत तथा पलायन करने पर मजबूर करने का कृत्य राजनीतिक आतंकवाद ही है। अलकायदा, लश्कर-ए-तैयबा ,जैश-ए-मोहम्मद जैसे संगठन धार्मिक कट्टरता की भावना से अपराध को अंजाम देते हैं। देश में नक्सलवाद ने छत्तीसगढ़, महाराष्ट्र, आंध्र प्रदेश, मध्य प्रदेश, झारखंड ,बिहार और पश्चिम बंगाल में अपना मौत का अपरचम फेहरा के रखा है। नक्सलवाद मूलतः सामाजिक क्रांतिकारी समूह द्वारा सरकार के विरोध में आमजन तथा आदिवासियों के मध्य अपनी समानांतर सरकार चलाने हेतु हिंसक घटनाएं की है। यह आतंकवादी गुप हिंसा के द्वारा अलग अलग तरीके से आतंकवाद फैलाने का प्रयास करते हैं ,यह ज्यादातर भीड़भाड़ वाले इलाकों में जैसे रेलवे स्टेशन बस स्टैंड रेल रेल पटरियों वायुयानो का अपहरण निंदीष लोगों को बंदी

बनाना बैंक में डकैतियां कर समाज में अराजकता तथा वैमनस्यता फैलाने का काम करते हैं। भारत में नक्सलवाद तो मूल रूप से पश्चिम बंगाल के नक्सल वाली क्षेत्र से पनपा है, जो पूरे भारत में धीरे-धीरे फैल कर हिंसक रूप अपनाए हुए हैं। आतंकवाद केवल भारत में न होकर उसका साम्राज्य वैश्विक स्तर पर भी दुर्भाग्यपूर्ण तरीके से फैला हुआ है। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर आतंकवाद ने अनेक घटनाओं को जन्म देकर विश्व शांति सद्भावना की मूल कल्पना को छिन्न-भिन्न करने का प्रयास किया है। दुनिया के प्रत्येक देश में आतंकवाद किसी न किसी रूप में आज मौजूद है। आतंकवाद कहीं रंगभेद, कहीं भाषा विभेद, कहीं राजनीतिक विचारधाराओं में विरोध और कहीं रंगभेद के कारण ,नस्ली समस्या आतंकवाद का कारण बनी है। यह समस्याएं हथियारों से सुलझाने के प्रयास में अत्यंत हिंसक बन गई हैं।

आतंकवाद को वृहद रूप देने में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी ने भी बड़ा साथ दिया है, आतंकवादियों, नक्सलवादियों और नस्ल वादियों के लिए रसायनिक, नाभिकीय, जैविक मानव बम जैसे आधुनिक हथियार उपलब्ध होने से यह आतंकवादी गतिविधियां और भी खतरनाक हो गई हैं। इसके अलावा मीडिया में इंटरनेट उपलब्धता से यह सारी सरकारी गतिविधियों की जानकारी प्राप्त हो जाती है इससे आतंकवादी और ज्यादा खतरनाक साबित हो रहे हैं। विश्व में वर्ल्ड ट्रेड सेंटर 11 सितंबर 2001 आतंकवादी हमला मानव इतिहास की सबसे क्रूर तम हमला माना जाता है। पाकिस्तान के पेशावर जिले में आर्मी स्कूल में 150 मासूम बच्चों की निर्मम हत्या भी एक क्रूर आतंकवादी घटना हैइहं भारत में 1993 में मार्च में श्रृंखलाबद्ध बम विस्फोट इसी तरह दिसंबर 2001 में संसद भवन पर हमलावागणसी बम विस्फोट, अहमदाबाद में बम विस्फोट, 2008 में मुंबई ताल होटल पर हमला, 2016 में पठानकोट एयरबेस हमला, 2017 में अमरनाथ तीर्थयात्रियों हमला, 2019 में पुलवामा हमला

आतंकवादी घटनाएं हैं जिससे मानवीय संवेदनाएं, शांति स्थापना की मूल धारणा की धज्जियां उड़ जाती हैंइहं भारत में तो नक्सलवाद भी आतंकवाद का एक वृहद रूप ले चुका हैइहं आतंकवाद का सबसे भयानक रूप यह है की कोई भी देश यह नहीं जानता कि आतंकवाद का अमला निशाना कौन सा देश और कौन सी इमारत, रेलवे स्टेशन, वायुयान और कौन सा धार्मिक स्थल होगाइहं वैश्विक स्तर पर आतंकवाद के खिलाफ असुरक्षा की भावना पूरी तरह व्याप्त हो चुकी हैइहं आतंकवाद का सबसे विस्तृत और भयानक रूप अफगानिस्तान में सरकार का तख्तापलट का ही हैइहं वहां तालिबानी आतंकवादियों द्वारा सरकार को गिरा कर अफगानिस्तान देश पर जाकर वहां शासन स्थापित कर लिया था, और पूरी दुनिया तमाशाबीन बनी रही। रुस यूक्रेन युद्ध में भी लाखों लोगों की आक्रमण कर हिंसक हत्या तानाशाही तथा मानसिक आतंकवाद का ही एक भयानक रूप है। पूरे विश्व में आतंकवाद के खिलाफ भारत सहित अनेक कानून बनाए गए एवं उन पर अमल भी किया जा रहा है। पर आतंकवाद को समूल नष्ट करने के लिए आतंकवादी विचारधारा को ही समूल रूप से नष्ट करना होगा, क्योंकि आतंकवाद कोई तात्कालिक कारणों से पैदा नहीं होता,यह एक धिनीनी, हिंसक आतंक पैदा करने वाली विचारधारा है। अशांति की इस विचारधारा में जन समुदाय में रोश तथा खौफ पैदा कर दिया है और यह मानवता के लिए अभिशाप की तरह व्याप्त हो गया है। जिससे विश्वव्यापी वैश्विक शांति की अवधारणा को नष्ट कर दिया है। वैसे तो पूरे विश्व में आतंकवाद के खिलाफ प्रयास किए जा रहे हैं पर हर देश के हर नागरिक का यह कर्तव्य होगा कि इस विचारधारा और इनकी गतिविधियों पर नजर रख इसे समूल नष्ट करने का प्रयास किया जाना चाहिए।

संजीव स्तंभकार,चित्तक, लेखक, रायपुर छत्तीसगढ़, 9009 415 415,

साम्राज्यवाद - पूंजीवाद की चरम अवस्था



पुस्तक चर्चा

राजनीति की जड़ें इतिहास में मौजूद होती हैं और इतिहास के अध्ययन के बिना राजनीति का शिक्षण अधूरा है। दोनों एक दूसरे के पूरक हैं। मानव का विकास आदिम सायबवाद युग से शुरू होता है , जहाँ संपति सबके लिए प्राकृतिक रूप से अस्तित्व में था उसके बाद सामंतवाद,पूंजीवाद,और समाजवाद के बाद पुनः काल्पनिक सायबवाद अवस्था का चक्र आता है, इसी चक्र को प्रख्यात दर्शनिक कार्ल मार्क्स ने ऐतिहासिक भौतिकवाद के रूप में संपूर्ण विश्व के समक्ष रख मानव के विकास के आर्थिक इतिहास की व्याख्या की।इसी कड़ी में वोल्शेविक

क्रांति के नायक व्लादिमीर इलिच उल्यानोव लेनिन ने पूंजीवादी अर्थव्यवस्था की समग्र व्याख्या कर पूंजीवाद के उच्चतर अवस्था को साम्राज्यवाद के रूप में परिभाषित किया है।उत्पादन के समस्त साधनों पर व्यक्तिगत स्वामित्व को पूंजीवाद की संज्ञा दी जाती है और पूंजीवाद अपने चरम रूप में आता है तब संपूर्ण विश्व कुछ चंद आर्थिक ताकतों के अधीनस्थ हो जाती है और यही साम्राज्यवाद के दुर्गुण रूप दिखने लगते हैं। पूंजीवाद को सबसे क्रूर तम हमला माना जाता है। जिससे विश्वव्यापी वैश्विक शांति की अवधारणा को नष्ट कर दिया है। वैसे तो पूरे विश्व में आतंकवाद के खिलाफ प्रयास किए जा रहे हैं पर हर देश के हर नागरिक का यह कर्तव्य होगा कि इस विचारधारा और इनकी गतिविधियों पर नजर रख इसे समूल नष्ट करने का प्रयास किया जाना चाहिए।

संजीव स्तंभकार,चित्तक, लेखक, रायपुर छत्तीसगढ़, 9009 415 415,

बहुराष्ट्रीय कंपनियों के बीच गुलाकाट प्रतियोगिता चल रही है,निजीकरण की ओर बढ़ता विश्व चंद पूंजीपतियों के हाथों में सिमट रही है,इस दौर में यह पुस्तक पहले की अपेक्षा और ज्यादा महत्वपूर्ण और प्रासंगिक हो चला है।इतिहास ,अर्थशास्त्र और राजनीति शास्त्र के अध्येताओं का संपूर्ण दायित्व बनता है कि वर्तमान विश्व को आर्थिक दृष्टिकोण के संदर्भ में अध्ययन कर आम जनता को दशा और दिशा से परिचित कराया जाए। जनमत का परिचय उन पुस्तकों से कराया जाए जो विश्व के ऐतिहासिक और समकालीन आर्थिक विश्लेषण का क्षमता रखती है ,इस दृष्टिकोण से यह पुस्तक राजनीति ,इतिहास और अर्थशास्त्र के अध्येताओं के लिए अभिरक्ष उत्पन्न करने वाली है। लेनिन के आकर्षक चित्र से आच्छादित आवरण पृष्ठ अपने संपूर्ण विषयगत तथ्य को अभिव्यक्त करने में सक्षम है और पाठकों को आकर्षित करने वाली है।

गार्गी प्रकाशन , नई दिल्ली से इस पुस्तक को प्रकाशित किया गया है,पुस्तक के प्रकाशन का प्रतिपाद्य तभी अपने लक्ष्य को हासिल करेगा जब इस पुस्तक के अध्ययन से पाठक वर्ग पूंजीवाद के संक्रमणकारी अवस्था और साम्राज्यवाद के मूल मर्म को समझकर वर्तमान आर्थिक परिदृश्य का विश्लेषण करने में सक्षम हो सकेगा।

सुधाकर कांत चक्रवर्ती

दुर्गापूजा पर आर.जी. कर कांड की छाया



पश्चिम बंगाल के सबसे बड़े त्योहार दुर्गा पूजा पर आर.जी. कर मेंडिकल कॉलेज कांड की छाया साफ नजर आ रही है। बीते महीने उस सरकारी मेंडिकल कॉलेज अस्पताल में एक जूनियर डॉक्टर के साथ रेप के बाद उसकी हत्या कर दी गई थी, उसके बाद लंबे अरसे तक जूनियर डॉक्टरों के आंदोलन के कारण स्वास्थ्य व्यवस्था पूरी तरह बदहाल हो गई थी।इस घटना के विरोध में राज्य की कई दुर्गा पूजा समितियों ने सरकारी अनुदान लेने से इंकार कर दिया है।

इधर, राज्य सरकार करीब 43 हजार समितियों को 85-85 हजार

रुपए का अनुदान देती है। इसके साथ ही तमाम प्रमुख आयोजन समितियों ने बजट घटा दिए हैं। इसकी वजह यह है कि उनको पिछले साल की तरह प्रायोजक नहीं मिल सके हैं। कोलकाता और उसके आसपास करीब तीन हजार पूजा आयोजित की जाती है। थीम आधारित इस उत्सव में हर साल देश-विदेश की प्रमुख घटनाओं को पंडालों की साज-सज्जा और लाइटिंग के जरिए दर्शाया जाता है। इस साल इस उत्सव पर आर.जी. कर की घटना की छाया नजर आ रही है। कुछ पूजा समितियों ने महिला सुरक्षा को अपनी थीम बनाया है तो एक समिति ने सती दाह को।

कोलकाता की नाकतला नबपल्ली दुर्गापूजा समिति न आर.जी. कर की पीड़िता के लिए न्याय की मांग करते हुए पूरे पंडाल को ऐसे पोस्टरों और तस्वीरों से सजाने का फैसला किया है। पंडाल की साज-सज्जा में महिला अधिकारों की भी वकालत की जाएगी। कोलकाता के प्रमुख बाजार न्यू मार्केट में एक दुकान समीरन मंडल कहते हैं-

इस साल आम लोगों ने आर.जी. कर की घटना को ध्यान में रखते हुए

की तरह नहीं मनाने का फैसला किया है, इसलिए पूजा का आयोजन तो पहले जैसा ही होगा. लेकिन उसमें रंगीनियां नहीं होंगी। पहले जहां दुकानों में रोजाना औसतन 20 से 25 हजार की बिक्री होती थी वह अब घटकर पांच से 10 हजार के बीच घट कर आया था उससे भी कम रह गई है। कपड़ा बिक्रेताओं का दावा है कि इस बार कारोबार पिछले साल के मुकाबले एक-तिहाई है। बंगाल में दुर्गा पूजा का कारोबार 50 हजार करोड़ से ज्यादा है. पूजा के दौरान कॉर्पोरेट घराने 800 से लेकर 1000 करोड़ रुपए से ज्यादा तक खर्च करते हैं. इंडियन चैंबर ऑफ कॉमर्स पहले ही अनुमान बता चुका है कि 2030 तक दुर्गा पूजा का दर्नओवर मेगा कुंभ मेला के बराबर हो जाएगा जो करीब एक लाख करोड़ रुपए है। कोलकाता और उसके आस-पास के इलाकों में हर साल करीब साढ़े चार हजार पूजा आयोजित की जाती है. इनमें करीब दो सौ आयोजन ऐसे हैं, जिनमें हर पूजा में 50 से ज्यादा लोगों को रोजगार मिलता है. बाकियों में से हर पूजा में 20 से ज्यादा लोगों को रोजगार मिलता है. कुल मिलाकर करीब तीन लाख रोजगार पैदा होते हैं.

संपादकीय

राजस्थानी के भीष्म पितामह कहलाते हैं कन्हैयालाल सेठिया !

आ तो सुरगां ने सरमावे, ई पर देव रमण ने आवै, ई रो जस नर नारी गावै, धरती धोरां री ! रज कण कण ने चमकावै, चन्दो इमरत रस बरसावै, तारा निछावळ कर ज्वावै, धरती धोरां री ! काळ बादळिया घहरावै, बिरखा घूघरिया चमकावै, बिजळी डरती ओला खावै, धरती धोरां री ! लुळ लुळ बाजरियो लैरावै, मकी झालो देर बुलावै, कुदरत दोन्यं हाथ लुटावै, धरती धोरां री !% जब जब यह अमर गीत कहीं पर भी गूंजता है तो हर किसी के पैर इस गीत पर थिरकने लगते हैं और बरबस ही हमें याद आ जाती है राजस्थानी भाषा के प्रसिद्ध साहित्यकार कन्हैयालाल सेठिया जी की। सच ही कहा है किसी ने कि अमर होने के लिए अधिक लिखने की जरूरत नहीं है। बहुत कम ही लोगों को यह जानकारी होगी कि सेठिया जी की प्रसिद्ध कविता धरती धोरा पर अन्?तराश?ट्रीय ख?याती प्रा?त फिल?म निर्माता गौतम घोष द्वारा +लैंड आफ द सैंड ड्यूस्+ शीर्षक से वृत्तचित्र का निर्माण किया गया जिसको भारत सरकार द्वारा स्?वर्णकमल पुरस्?त से सम्?मानित किया गया था। कइना गुलत नहीं होगा कि अधिक लिखने की बजाय कम लिखकर भी अमरता को प्राप्त किया जा सकता है और सेठिया जी ने साहित्य के क्षेत्र में यह अमरता प्राप्त की है। जानकारी देना चाहूंगा कि श्री कन्हैयालाल सेठिया, जिन्हें राजस्थानी का भीष्म पितामह भी कहा जाता है, राजस्थान के इतिहास में एक बहुत ही जाना-माना नाम है। आप राजस्थानी भाषा के बहुत ही प्रसिद्ध कवि रहे हैं। अपने अजूरे, जोरदार व दमदार साहित्य सर्जन से आपने अन्य साहित्यकारों के समक्ष यह साबित कर दिखाया कि आप केवल और केवल राजस्थानी कवि नहीं थे, बल्कि पूरे देश के कवि हैं। आपका जन्म 11 सितंबर 1919 को राजस्थान के चूरू जिले के सुजानगढ़ कस्बे में हुआ था। स्वतंत्रता संग्राम के दौरान आपने राष्ट्रवादी काव्य की रचना कर राजस्थानी साहित्य के क्षेत्र में एक अनूटी छाप छोड़ी। आपकी कृति %लीलटांस% ने आपको साहित्य की दुनिया में स्थापित किया। 1976 ई. में आपको राजस्थानी काव्यकृति %लीलटांस% के लिए साहित्य अकादमी, नई दिल्ली द्वारा राजस्थानी भाषा की सर्वश्रेष्ठ कृति के नाते पुरस्कृत किया गया था।%लीलटांस% के अलावा उनकी कुछ प्रमुख कृतियों में क्रमशः रमणियां रा सोरठ, गळ्याचिया, मीझर, कुंकंऊ, धर कुंचा धर मंजळ्यं, मायड़ रो हेलो, सबद, सतवाणी, अघरीकाळ, दीठ, कक्को कोड रो, लोकलकोळिया एवं हेमाणी शामिल हैं। राजस्थानी के अलावा उन्होंने हिंदी, उर्दू में भी काम किया। उर्दू में ताजमहल एवं गुलचीं, हिंदी में वनफूल, अणिग्वीणा, मेरा युग, दीप किरण, प्रतिबिम्ब, आज हिमालय बोला, खुली खिड़कियां चौड़े रास्ते, प्रणाम, मर्म, अनाम, निर्गन्ध, स्वागत, देह-विदेह, आकाशा गंगा, वामन विराट, श्रेयस, निष्पति एवं त्रयी तथा राजस्थानी भाषा में रमणियां रा सोरठ, गळ्याचिया, मीझर, कुंकंऊ, धर कुंचा धर मंजळ्यं, मायड़ रो हेलो, सबद, सतवाणी, अघरीकाळ, दीठ, क क्को कोड रो, लोकलकोळिया , हेमाणी ,पिथल और पाथल,जमीन रो धनी कुन, धरती धोरा री प्रमुख हैं।आपकी शिक्षा कोलकाता विश्वविद्यालय, स्कॉटिश चर्च कालेज में हुई थी। 2005 ई में आपको राजस्थान विश्वविद्यालय द्वारा पीएचडी की मानद उपाधि प्रदत्त की गई। इसी ईस्वी में आपको राजस्थान फाउन्डेशन, कोलकाता चेप्टर द्वारा %प्रवासी प्रतिभा पुरस्कार% से सम्मानित भी किया गया। 2004 ई में आपको राजस्थानी भाषा संस्कृति एवं साहित्य अकादमी बीकानेर द्वारा राजस्थानी भाषा की उन्नति में योगदान हेतु सर्वोच्च सम्मान %पृथ्वीराज राठौड़ पुरस्कारक्र से सम्मानित किया गया था। 1992 में आपको राजस्थान सरकार द्वारा %स्वतन्त्रता सेनानीक्रका ताम्रपत्र, 1988 में हिन्दी काव्यकृति %निर्गन्ध% पर भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली द्वारा %मूर्तिदेवी साहित्य पुरस्कारक्र 1987 ई में राजस्थानी काव्यवादी %सबदक्र पर राजस्थानी अकादमी का सर्वोच्च %सूर्यलल मिश्रण शिखर पुरस्कार, 1984 में राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर द्वारा अपनी सर्वोच्च उपाधि %साहित्य मनीषीक्र 1983 में राजस्थान साहित्य अकादमी उदयपुर द्वारा सर्वोच्च सम्मान %साहित्य मनीषीक्र की उपाधि से अलंकृत करने के अलावा साहित्य के क्षेत्र में अनेक पुरस्कारों व उपाधियों से नवाजा गया। इतना ही नहीं,

राजस्थानी कविता के सम्राट सेठिया को मृत्युप्रांत 31 मार्च 2012 को राजस्थान रत्न सम्मान देने की घोषणा की। आपके पिता का नाम स्वर्गीय छगनमलजी सेठिया एवं माता का नाम मनोहरी देवी था। आपका विवाह 1937 ईस्वी में श्रीमती धांपू देवी के साथ हुआ था। उल्लेखनीय है कि वर्ष 2004 में आपको पद्मश्री, साहित्य अकादमी पुरस्कार तथा 1988 में ज्ञानपीठ के मूर्तिदेवी साहित्य पुरस्कार से भी सम्मानित किया गया था। आप एक रचनाकार ही नहीं बल्कि एक सच्चे स्वतंत्रता सेनानी, सामाजिक कार्यकर्ता, सुधारक, परोपकारी और पर्यावरणविद भी थे। %पाथल और पीथल% भी इनकी ही महाराण प्रताप पर चौर रस की एक लोकप्रिय व अत्यंत प्रसिद्ध रचना है। कुछ पंक्तियां देखिए -अरे घास री रोटी ही जद बन बिलावड़ो ले भाग्यो। नान्हो सो अमरयो चीख पड़्यो राणा रो सोयो दुख जाग्यो। हूं लड्यो घणो हूं सड़्यो घणो मेवाड़ी मान बचावणो नै,

हूं पाछ नहीं राखी रण में बैर्या री खात खिड़वण में,जद याद करूं हळदीघाटी नैणां में रात उतर आवै,सुख दुख रो साथी चेतकड़ो सुती सी हुक जगा ज्वावै,पण आज बिलखतो देखूं हूं जद राज कवर् नै रोटी नै,तो क्षात्र-धरम नै भूलूं हूं ,भूलूं हिंदवणी चोटी नै...!% पाठकों को बताता चलूं कि सेठिया जी राष्ट्र पिता गांधीजी से बड़े प्रभावित थे। जानकारी मिलती है कि उन्हीं के प्रभाव से वे खादी के वस्त्र धारण करते थे, दलित उद्धार के कार्य करते थे तथा राष्ट्रभक्ति से ओत प्रोत रचनाएं लिखा करते थे। इनकी रचना %अग्निवीणा% तो अंग्रेजी हुकूमत को ललकार थी, जिसके कारण उन पर राजद्रोह का केस भी लग गया था तथा इसके कारण इन्हें जेल भी जाना पड़ा था। इतना ही नहीं आप बीकानेर प्रजामंडल के सदस्य भी रहे तथा भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान कराची में इन्होंने जनसभाएं कर लोगों को जागृत करने की दिशा में कार्य किया। आपने मायड़ भाषा राजस्थानी की मान्यता और उसे जीवन्त रखने के लिए भी काफी संघर्ष किया था। अंत में यही कहूंगा कि सेठिया जी ने राजस्थानी भाषा में रचे बसे मिठस से न केवल राजस्थान अपितु पूरे भारतवर्ष को परिचित करवाया। ऐसे सच्चे समाज सुधारक, स्वतंत्रता सेनानी व राजस्थानी भाषा के इस सप्रू का 11 नवम्बर, 2008 को निधन हो गया लेकिन उनकी रचनाएं आज भी हम सभी के जेहन में हैं और युगों युगों तक हम सभी के लिए प्रेरणास्रोत रहेंगी।



सुनील कुमार महला, फीलांस राइटर, कालमिस्ट व युवा साहित्यकार, उत्तराखंड। मोबाइल 9828108858



लोककला सांझी को बचाने के लिए विरासत की सार्थक पहल

दि ग्राम टुडे , दरभंगा =चाइल्ड पोर्नोग्राफी यानी बच्चों के अश्लील वीडियो डाउनलोड करने, उन्हें देखने या किसी से साझा करने को यौन अपराधों से बच्चों का संरक्षण (पॉक्सो) अधिनियम और सूचना तकनीक कानून के तहत अपराध करार देने के सुप्रीम कोर्ट के फैसले का बाल अधिकारों के संरक्षण से जुड़े देश के सभी गैरसरकारी संगठनों ने स्वागत किया है। सुप्रीम कोर्ट का यह फैसला बाल अधिकारों के लिए काम कर रहे देश के 120 से भी ज्यादा गैरसरकारी संगठनों के गठबंधन जस्ट राइट्स फॉर चिल्ड्रेन एलायंस (जेआरसीए) की याचिका पर आया। शीर्ष अदालत ने जेआरसीए की याचिका पर सुनवाई करते हुए मद्रास हाई कोर्ट के उस फैसले को रद्द कर दिया जिसने कहा था कि इस तरह की सामग्रियों को डाउनलोड करना और देखना दंडनीय अपराध नहीं है, यह सिर्फ नैतिक पतन है। जेआरसीए के सहयोगी संगठन काइर्स दरभंगा ने इस फैसले का स्वागत करते हुए कहा कि यह साइबर जगत में बच्चों के अधिकारों के संरक्षण के क्षेत्र में मील का पत्थर साबित होगा।फैसले में शीर्ष अदालत ने सरकार को यह भी निर्देश दिया कि वह पॉक्सो कानून में “चाइल्ड पोर्नोग्राफी” की जगह “बाल यौन शोषण एवं दुर्व्यवहार

सामग्री” शब्द का इस्तेमाल करे ताकि जमीनी हकीकत और इस अपराध की गंभीरता एवं इसके विस्तार को सही तरीके से परिलक्षित किया जा सके।देश में बाल अधिकारों के संरक्षण के लिए इस अहम फैसले का स्वागत करते हुए काइर्स के शशिभूषण प्रसाद ने कहा, “यह बेहद महत्वपूर्ण क्षण है। साइबर जगत में बच्चों को पाप-पाग पर खतरा है जहां आदमी की खाल में छिपे भेड़िये बच्चों के यौन शोषण से जुड़ी सामग्रियों की तलाश में रहते हैं। ये बच्चों के यौन शोषण के वीडियो डाउनलोड करते हैं, इन्हें देखते हैं और दूसरों से साझा करते हैं। लेकिन इस फैसले के बाद अब इस तरह के विकृत तत्व अपने घर में अकेले में भी इस तरह के वीडियो देखने व साझा करने पर बच नहीं पाएंगे।

जस्ट राइट्स फॉर चिल्ड्रेन एलायंस ने जनवरी 2024 में मद्रास हाई कोर्ट के फैसले को चुनौती देते हुए यह याचिका दायर की थी। मद्रास हाई कोर्ट ने बच्चों के अश्लील वीडियो डाउनलोड करने व उन्हें देखने को पॉक्सो और सूचना तकनीक (आईटी) अधिनियम के तहत अपराध नहीं मानते हुए 28 वर्षीय आरोपी के खिलाफ मामले को खारिज कर दिया था। मद्रास हाई कोर्ट ने आईटी व पॉक्सो अधिनियम के तहत मुकदमे

का सामना कर रहे आरोपी को बरी करने के लिए केरल हाई कोर्ट के फैसले पर भरोसा किया था। शीर्ष अदालत के इस ऐतिहासिक फैसले पर प्रसन्नता जाहिर करते हुए याची और जस्ट राइट्स फॉर चिल्ड्रेन एलायंस के संस्थापक भुवन ऋध्रु ने कहा, “भारत ने दुनिया भर में फैले और संगठित अपराधों की रोकथाम और उससे बच्चों की सुरक्षा के लिए एक बार फिर दुनिया को रास्ता दिखाते हुए एक विस्तृत रूपरेखा की आधारशिला रखी है। यह एक दूरगामी फैसला है जिसका असर पूरी दुनिया में होगा। संगठित अपराधों और बच्चों के अधिकारों की सुरक्षा के मामले में यह फैसला इतिहास में अमिट रहेगा। जब भी कोई व्यक्ति बच्चों के अश्लील वीडियो या उनके यौन शोषण की सामग्रियों की तलाश करता है या उन्हें डाउनलोड करता है तो वह वस्तुतः बच्चों से बलात्कार की मांग को बढ़ावा दे रहा होता है। यह निर्णय %बाल पोर्नोग्राफी% से जुड़ी हमारी उस पारंपरिक समझ को भी तोड़ता है जो इसे वयस्कों के मनोरंजन के तौर पर देखती है। इस आदेश के बाद लोग बच्चों के यौन शोषण और इससे जुड़ी सामग्रियों को एक अपराध के तौर पर देखना शुरू करेंगे।” जस्ट राइट्स फॉर चिल्ड्रेन एलायंस ने जनवरी 2024 में मद्रास हाई कोर्ट के फैसले को

चुनौती देते हुए यह याचिका दायर की थी। मद्रास हाई कोर्ट ने बच्चों के अश्लील वीडियो डाउनलोड करने व उन्हें देखने को पॉक्सो और सूचना तकनीक (आईटी) अधिनियम के तहत अपराध नहीं मानते हुए 28 वर्षीय आरोपी के खिलाफ मामले को खारिज कर दिया था। मद्रास हाई कोर्ट ने आईटी व पॉक्सो अधिनियम के तहत मुकदमे का सामना कर रहे आरोपी को बरी करने के लिए केरल हाई कोर्ट के फैसले पर भरोसा किया था। प्रधान न्यायाधीश न्यायमूर्ति डी. वाई. चंद्रचूड़ की अध्यक्षता में न्यायमूर्ति जे. बी. पारदीवाला और न्यायमूर्ति मनोज मिश्रा की खंडपीठ ने अदालतों को यह भी आदेश दिया कि वे अदालती कार्रवाइयों एवं आदेशों में “चाइल्ड पोर्नोग्राफी” के बजाय “बाल यौन शोषण व दुर्व्यवहार सामग्री” शब्द का प्रयोग करें। खंडपीठ ने कहा कि बच्चे के साथ यौन शोषण व उत्पीड़न की एक भी घटना उसे अवसाद में धकेल देती है। जब-जब उसके शोषण व उत्पीड़न को तस्वीरें या वीडियो देखे या किसी के साथ साझा किए जाते हैं, तब-तब यह बच्चे के अधिकारों व उसकी गरिमा का उल्लंघन है। इधर , काइर्स के दरभंगा जिला समन्वयक नारायण कुमार मजुमदार ने भी उक्त फैसले का स्वागत किया है।

यातायात प्रभारी लक्ष्मण सिंह के कुशल नेतृत्व में अमापुर तिराहे पर चलाया गया चैकिंग अभियान



कासगंज जनपद कस्बा अमापुर तिराहे पर सड़क किनारे ठेले और टैप्पू लगाए थे जिन्हे हटवाया गया और 03 टैप्पू सीज किए गए और स्कूल बसों और ईकों में छमता से अधिक बैठे बच्चों वाले स्कूली वाहनों के चालान किए गए और मोडीफाइड साइलेंसर/ड्रंक एण्ड ड्राइव/तीन सवारी/ बिना हेलमेट/ब्लैक फिंत्स /लाल नीली बत्ती/एचएसआरपी नंबर प्लेट/नाबालिक द्वारा गाड़ी चलाई जाने पर/मोबाइल फोन पर

बात करने वाले/मालवाहक वाहन में सवारी बिठने वाले चालकों के खिलाफ कार्रवाई की गई और अन्य यातायात नियमों के उल्लंघन करने पर 95 वाहन चालकों के चालान किए गए इस मौके पर ड्यूटी पर यातायात प्रभारी लक्ष्मण सिंह मुख्य आरक्षी यातायात विजय सिंह होमगार्ड यातायात अवधेश कुमार योगेश कुमार रची चालक विपिन कुमार के साथ अमापुर तिराहे पर चैकिंग अभियान चलाया गया ।

यूनियन के द्वारा गरीब का खोया हुआ मोबाइल लौटाया गया



उत्तर प्रदेश उखाव ज्ञात हो कि गत दिनों सरसौल निवासी दीप चंद्र जोकि मजदूरी करता है किसी काम से रामादेवी जा रहा था सवारी न मिलने पर वहा से गुजर रहा एक इंडेन गैस का टुक मिला जिसपर वो बैठकर जाने लगा, अपने गंतव्य पर पहुंच कर मोबाइल टुक में भूल गया जब टुक चालक को मोबाइल मिला तो उसने पेड्रोलिम प्रोडक्ट चालक परिचालन कर्मचारी संच के कार्यालय में जाकर यूनियन अध्यक्ष आनंद तिवारी को

मोबाइल देकर जानकारी दी, जिसके उपरांत आनन्द तिवारी ने दीपचंद से बात करके उसको अपने कार्यालय में बुलाया एवं जानकारी करने के उपरांत मोबाइल उसको सौंप दिया,

इस मौके पर माननीय सुखदेव मिश्र जी अध्यक्ष आनन्द कुमार तिवारी महामंत्री योगेंद्र तिवारी उपाध्यक्ष दिनेश पांडेहेमराज वीरेंद्र यादव राजू जय माता की बजवन तिवारी धर्मेन्द्र मिश्रा रवि सिंगर बबलू सिंह कुलदीप गोविंद राजू तोमर आदि लोग मौजूद रहे

जिलाधिकारी ने थाना दिवस के अवसर पर थाना दन्नाहार में फरियादियों की शिकायतें सुनी

दि ग्राम टुडे दैनिक समाचार पत्र ब्यूरो रिपोर्ट मुनीश मिश्रा
मैनपुरी 28 सितम्बर 2024- जिलाधिकारी अंजनी कुमार सिंह ने पुलिस अधीक्षक विनोद कुमार के साथ थाना समाधान दिवस के अवसर पर थाना दन्नाहार, करहल में फरियादियों की शिकायतें सुनने के दौरान प्रभारी निरीक्षक, थानाध्यक्ष को आर्देशित करते हुए कहा कि भूमि संबंधी विवादों की शिकायतों के समाधान के प्रति बेहद संवेदनशील रहें, भूमि पर अनाधिकृत कब्जों की शिकायतों पर थाने से ही पुलिस, राजस्व कर्मियों की टीम गठित कर मौके पर भेजकर दोनों पक्षों की उपस्थिति में समस्या का निदान करायें, टीम को क्षेत्र में भेजने पर थाने की जी.डी. में पूरा विवरण अंकित किया जाए साथ ही टीम के वापस आने पर मौके पर की गई कृत कार्यवाही का भी विवरण पंजिका में अंकित किया जाए, भूमि संबंधी विवादों के निस्तारण में किसी भी स्तर पर विलंब न होे यदि मौके पर किसी के द्वारा व्यवधान उत्पन्न किया जाए तो उसे शांतिभंग की धाराओं में पाबंद किया जाए। उन्होंने कहा कि पैमाइश, सार्वजनिक भूमि पर अनाधिकृत कब्जों की शिकायतों पर राजस्व,

मंत्री जयवीर सिंह ने शनिवार को ट्रांजिट हॉस्टल में जन-समस्याएं सुनी

दि ग्राम टुडे दैनिक समाचार पत्र ब्यूरो रिपोर्ट मुनीश मिश्रा
मैनपुरी 28 सितम्बर 2024- पर्यटन एवं संस्कृति मंत्री जयवीर सिंह ने आज ट्रांजिट हॉस्टल में जन-समस्याएं सुनने के दौरान कहा कि जनता दर्शन में सार्वजनिक भूमि, चक्रोड़ पर अनाधिकृत कब्जों की शिकायतें निरंतर प्राप्त हो रही है। उन्होंने कहा कि चकमागों पर अवैध कब्जे की शिकायतों को राजस्व विभाग गंभीरता से लें, मौके पर पैमाइश करकर तत्काल चकमागं खाली कराया जाए, पैमाइश में किसी के साथ पक्षपात न हो, जिस किसी के द्वारा सार्वजनिक मागं पर कब्जा किया गया हो, उसके विरुद्ध प्रभावी कार्यवाही की जाए। उन्होंने कहा कि भूमि पर अनाधिकृत कब्जों की शिकायतों पर पुलिस, राजस्व कर्मी मौके पर जाकर प्रभावी कार्यवाही करें, अनाधिकृत कब्जा करने वालों को भू-माफिया में चिन्हित कर कार्यवाही की जाए, कोई भी दबंग व्यक्ति किसी गरीब की भूमि पर काबिज न रहे, सुनिश्चित किया जाए। पर्यटन मंत्री ने कहा कि किसानों की समस्याओं का भी प्राथमिकता पर निदान हो, किसी भी कुषक को खाद, बीज, डीएपी आदि के लिए परेशान न होना पड़े, सभी सहकारी समितियों पर पर्याप्त मात्रा में यूरिया, डीएपी उपलब्ध रहे, कोई भी खाद, बीज विक्रेता ओवरवैरिंग न करें, किसानों को निर्धारित मात्रा, निर्धारित मूल्य पर उर्वक उपलब्ध हों। उन्होंने कहा कि केंद्र-प्रदेश सरकार की संचालित लाभार्थी पाकक जनकल्याणकारी योजनाओं का लाभ पात्रों को आसानी से मिले, कोई भी पात्र व्यक्ति को

प्रधानमंत्री आवास योजना शहरी, ग्रामीण, मुख्यमंत्री आवास योजना, स्वच्छ भारत मिशन के तहत शौचालय योजना, वृद्धा, निराश्रित महिला, दिव्यांग पेंशन योजना का लाभ पाने से वंचित न रहे, पात्रों के चयन में पूरी पारदर्शिता बरती जाए, किसी भी योजना में कोई अपात्र व्यक्ति लाभान्वित न हो। आज जन-सुनवाई के दौरान ग्राम ठकौआपुर नि. सुभाष ने मानसिंह के घर से रामस्वरूप के घर तक 70 मीटर सीसी. रोड बनवाये जाने, ग्राम अटय नि. निरंश ने नलकूप लगवाने, ज्योति रोड नि. रंजीत ने 150 मीटर सीसी. रोड, नाली का निर्माण

कराये जाने, ग्राम खिरिया नि. रंजीत ने गांव में बारात घर बनवाने, ग्राम गढ़िया नि. सुशुलीा देवी ने रूकी हुथी विधवा पेंशन को चालू कराने, ग्राम कनिकपुर नि. राम कुमार, करहल नि. रचना ने मुख्यमंत्री आवास योजना का लाभ दिलाये जाने की मांग अपने शिकायती प्रार्थना पत्रों के माध्यम से की।

इस दौरान उप जिलाधिकारी सदर अभिषेक कुमार, क्षेत्राधिकारी नगर अजय सिंह चौहान, प्रभारी निरीक्षक कोतवाली फतेह बहादुर सिंह के अलावा उदय चौहान, अर्जुन सिंह, लालू जादौन, सर्वेश कुमार, अन्य पार्टी पदाधिकारी आदि उपस्थित रहे।

आयुष्मान भारत योजना के अंतर्गत 70 वर्ष से अधिक उम्र के व्यक्तियों को भी सम्मलित किया

दि ग्राम टुडे दैनिक समाचार पत्र ब्यूरो रिपोर्ट मुनीश मिश्रा
मैनपुरी 28 सितम्बर 2024- मुख्य चिकित्साधिकारी डा. आर.सी. गुप्ता ने बताया कि शासन की मंशा के अनुसार आयुष्मान भारत योजना के अंतर्गत 70 वर्ष से अधिक सभी व्यक्तियों को योजना मे सम्मलित किया गया है। जिससे बुजुर्ग लोगों को बीमारी के बोझ का अतिरिक्त भार नहीं उठाना पड़ेगा, वृद्धावस्था में रोगों से घिरने की प्रबल सम्भावना होती है, ऐसे मे यह योजना बुजुर्ग लोगों के हित मे बहुत ही लाभकारी कदम है। उन्हाने बताया कि 70 साल से अधिक के सभी बुजुर्ग पात्रता में आयेगे, अन्य किसी पात्रता की आवश्यकता नहीं है, किसी भी सरकारी चिकित्सालय, नजदीकी

जनसेवा केंद्र से या स्वयं, परिवार की मदद से वेबसाइट पर जाकर आवेदन कर सकते हैं। वेबसाइट को कंप्यूटर सिस्टम पर लॉगिन करें। चयन कर किसी भी मोबाइल नम्बर का प्रयोग कर लॉगिन करने के बाद दिखाई दे रही फोटो मे खिलक करें, लाभार्थी का आधार कार्ड एवं कैप्चा डालकर सबमिट करें। यदि आप किसी अन्य योजना के अंतर्गत पहले से ही आयुष्मान योजना के लाभार्थी हैं। तो उस योजना का चयन कर परिवार संख्या अंकित करें। यदि पहले से योजना के लाभार्थी नहीं है तो नहीं का चयन करें, लाभार्थी का फोटो खींचें, लाभार्थी का पता आधार के अनुसार अपडेट करें, परिवार के अन्य सदस्यों की सूचना भी अंकित करते हुए आवेदन कर कार्ड डाउनलोड कर लें।

महिला आयोग की उपाध्यक्ष अपर्णा यादव पहुंची अयोध्या,राम मंदिर ट्रस्ट के महासचिव चंपत राय से किया मुलाकात

दी ग्राम टुडे न्यूज
अंकित अग्रवाल

अयोध्या,स्वर्गीय मुलायम सिंह यादव की छोटी पुत्रवधू महिला आयोग की उपाध्यक्ष अपर्णा यादव पहुंची अयोध्या,राम मंदिर ट्रस्ट के महासचिव चंपत राय से किया मुलाकात, कार सेवक पुरम में राम मंदिर आंदोलन के पुरोधा अशोक सिंघल के स्मृति में आयोजित कार्यक्रम में लिया भाग,अयोध्या पहुंची अपर्णा यादव का बयान,अयोध्या है पावन धरती यहां आकर लगता है हमशा अच्छा, राम भारत के है आदर्श, राम बसे हैं सबके मन में,500 वर्षों के संघर्ष का विराम प्रधानमंत्री के करकमलों से हुआ, कार सेवकों को भी है धन्यवाद, जिन्होंने इस लड़ाई में लिया है बड़ चढ़कर हिस्सा, उन्हीं की प्रेरणा से रामलला है भव्य मंदिर में स्थापित, राहुल गांधी के द्वारा रामलला के प्राण प्रतिष्ठा पर दिए गए विवादित बयान पर भड़की अपर्णा यादव, राहुल गांधी ने नहीं देखा प्राण प्रतिष्ठा का कार्यक्रम अच्छे से,उद्योगपति ब्या नहीं है देश का हिस्सा,प्रधानमंत्री ने मंदिर निर्माण करने

वाले लोगों पर किया है फूलों की वर्षा, पहली बार हुआ है इतिहास में, राहुल गांधी के घर में थे तीन-तीन प्रधानमंत्री कोई एक व्यक्ति बता दें जिन्होंने सेवकों के धुले हो पाव,किया हो पुष्प वर्षा,लोगों के स्वागत और अभ्यागत में अयोध्या की जनता भी थी इर्वाल्ब,राहुल गांधी चीन के प्रधानमंत्री से चले गए थे मिलने, कहीं का प्रधानमंत्री आता है तो उसका होता है एक प्रोटोकॉल, राहुल गांधी देश को भड़काने वाला भाषण देकर नहीं कर पाएंगे कुछ भी, अपनी राजनीति चमकाने के लिए प्रधानमंत्री और रामलला पर बोले तो गिरेंगे गत के गड्डे में, नहीं उभार पाएगा कोई,समाजवादी सांसद अफजाल अंसारी के द्वारा साधु संतों पर दिए गए विवादित बयान पर भी अपर्णा यादव ने दिया प्रतिक्रिया,इस तरह की गलत बयान बाजी करके चमकाना चाहते हैं अपनी राजनीति, इस तरह की बयान बाजी से साधु समाज पर नहीं पड़ेगा कोई भी फर्क, अखिलेश यादव के मटाधीश माफिया के बयान पर भी अपर्णा यादव ने दिया नसीहत, उनके अपने विचार हैं उनके

अपने हैं बयान, हर व्यक्ति को अपने अभिव्यक्त की है आजादी,अगर आप हैं किसी अच्छे पद पर और सदन में तो अच्छे तरह मर्यादित रह कर देना चाहिए बयान,अखिलेश यादव भाषण देकर विपक्षियों पर टिप्पणी कर के अपनी राजनीति ना चमकाएं, इस तरह की नहीं करनी चाहिए बात, महिला आरक्षण पर बोली अपर्णा यादव 33त का जो आरक्षण प्रधानमंत्री ने किया है ना पहले कभी हुआ था ना होगा, 2027 में हो जाएगा लागू,हमारे प्रधानमंत्री और मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने किया है बड़ा काम, तिरुपति बालाजी में चर्बी युक्त प्रसाद को लेकर भी दिया प्रतिक्रिया,भगवान के प्रसाद में मिलावट करना है बहुत गलत बात, सही तरह से जांच करके होनी चाहिए करवाई दोषियों को मिले कड़ी सजा,उपचुनाव को लेकर अपर्णा यादव ने दिया बड़ा बयान,उपचुनाव होगा देखने वाला, हम सभी कर रहे हैं उपचुनाव के लिए मेहनत, प्रधानमंत्री के मूल मंत्र सबका साथ सबके विकास पर जोतेगे के चुनाव-- अपर्णा यादव उपाध्यक्ष महिला आयोग

बीकापुर भाजपा विधायक अमित सिंह चौहान बनाये गए लोक लेखा समिति के सदस्य, योगी सरकार ने दी जिम्मेदारी

दि ग्राम टुडे संवाददाता
बीकापुर कामता शर्मा
अयोध्या बीकापुर
बीकापुर भाजपा विधायक अमित सिंह चौहान बनाये गए लोक लेखा समिति के सदस्य, योगी सरकार ने दी जिम्मेदारी, मां शोभा सिंह चौहान बीकापुर विधानसभा से रह चुकी हैं विधायक तो वहीं पिता स्वः मुन्ना सिंह चौहान यूपी सरकार में रह चुके हैं सिंचाई मंत्री। योगी सरकार में पद मिलने से भाजपा विधायक अमित सिंह चौहान का प्रदेश की योगी सरकार में कद बढ़ा।



भाजपा सरकार में किसान, छात्र, व्यापारी, अध्यापक, नौजवान सभी परेशान - किरणपाल कश्यप

मिर्जापुर समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय सचिव एवं विधान परिषद के सचेतक व लोक लेखा समिति के सदस्य एमएलसी किरण पाल कश्यप ने कहा कि भाजपा सरकार में किसान, छात्र, व्यापारी, अध्यापक, नौजवान सभी परेशान है।

श्री कश्यप ने अघौली व मुलवां गांव में आयोजित जनसभा को सम्बोधित करते हुये कहा कि विधानसभा उपचुनाव की जब भी घोषणा होगी जीत समाजवादी पार्टी की होगी। उन्होंने कहा कि लोकसभा चुनाव में भाजपा ने बेईमानी करके लोकसभा चुनाव जीता है। जनता आने वाले चुनाव में इनको बदलकर ही दम लेगा। कहा कि जो भी समाजवादी पार्टी से प्रत्याशी होगा उसे जिताने का काम करें। सरकार के दिन लद चुके हैं। क्षेत्र



की जनता आने वाले चुनाव में इन्हे उखाड़ फेंकेगी।

इस अवसर पर समाजवादी पार्टी के जिला अध्यक्ष देवी प्रसाद चौधरी कहा कि अखिलेश यादव जी जो भी प्रत्याशी तय करेंगे उसे जिताने का काम आप लोग करेंगे। इस सरकार में चारो तरफ हत्या, लूटपाट की

घटनायें बढ़ी है। मंहगाई के कारण जनता की कमर टूट गई है।

इस दौरान सभा में सम्बोधित करने वालों में दामोदर प्रसाद मोर्य, रोहित शुक्ला 'लहू', रामगोपाल बिन्द, रामजी बिन्द, झल्लू यादव, संतोष गोयल, दीपक बिन्द, अविनाश बिन्द आदि सैकड़ों लोग रहे।

वरिष्ठ साहित्यकार डॉ. सतेन्द्र जोशी नेशनल एक्सीलेंस अवॉर्ड से अलंकृत

डॉ. गोपाल चतुर्वेदी वृन्दावन(पिछले दिनों अयोध्या में संपन्न हुए हुए अंतर्राष्ट्रीय रामायण प्रतिष्ठ महोत्सव में ब्रज के वरिष्ठ साहित्यकार एवं श्रीकृष्ण कीर्ति पत्रिका के प्रधान संपादक डॉ. सतेन्द्र जोशी को उनके द्वारा अंतरराष्ट्रीय स्तर पर किए गए उत्कृष्ट लेखन के लिए नेशनल एक्सीलेंस अवॉर्ड से सम्मानित किया गया। उन्हें यह सम्मान महामण्डलेश्वर स्वामी कंचन गिरि महाराज, श्रीश्री 1008 स्वामी संतोषानंद महाराज, देवभूमि उत्तराखण्ड के पूर्व मुख्यमंत्री तीर्थ सिंह रावत एवं कार्यक्रम के संयोजक डॉ.वी.पी सिंह आदि ने प्रशस्ति पत्र, स्मृति चिन्ह, अंग वस्त्र एवं ठकुरजी का पटुका-प्रसादी-माला आदि भेंट करके दिया। ज्ञात हो कि डॉ. सतेन्द्र जोशी विगत 8 वर्षों से श्रीकृष्ण कीर्ति पत्रिका का सफल संपादन कर रहे हैं।साथ ही वे समाज सेवा के कार्य में भी पूर्ण निष्ठा एवं समर्पण के साथ

जुटे हुए हैं।इसके अलावा वे प्रख्यात मोटिवेशन स्पीकर भी है। उनकी स्पीच देश के विभिन्न प्रांतों में प्रायः होती रहती है।साथ ही उन्होंने हिन्दी और इंग्लिश भाषा में कई पुस्तकें भी लिखी है।जो कि काफी चर्चित और लोकप्रिय हैं। वरिष्ठ साहित्यकार डॉ. सतेन्द्र जोशी को नेशनल एक्सीलेंस अवॉर्ड से अलंकृत किये जाने पर ब्रज साहित्य सेवा मंडल, वृन्दावन के अध्यक्ष डॉ. राधाकांत शर्मा व छत्तीसगढ़ शासन के पूर्व उप-निदेशक (सूचना व जनसंपर्क टी.पी. त्रिपाठी ने हर्ष व्यक्त किया है।साथ ही प्रशु से उनके उज्जवल व मंगलमय भविष्य की कामना की है।



बारिश से भरभरा कर गिरे कच्चे माकान में दबकर मरी दो भैंस -

दि ग्राम टुडे ब्यूरो मुंगराबादशाहपुर (जौनपुर)। मुंगराबादशाहपुर थाना क्षेत्र के चेरापुर तरहठी गांव में शुक्रवार से ही हो रही भारी बारिश से शुक्रवार की रात में कच्चा माकान भरभरा कर गिर गया जिसके मलबे में दबकर दो भैंसों की मौत हो गई। मिली जानकारी के अनुसार मुंगराबादशाहपुर थाना क्षेत्र के चेरापुर तरहठी निवासी रामसुमेर यादव का कच्चा माकान है।एक हिस्से में परजिनों सहित वह रहते हैं जबकि दूसरे हिस्से में पशुओं को बांधते हैं। दो दिनों से लगातार हो रही झमाझम बारिश से शनिवार की सुबह लगभग 4 बजे उनका एक तरफ का कच्चा माकान भरभरा कर गिर गया । जिसमे उनकी दो भैंस दब गई। गनीमत यह थी रियायशी हिस्सा सही सलामत रहा।लोगों की मदद से भैंसों को काफी मशक़त के बाद बाहर निकाला गया लेकिन तब तक मलबे के नीचे दबने से दोनों भैंसों की मौत हो चुकी थी। घटना की सूचना मिलते ही नायब तहसीलदार संतोष यादव, कानून गो श्री राम, लेखपाल धीरज सिंह मौके पर पहुंच कर मौका मुआयना किया। नायब तहसीलदार द्वारा पीड़ित को यथासंभव आश्वासन दिया कि यथासंभव सरकारी मदद दिलाने का भरोसा दिया गया।

मेरे बेटे का दोष नहीं, कोई नियम नहीं टूटे ’, बेटे की रील वायरल हुई तो डिप्टी CM बैरवा ने दी सफाई; अब उठे ये सवाल

जसवंत सेन जयपुर राजस्थान जयपुर सोशल मीडिया पर बेटे की रील वायरल होने के बाद शुक्रवार को डिप्टी सीएम डॉ. प्रेमचंद बैरवा ने सफाई दी है। पत्रकारों से बातचीत के दौरान बैरवा ने कहा कि उनका बेटा अभी स्कूल में पढ़ता है, अभी तो 18 साल का भी नहीं हुआ है। वो तो उसके दोस्तों के साथ था। उन्होंने स्पष्ट किया कि पुलिस की गाड़ी सुरक्षा के लिए थी, न कि एस्कॉर्ट कर रही थी। बैरवा ने अपने बेटे को दोषी ठहराने पर नाराजगी जताई। बता दें वीडियो वायरल होने के बाद उनके बेटे पर ट्रैफिक नियम तोड़ने और पुलिस एस्कॉर्ट का गलत इस्तेमाल करने के आरोप लगे थे।

बेटे अभी तो 18 साल का भी नहीं हुआ- बैरवा दरअसल, बेटे की रील वायरल होने पर पत्रकारों ने डिप्टी छरूप्रेमचंद बैरवा से सवाल किया तो उन्होंने कहा कि मेरा बच्चा सीनियर स्कूल में पढ़ता है, अभी तो 18 साल का भी नहीं हुआ, ये सब तो उसके स्कूल के दोस्त हैं। मैं तो प्रधानमंत्री को धन्यवाद देना चाहूंगा कि मुझे उपमुख्यमंत्री बनायाजअगर उपमुख्यमंत्री बनने के बाद मेरे बेटे को भारी पैसे वाले लोग अपने साथ बैठाते हैं तो बच्चा भी अच्छी-अच्छी गाड़ियों को देख रहा हैजैसा तो धन्यवाद मानूंगा कि मेरे बेटे को वहां तक लोग पूछने लगे हैं।

मैं मेरे बच्चे को कोई दोष नहीं देता हूं

वहीं, उपमुख्यमंत्री बैरवा से यातायात नियमों की धज्जियां उड़ाने का सवाल किया गया तो उन्होंने जवाब दिया कि इसमें यातायात की कहां धज्जियां उड़ीजुलिस तो मेरे बच्चे की सुरक्षा के लिए पीछे चल रही थी गाड़ी, ना कि एस्कॉर्ट कर रही थी। लोगों को इस तरह की बातें नहीं करनी चाहिए, अगर वो कर रहे हैं तो करें, लेकिन मैं मेरे बच्चे को कोई दोष नहीं देता हूंज्योकि वो बच्चे स्कूल के दोस्तों के साथ थे, इसमें ऐसी कोई बात नहीं है।बात दें, बीते गुरुवार को डिप्टी छरू प्रेमचंद बैरवा और कांग्रेस नेता पुष्पेन्द्र भारद्वाज के बेटे की एक रील सोशल मीडिया पर वायरल हुई थी। इस वीडियो में एक खुली जीप में चार युवक बैठे दिखाई दे रहे हैं, जिनको राजस्थान पुलिस की एक गाड़ी एस्कॉर्ट करती हुई नजर आ रही है। इसके बाद सोशल मीडिया पर यूजर्स ने राजस्थान पुलिस की जमकर क्लास लगाई थी।

यूजर ने फिर लगाई क्लास

वहीं, एक यूजर पलक बिस्नोई ने कहा कि भारतीय जनता पार्टी की सरकार ने कुछ समय पहले कानून पास किया था कि नाबालिग बच्चे को गाड़ी चलाने के लिए दी तो पेरेंट्स पर जुर्माना होगा, उस कानून का क्या हुआ? क्योंकि प्रेमचंद बैरवा के मुताबिक उनका बच्चा अभी 18 साल का नहीं हुआ है।

सोशल मीडिया पर यूजर के कमेंट

एक अन्य यूजर ने कहा कि खुलेआम यातायात के नियमों की धज्जियां उड़ा रहा डिप्टी छरूप्रेमचन्द बैरवा का लड़का अभी तक नाबालिग है, ये बात खुद डिप्टी छरूकह रहे हैं। इस तरह सरकारी गाड़ी का दुरुपयोग कर एस्कॉर्ट करवा रहे हैं।

राजस्थान में 23,820 पदों पर निकली भर्ती

जसवंत सेन जयपुर राजस्थान जयपुर राजस्थान के लाखों युवाओं का इंतजार खत्म हो गया है। प्रदेश सरकार ने 23 हजार 820 पदों पर सफाई कर्मचारियों की भर्ती निकली है। स्वायत्त शासन विभाग ने इसका नोटिफिकेशन 27 सितंबर की देर रात जारी किया है। राजस्थान के मूल निवासी 7 अक्टूबर से 6 नवंबर तक ऑनलाइन आवेदन कर सकेंगे। उम्मीदवारों का सिलेक्शन लॉटरी के आधार पर किया जाएगा, जिसमें तीन गुना ज्यादा अर्थार्थियों को सिलेक्ट किया जाएगा। इसके बाद 2 महीने सफाई करके दिखाना होगा। इसका सरकार की ओर से नियमानुसार भुगतान भी किया जाएगा। इस प्रक्रिया में सर्वश्रेष्ठ काम करने वाले उम्मीदवारों का चयन कर उन्हें 2 साल प्रोबेशन पीरियड पर रखा जाएगा। इसके बाद उन्हें स्थायी नियुक्ति दी जाएगी।

किसान मेला एवं कृषि उद्योग प्रदर्शनी की तैयारियों पर सौंप दी गई जिम्मेदारियां

दि ग्राम टुडे, कानपुर। (संजय मौर्य)

चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के मुख्य परिसर में आगामी माह अक्टूबर में किसान मेला एवं कृषि उद्योग प्रदर्शनी का आयोजन होगा। जिसे भव्यता देने के लिए जोरों से तैयारी शुरू हो गई है। विश्वविद्यालय के निदेशक प्रसार डॉक्टर आरके यादव ने बताया कि वि.वि.के कुलपति डॉक्टर आनंद कुमार सिंह की कुशल मार्गदर्शन में आगामी 24 से 25 अक्टूबर को दो दिवसीय कृषक मेले का आयोजन किया जाना है। जिसकी अभी से जिम्मेदारियां बांट दी गई हैं। उन्होंने बताया कि प्रदेश के किसानों एवं कृषि विशेषज्ञों का विश्वविद्यालय परिसर में संगम होगा। जिससे किसान रबी फसल की बुवाई एवं उसकी तैयारी सुचारु रूप से कर सकेंगे।

सरदार भगत सिंह की धूमधाम से मनाई गई जयंती

दि ग्राम टुडे, कानपुर। हेमा अखिल भारतीय महिला शक्ति एसोसिएशन भारत की बेटी संस्थापक राष्ट्रीय अध्यक्ष हेमा पटेल (समाज सुधारक) के सफल मार्गदर्शन नेतृत्व में कार्यक्रम की मुख्य अतिथि जिला अध्यक्ष हमीरपुर उर्मिला सिंह एवं जिला सचिव शिव कुमारी सिंह इस अवसर पर मुख्य अतिथि उर्मिला सिंह जी भगत सिंह की जयंती मनाने का मुख्य वजह है कि उन्होंने जिस बहादुर और वीरता की का परिचय देते हुए स्वतंत्रता संग्राम आंदोलन में हिस्सा लेते हुए अपने प्राणों की बाजी लगाकर देश को आजादी दिलाने का प्रयास किया और नौजवानों को प्रेरित किया आज हम उनकी जयंती मना कर अपने को गौरवान्वित महसूस कर रहे हैं जिला सचिव सचिव कुमारी जी ने अध्यक्ष जी की बातों पर सहमत जताते हुए उपस्थित समस्त पदाधिकारी एवं कार्यकर्ताओं का धन्यवाद प्रेषित किया।

पाकिस्तान में रोटी के लिए छीना- झपटी हो रही, हम फी में राशन दे रहे - योगी आदित्यनाथ



हरियाणा संवाददाता डा. होशियार सिंह यादव,कनीना। उत्तर प्रदेश के मुख्यमन्त्री योगी आदित्यनाथ ने एक बार फिर पड़ोसी देश पाकिस्तान को निशाने पर रखते हुए कहा है कि पाकिस्तान में रोटी के लिए छीना झपटी हो रही है वही हम देश के लोगों को फी राशन वितरित कर रहे हैं।

वे शनिवार को हरियाणा के अटेली विधानसभा क्षेत्र से भाजपा प्रत्याशी आरती सिंह राव के समर्थन में क्षेत्र के गांव भोजावास में एक विशाल जन आशीर्वाद रैली को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में देश ने सुरक्षा विकास के नए कीर्तिमान स्थापित किए हैं, धारा 370 से कश्मीर के आतंकवाद पर प्रहार हुआ है। उन्होंने कहा कि भारतीय जनता पार्टी आज मोदी जी के नेतृत्व में उनके मार्गदर्शन में सुरक्षा, शासन,

विकास के नित नए किर्तिमान स्थापित कर रहा है विकास की नई-नई योजनाओं को लाकर के आज के युवाओं की आकांक्षाओं के अनुरूप अन्नदाता किसानों की भावनाओं के अनुरूप विकास के नए-नए मॉडल प्रस्तुत किए जा रहे हैं।

योगी ने कहा कि हमें भारत को विकसित राष्ट्र बनाना है तो उसकी शुरुआत गांव से शुरू होती है, किसान से शुरू होती है,युवा से शुरू होती है, महिला से शुरू होती है। उन्होंने कहा कि 2029 में देश की लोकसभा में नारी शक्ति वंदन विधेयक जब पारित हो उससे पहले अटेली विधानसभा क्षेत्र से आरती सिंह राव को विधानसभा में भेज कर साबित कर दे नारी शक्ति वंदन विधेयक अटेली ने 2024 मे लागू कर दिया है। आरती सिंह राव विधानसभा में पहुंचेगी तो नारी शक्ति को सम्मान मिलेगा। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी देश के प्रधानमंत्री बने तो उन्होंने संकल्प लिया कि बिना भेदभाव

‘मिशन शक्ति’ अभियान के अंतर्गत थानों की एन्टीरोमियों टीम द्वारा महिलाओं/बालिकाओं को चौपाल लगाकर किया गया जागरूक



दि ग्राम टुडे संवाददाता लखीमपुर खीरी। पुलिस निर्देशन व अपर पुलिस अधीक्षक के

निकट पर्यवेक्षण में सम्पूर्ण जनपद में ‘मिशन शक्ति’ अभियान के तहत जनपद के थानों की एन्टीरोमियों टीम द्वारा प्रदेश सरकार द्वारा महिला सुरक्षा, सम्मान व स्वावलम्बन हेतु चलाए जा रहे ‘मिशन शक्ति’ अभियान के तहत कम्प्यूनिटी पुलिसिंग एवं महिला सशक्तिकरण हेतु शक्ति दीदी (महिला बीट एवं महिला हेल्प डेस्क) के माध्यम से जनपद में विभिन्न स्थानों पर भ्रमण कर लोगों को जागरूक किया गया।

विदा होते मानसून ने दिखाई दरियादिली झमाझम बारिश से किसानों के खिले चेहरे



बुढ़ापुर,हरिपुर, रवनिया सहित दर्जनों गांव के किसानों ने राहत की सांस ली है। मौसम विभाग ने आगामी 29

सितम्बर तक बारिश के साथ 30 से 40 किमी/घंटे हवा भी चलने का अनुमान जताया है।

दो दिनों से चल रहीं भीषण बारिश, फिर भी नहीं बंद हुआ मनरेगा कार्य



अंजनी दूबे संवाददाता सुल्तानपुर।कुदरत के कहर का फायदा कहा जाए या आंखों में धूल झोकना यह तो मनरेगा के अधिकारी ही बता सकते हैं जब लगातार दो दिनों से भीषण बारिश हो रही हो तो ऐसे में

मनरेगा कैसे चल रहा यह बड़े आश्चर्य की बात है जनपद के 14 ब्लॉकों में 5788 मनरेगा मजदूरों ने आज की प्रवाह किए बिना चकमागों,नालों, तालाबों में घुसकर साफ सफाई एवं खुवाई का कार्य किया यह तो जिले का जिम्मेदार अधिकारी ही बता सकता है।

के देश का विकास करेंगे। गांव के लिए, गरीब के लिए, किसान नौजवान के लिए ,महिलाओं के लिए, समाज के प्रत्येक तबके लिए कार्य करेंगे। आज आप देख रहे होंगे कि हरियाणा में भी डबल इंजन की सरकार है मेदेो भी आ गई, रोड की बेहतर कनेक्टिविटी हो गई, निवेश भी आ रहा है, रोजगार भी मिल रहा है। उन्होंने कहा कि वैश्विक धुवीकरण भारत के बगैर नहीं हो सकता । जो कार्य 75 वर्षों में नहीं हो पाया 2014 में नरेंद्र मोदी देश के प्रधानमंत्री बने, मैं उत्तर प्रदेश का मुख्यमंत्री बना डबल इंजन सरकार ने 500 वर्षों की समस्या का समाधान हमेशा हमेशा के लिए कर दिया अयोध्या में राम मंदिर बनाने का कार्य किया। कांग्रेस के शासनकाल में महर्षि वाल्मीकि के नाम से किसी एयरपोर्ट का नाम नहीं हुआ अयोध्या में एयरपोर्ट का नाम महर्षि वाल्मीकि के नाम से डबल इंजन की सरकार ने किया। कांग्रेस घोटाळा करना जानती है। इनेलो का तो इतिहास ही गड़बड़ है। आम आदमी पार्टी की सरकार दिल्ली में है। दिल्ली को तो उन्होंने कूड़े के ढेर में तब्दील कर दिया है यह बात किसी से छुपी नहीं है। इसलिए अनुरोध कर रहा हूं कि भाजपा की सरकार बनाने के लिए एक-एक प्रत्याशी को भाजपा कार्यकर्ता जी जान से जीताने के लिए जुट जाएं।

उन्होंने कहा कि अटेली में एक समुद्र विरासत को आगे बढ़ने का अवसर आपके पास है, जिन्होंने हरियाणा के लिए अपना योगदान दिया। केंद्रीय मंत्री के रूप में राव इन्द्रजीत सिंह ने हरियाणा को आगे बढ़ाने का कार्य किया। राव इन्द्रजीत सिंह गुडगांव के सांसद हैं गुडगांव उत्तर भारत का एक बेहतरीन औद्योगिक क्षेत्र के रूप में विकसित हुआ है। लाखों नौजवानों को नौकरी और रोजगार मिलने का कार्य हो रहा है। नए-नए रोजगार स्थापित करने के अवसर

पैदा हो रहे हैं। विकास की प्रक्रिया को आगे बढ़ाने के लिए अटेली में भी कमल के निशान पर 5 अक्तूबर को अधिक से अधिक मतदान करें। इस मौके पर केंद्रीय मंत्री राव इंद्रजीत सिंह ने कहा कि 2014 में जब मैं सांसद बना और केंद्र में मंत्री बना तो योगी आदित्यनाथ की और मेरी कुर्सी बराबर में होती थी उनसे मेरा पुराना रिश्ता है इसलिए मैंने योगी आदित्यनाथ को यहां पर चुनाव प्रचार में बुलाया है। उन्होंने कहा कि आप से मेरा पुराना रिश्ता रहा है। उन्होंने कहा कि महेंद्रगढ़ ,अटेली, नारनौल व नांगल चौधरी ने 36 बिरादरी ने मुझे राजनीतिक में हमेशा सहयोग दिया है जिनकी बदैलत राजनीतिक मैं इस मुकाम पर पहुंचा हूं। आप सब से निवेदन करता हूं कि 5 अक्टूबर को भाजपा के चुनाव चिन्ह कमल के निशान पर बटन दबाकर आरती सिंह राव को भारी बहुमत से विधानसभा में भेजने का कार्य करें। कार्यक्रम में अटेली विधानसभा क्षेत्र से भाजपा प्रत्याशी आरती सिंह राव ने अपने संबोधन में कहा कि क्षेत्र की जनता ने जिस तरह उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के स्वागत में यहां पहुंच कर स्वागत किया है, इस तरह 5अक्टूबर को भाजपा के पक्ष में अधिक से अधिक मतदान कर मुझे विधानसभा में भेजने का कार्य करेंगे। इस मौके पर पूर्व प्रदेश अध्यक्ष एवं पूर्व शिक्षा मंत्री प्रो. रामबिलास शर्मा, नारनौल से भाजपा प्रत्याशी ओमप्रकाश यादव, निवर्तमान विधायक सीताराम यादव, पूर्व केंद्रीय मंत्री कैलाश चौधरी,शंकर सिंह धूपड, मनीष मि्तल , डा. राकेश कुमार जिला प्रमुख , जिलाध्यक्ष दयाराम यादव , चेयरमैन जयप्रकाश, विकास यादव, कुलदीप यादव, सतबीर नौताना, नरेश एडवोकेट, रामअवतार भोजावास सहित अनेक गणमान्य लोग उपस्थित थे।

शहीदे आजम भगत सिंह एवं शहीद शिरोमणि कमांडर इन चीफ चंद्रशेखर आजाद की प्रथम भेंट कानपुर में ही थी...निन्नी पांडेय



दि ग्राम टुडे, कानपुर।

कानपुर अपने आप में अनेक क्रान्तिकारी घटनाओं का साक्षी व केन्द्र रहा है। इसी कानपुर में ही प्रताप अखबार के सम्पादक अमर शहीद गणेश शंकर विद्यार्थी की स्थित फीलखाना में ठीक प्रेस के सामने एक गली थी जहाँ अब आगे जाकर विद्यार्थी

जी की प्रतिमा लगी है एवं इस पार्क का नाम भी उन्ही के नाम से है, जो पूर्व में एक खाली मैदान था। इसी मैदान में सर्वप्रथम भेंट शहीद भगत सिंह व शहीद चन्द्रशेखर आजाद की शहीद विद्यार्थी जी के द्वारा कराई गई थी। निन्नी पाण्डेय ने बताया कि जब 1924 व 1925 के दौरान जब कानपुर आये

भूल गए वो जो कभी अपने थे,मुक्ति के लिए अपनो का आज भी इंतज़ार कर रही है अस्थियां

दि ग्राम टुडे, कानपुर। (अमित कुमार) कानपुर के रेव श्री पार्वती बगला रोड के पीछे बना शहर का प्रसिद्ध भैरवघाट, जहां कानपुर के बड़े स्तर पर प्रति दिन बड़ी संख्या में मृत शरीर आते हैं और अंतिम संस्कार किया जाता है, भैरवघाट पर अंतिम संस्कार का कार्य करने वाले कर्मचारियों के अनुसार कि इस घाट पर विद्युत शवदाह गृह भी है और लकड़ी से भी जलाने की व्यवस्था है यहीं पर अस्थि कलश बैंक भी है जो नवंबर 2014 में दधीचि देह दान संस्था शुरू की गई थी, इस संस्था के द्वारा जो व्यक्ती अपने परिजनों की अस्थि विसर्जन के लिए नहीं आते या भूल जाते हैं या फिर महीनों, सालों बाद अस्थि विसर्जन करते हैं तो उनको इस बैंक में जमा कर उनको चाभी दे दी जाती है, लेकिन बहुत से लोग ऐसे भी होते हैं कि सालों नहीं आते हैं तो वहीं के कर्मचारियों द्वारा अस्थि का विसर्जन कर दिया जाता है। इस संस्था की शुरुआत करने का मक़सद भी यही है कि आज के समय में लोग दिखावे बहुत करते हैं लोगों को दिखाने के लिए या फिर किसी कारण से अस्थि विसर्जित नहीं कर पाते हैं, या फिर दाह संस्कार करने के बाद अपने परिजनों को भूल जाते हैं तो अस्थि को अस्थि बैंक में जमा कर देते हैं और फिर बहुत से लोग विसर्जित करने नहीं आते हैं। काफी समय का इंतज़ार करने के बाद उन्हीं अस्थियों को भैरव घाट के कर्मचारी द्वारा ही जल में विसर्जित कर दिया जाता है। इस संस्था के मुख्य मनोज सेगर द्वारा संचालित किया जाता है,लावारिश अस्थियों का विसर्जन विधि विधान से



देख रेख करने के बाद किया जाता है। वहीं कोरोना काल के समय सैकड़ों लोगों का विसर्जन घाट के कर्मचारी द्वारा किया गया था और कोरोना में सबसे ज्यादा लगभग 191 मृतकों का दाह संस्कार किया गया था। जो कि एक दिन का रिकॉर्ड रहा है कानपुर भैरवघाट का। कोरोना काल के समय बहुत से मृत शरीर हॉस्पिटल से आती थी जिनका कोई नही रहता था या फिर

बहुत से लोग देश के बाहर थे उनका दाह संस्कार किया गया बाद में जो आए उनको अस्थि कलश बैंक द्वारा अस्थियां दी गई, जिन मृतकों के परिवार से नहीं आए उन अस्थियों का विधि विधान पूर्वक विसर्जित कर दिया गया। मनोज सेगर के अनुसार यह संस्था कई जिलों में खोले जाऐंगे और लावारिश अस्थियों को संस्था द्वारा विसर्जित किया जाएगा।

फरियादियों की शिकायतों का समय से हो निस्तारण : विधायक शशांक त्रिवेदी



ब्यूरो --अमित मिश्रा
विधायक शशांक त्रिवेदी , क्षेत्राधिकार अलोक प्रसाद, तहसीलदार तपस्या यादव संयुक्त रूप से थाना दिवस में रहे मौजूद सीतापुर (दी ग्राम टुडे) महोली सीतापुर महोली के

कोतवाली परिसर में क्षेत्रीय विधायक शशांक त्रिवेदी की अध्यक्षता में क्षेत्राधिकार अलोक प्रसाद तहसीलदार तपस्या यादव कोतवाली प्रभारी विनोद कुमार मिश्रा के द्वारा थाना दिवस का आयोजन किया गया थाना दिवस के दौरान फरियादियों ने

अपनी शिकायत क्षेत्रीय विधायक शशांक त्रिवेदी के समक्ष पेश की उन्होंने सरकार की मनसा स्वरूप शिकायतकर्ताओं के प्रार्थना पत्रों पर क्षेत्रीय लेखपालों से समय से निस्तारण के निर्देश दिए विधायक शशांक त्रिवेदी ने फरियादियों की शिकायतों पर त्वरित व प्रभावी कार्रवाई करने के साथ-साथ थाना समाधान दिवस में फरियादियों को उचित न्याय दिलाने पर जोर दिया इस मौके ब्लॉक प्रमुख महोली जगदीश प्रसाद ब्लॉक प्रमुख मिथिलेश यादव लेखपाल नेहा चौरसिया धीरेंद्र सिंह प्रतीक गुप्ता अमेश कुमार विनय शुक्ला विनीत अनिस द्विवेदी सुनील दत्त और नरेंद्र प्रताप सिंह कर्मचारी गण मौजूद रहे।

बाघ ने एक गोवंश को बनाया अपना निवाला क्षेत्र में फैली दहशत



ब्यूरो ?--अमित मिश्रा
सीतापुर (दी ग्राम टुडे)महोली क्षेत्र के भगवानपुर ग्रांट में बाघ ने

फिर एक गोवंश को अपना निवाला बना लिया वन विभाग ने पग चिन्हो के आधार पर पर बाघ के होने की

कागजों में हेरफेर कर लोगो से ठगी करने वाला शातिर गिरफ्तार



ब्यूरो --अमित मिश्रा
सीतापुर (दी ग्राम टुडे) पुलिस अधीक्षक सीतापुर चक्रेश मिश्र द्वारा जनपद में गंभीर अपराधों से संबंधित घटनाओं के त्वरित अनावरण एवं अपराधियों के विरुद्ध कठोरतम कार्यवाही हेतु जनपदीय पुलिस को निर्देशित किया गया है। उक्त दिये गये निर्देशों के अनुपालन के क्रम में क्षेत्राधिकारी बिसवां सतीश चंद्र शुक्ला के निकट पर्यवेक्षण में थाना बिसवां की पुलिस

टीम द्वारा अभियुक्त श्रीराम पुत्र शिववचन नि. फुसही डयोढी थाना ईशानगर जनपद लखीमपुर खीरी को गिरफ्तार करने में सफलता प्राप्त की गयी है। अभियुक्त के पास से एक अदद आधार कार्ड जिस पर नाम श्री राम पुत्र रामचरन हाउस नं0 07 मो पडाना टोला जोशीमठ ,जोशीमठ चमोली उत्तराखण्ड तथा एक फर्जी पैन कार्ड जिसपर नाम तीर्थ राम पुत्र रामचरन अंकित है , बरामद हुआ है। अभियुक्त ने पूछताछ में बताया कि मेरे बिसवां के मिलने

स्वच्छता का संदेश देते हुए निकाली गई स्वच्छता पखवाड़ा रैली



ब्यूरो ?--अमित मिश्रा
सीतापुर (दी ग्राम टुडे) माननीय राज्यमंत्री नगर विकास श्री राकेश राठौर(गुरु) जिलाधिकारी अभिषेक आनंद, मुख्य विकास अधिकारी निधि बंसल, अपर जिलाधिकारी वित्त एवं राजस्व नीतीश कुमार सिंह, अधिशाषी अधिकारी नगर पालिका सीतापुर वैभव त्रिपाठी, नगर पालिका अध्यक्ष प्रतिनिधि मुनीन्द्र अवस्थी सहित सफाई दल ने स्वच्छता पखवाड़े का शुभारंभ शहीद स्तम्भ पर शहीदों को पुष्पांजलि देकर नमन कर एवं दीप प्रज्ज्वलित करते हुये किया। स्वच्छता पखवाड़ा रैली शहीद पार्क लालबाग से होते हुए अटल चौक, तहसील गेट तक स्वच्छता का संदेश देते हुये निकाली गयी। इस अवसर पर मा0 मंत्री राकेश राठौर जी ने स्वच्छता की शपथ भी दिलवायी। स्वच्छता पखवाड़े के शुभारंभ के दौरान राज्यमंत्री नगर विकास राकेश राठौर गुरु जी ने कहा कि मा प्रधानमंत्री जी के जन्म दिन पर यह अभियान आरम्भ हुआ है, और गांधी जी के जन्म दिवस 2 अक्टूबर पर इस अभियान की समाप्ति हो रही है। मा0 मंत्री जी ने बताया कि आजादी के बाद से अब तक की यह पहली

सरकार है जिसने सफाई को मुख्य एजेण्डे में शामिल किया है। चौंक इस्लाम में सफाई को ‘‘निस्फ ईमान’’ अर्थात् आधी आस्था बताया गया है इस लिये भी मैं सरकार के सफाई सम्बन्धी इस महा अभियान के प्रति गहरी चिन्ता रख रहा हूँ। सफाई से हमारा स्वास्थ्य एवं वातावरण पूरी तरह सम्बद्ध है। सफाई का अर्थ मात्र इतना ही नहीं कि गलियों एवं आस-पास के क्षेत्रों को साफ कर लिया जाये बल्कि सफाई जीवन के सभी पहलुओं को प्रभावित करने वाले दूरगामी परिणाम पर भी असर डालती है। उन्होंने बताया कि गंदरी से बच्चों की अपेक्षित लम्बाई भी प्रभावित हुयी है। स्वच्छता अभियान से बच्चों को कई प्रकार की बीमारियों से बचा लिया गया है। जिलाधिकारी ने अपने सम्बोधन में कहा कि यँ तो पूरे नगर की स्वच्छता को बेहतर बनाये रखना हमारा लक्ष्य है परन्तु हमें इस बात पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है कि किस प्लाईड पर टिप्पण किया जाये की लक्ष्य सहल एवं शीघ्र प्राप्त हो। जिलाधिकारी ने जनप्रतिनिधियों से कहा कि आप निर्विवाचित लोग हैं इस लिये समाज को सफाई के प्रति सचेत व जागरूक करने में आपकी भूमिका अत्यन्त महत्वपूर्ण होने के कारण ही आप से यह अपेक्षा की जा रही है क्यों कि संतुलित पर्यावरण, बेहतर स्वास्थ्य के लिये आम लोगों का अभियान से जुड़ना लक्ष्य के लिये नितान्त आवश्यक है।

जिलाधिकारी ने कहा कि इस

संपूर्ण थाना समाधान दिवस का किया गया आयोजन



ब्यूरो --अमित मिश्रा
सीतापुर (दी ग्राम टुडे)सम्पूर्ण थाना समाधान दिवस खैराबाद में जिलाधिकारी अभिषेक आनंद व पुलिस अधीक्षक चक्रेश मिश्र ने फरियादियों की समस्याओं को एक - एक सुनकर गुणवत्तापूर्ण निस्तारण के निर्देश संबंधित को दिया।जमीन के

विवाद, पैमाइश आदि की समस्याओं को राजस्व विभाग व पुलिस विभाग को मौके पर जाकर निस्तारण के निर्देश दिया।

विवाद से संबंधित दोनो पक्षो की सुनकर न्यायालय में लंबित मामलों की शिकायतों को सुनकर जिलाधिकारी ने शिकायतकर्ता को न्यायालय के निर्णय

राजातालाब क्षेत्र के कचनार गांव के चकरोड पर अवैध कब्ज़ा की हुई लोकायुक्त जांच

वाराणसी राजातालाब प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के संसदीय क्षेत्र वाराणसी के राजातालाब तहसील के कचनार ग्राम के चकरोड आराजी संख्या 705 और 712 सहित जलखाता आराजी संख्या 694 पर अवैध कब्ज़ा की शिकायत पर लोकायुक्त से हुई थी। इस पर जांच का निर्देश लोकायुक्त ने दिया था। डीएम ने एसडीएम और एसपी राजातालाब सहित सरकारी अधिवक्ता को शिकायत की जांच के लिए नामित किया। उसी कड़ी में एसडीएम राजातालाब ने गांव में उक्त सरकारी आराजियात पर अवैध कब्ज़ा की शिकायत की जांच करते हुए जरूरी निर्देश दिए।

एसडीएम राजातालाब ने शिकायत कर्ता के शिकायत पर दल बल के साथ मौके पर पहुंच की जांच। इसमे चकरोड और जलखाता के अवैध



कब्ज़ा का जांच किया। इस दौरान शिकायत कर्ता राजकुमार गुप्ता का कहना है कि ग्राम सभा में भूमाफियों द्वारा करोड़ों की सरकारी ज़मीन का गोल माल किया गया है। इसकी शिकायत पहले स्थानीय स्तर पर की, लेकिन सही जांच नहीं की गई। इसके बाद लोकायुक्त जांच की मांग की। इस

को इंतजार करने के निर्देश दिया।तब तक किसी भी तरह का विवाद न किया जाय।दोनो पक्ष शांति से रहे। जिलाधिकारी ने चाचा-भतीजे के बीच गलियारे के विवाद को शांतिपूर्ण तरीके से आपसी सहमति से बिना विवाद को सुलझाने के निर्देश संबंधित को दिया। फर्जी व झूठी शिकायतकर्ता पुलिस अधीक्षक से नहीं मिला पाए नजर,कसान के सवालों का उत्तर देने में शिकायतकर्ता की लड़खड़ाई जबान। शांतिपूर्ण तरीके से आमजनमानस को रहने की पुलिस अधीक्षक ने दी नसीयत। अपराधियो व बवालियों को चिन्हित करने के दिया निर्देश।

राजकीय व सुरक्षित जमीन पर कब्ज़ा करने वाले भू-माफियोंओं को चिन्हित कर एफ आई आर दर्ज कर कब्ज़ा मुक्त कराये जाने के निर्देश पुलिस अधीक्षक ने दिया।

आम आदमी पार्टी उम्मीदवार कृष्ण बजाज का गांव बलाही में डोर-टू-डोर चुनाव प्रचार

वैद्य पण्डित प्रमोद कौशिक।
कुरुक्षेत्र - आम आदमी पार्टी उम्मीदवार कृष्ण बजाज ने गांव बलाही में डोर टू डोर प्रचार किया। कृष्ण बजाज अपने समर्थको के साथ ग्राम बलाही, गांव बागथला, फौजी कॉलोनी, गांव समसीपुर, बफर गोदाम में जनसभाएं करते नज़र आये। सरस्वती कॉलोनी में जनता से मुलाकात कर वोटों की अपील की। इस दौरान कॉलोनी के निवासी ने कहा कि थानेसर को आज बदलाव की जरूरत है, एक ऐसा विधायक चाहिए जो थानेसर के लोगो की सेवा करे। कृष्ण बजाज एक ऐसी व्यक्ति है जो हमेशा लोगो के साथ दुख सुख में हमेशा खड़े रहे।

कृष्ण बजाज ने गांव बलाही के लोगो को मंच से सम्बोधन किया। इस अवसर पर उनके साथ आम आदमी पार्टी के राष्ट्रीय प्रवक्ता सुमित हिंदुस्तानी भी मौजूद रहे।सुमित हिंदुस्तानी ने उनको अरविंद केजरीवाल की पांच गारंटियों के बारे में विस्तार से बताया। गांव बलाही के लोगो ने एक मत हो कर कृष्ण बजाज



का समर्थन किया और आने वाले चुनाव में कृष्ण बजाज का साथ देने के लिए आश्वासन किया। सथाई निवासियों ने यह भी कहा कि गांव से एक तरफ रुझान है। गांव बलाही की जनता इस बार झाड़ू के निशान पर वोट कर कृष्ण बजाज को कामयाब बनाने का काम करेगी।

सभी कार्यक्रमों में कृष्ण बजाज जी के पुत्र बुद्धप्रियबजाज , पुत्री गौरी बजाज भी मौजूद रहे। उन्होंने कहा

दादा मियां की दरगाह पर समाजसेवियों और पत्रकारों ने पेश की अकीदत की चादर



मजार शरीफ पर समाज के सभी वर्गों और पत्रकारों की खुशहाली के लिए भी हुई दुआएं

दि ग्राम टुडे,लखनऊ।माल एनेन्यू स्थित हजरत मोहम्मद नबी शाह रहथ बाबा के उर्स मुबारक बड़ी ही धूमधाम के साथ मनाया जा रहा है। इस मुबारक मौके पर दरगाह पर समाजसेवियों और पत्रकारों ने भी अकीदत की चादर पेश की और मुत्क में आपसी

भाईचारा,अमन चैन,सुख शांति और प्रदेश की खुशहाली के लिए इज्तिमाई शबल में विशेष दुआएं की।

इस अवसर पर फरहत हसन,प्रिंट मीडिया बर्विगै जर्नलिस्ट एसोसिएशन के राष्ट्रीय अध्यक्ष अजीज सिद्दीकी और उत्तर प्रदेश जिला मान्यता प्राप्त पत्रकार एसोसिएशन के महामंत्री अब्दुल वहीद, सचिव जुबैर अहमद, काशाना ए वारिस के अध्यक्ष अरशद

वो जो रिश्ता निभाना नहीं चाहता।

वो जो रिश्ता निभाना नहीं चाहता।
दिल उन्हें फिर मनाना नहीं चाहता॥

कोई मगरूब हो तो रहे आप में।
मैं उन्हें कुछ बताना नहीं चाहता॥

जो रुलाते रहो ऑंसू सदा खून के।
मैं उन्हें गुम दिखाना नहीं चाहता॥

तुम लगाते रहो काँट मेरी डगर।
मैं इसे भी हटाना नहीं चाहता॥

याद रखना तू कौशल नसीहत मेरी।
तुझको ज़ालिम ज़माना नहीं चाहता॥



कौशल किशोर औरंगाबादी
औरंगाबाद बिहार

लघु कविता

कभी लगता है जिंदगी गुलजार है,
तो कभी लगता है जीना हो बेकार है
कभी लगता है लोगों में प्यार है,
तो कभी लगता है की हर रिश्ते में दार है
कभी लगता है सबको हमसे प्यार है,
तो कभी लगता है की सिर्फ भ्रम का माया जाल है
कभी लगता है सब अपने ही प्यार है,
फिर लगता है इनमें भी छिपे छुप घोंपने वाले गद्दार हैं
कभी लगता है कितना सुंदर यह संसार है,
तो कभी लगता है की यह सिर्फ सपनों का भ्रम जाल है।



माँ
(बीटेक/एमबीए)
(सूर्योदय बिहार अंसल कालोनी शास्त्री नगर मेरठ)
(उत्तर प्रदेश)

108 एंबुलेंस में गूंजी किलकारी, महिला ने दिया बच्चे को जन्म

पप्पू लाल शर्मा
सीकर....मरीचों के लिए ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में वरदान साबित हो रही 108 एम्बुलेंस स्टाफ ने एक महिला का सफल प्रसव करवाया गया। 108 सेवा के इमरजेंसी मेडिकल टेक्नीशियन आलम ने बताया कि गुरुवार को जानना सीकर से जयपुर का रैफर मिला जिस में महिला ललिताली रवि कुमार उम्र 28 वर्ष निवासी फलशाना सीकर को अचानक प्रसव पीड़ा शुरू हुई। सूचना मिलते ही जानना सीकर से जयपुर के लिए खाना हो गए 108 एंबुलेंस गोविंद गढ़ के पास महिला को तबीयत और खराब होने लगी। महिला की हालत देख 108 एंबुलेंस



में तैनात इमरजेंसी मेडिकल टेक्नीशियन आलम व पायलट हीरालाल ने गोविंदगढ़ के पास एंबुलेंस रोककर एम्बुलेंस में महिला का सफल प्रसव करवाया। महिला ने एक स्वास्थ्य बेटे को जन्म दिया। प्रसव के बाद जच्चा बच्चा को राजकीय चिकित्सालय गोविंदगढ़ में एडमिट करवा दिया गया। जहां पर जच्चा-बच्चा दोनों स्वस्थ है।

आधी रात को ट्रेलर चोरी की वारदात, पुलिस की मुस्तेदी से ट्रेलर बरामद !

रिपोर्ट राजकुमार शर्मा, राजस्थान, कोटपुतली-
आधी रात को कोटपुतली के श्याम मंदिर के पास राठौरी की ढाणी में अज्ञात चोरों ने ट्रेलर चोरी की वारदात को अंजाम दिया। अज्ञात चोरों ने सड़क के किनारे खड़े एक ट्रेलर को चुरा लिया। घटना रात करीब 2 बजे की है जब ट्रेलर ड्राइवर महेंद्र सिंह राठौड़ अपने घर चाय पीने के लिए गया था। ट्रेलर को सड़क पर खड़ा छोड़कर गए महेंद्र सिंह जब कुछ देर बाद वापस लौटे तो ट्रेलर गायब मिला।

चोरी की यह वारदात पास के सीसीटीवी कैमरे में कैद हो गई। फुटेज में चार चोरों को एक कार में आते हुए देखा गया। सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची और फुटेज के आधार पर तत्काल नाकाबंदी करवाई गई।

कार में सवार होकर आए थे चोर-सीसीटीवी फुटेज में सफेद रंग की कार दिखाई दे रही थी जिसमें चार सवार होकर आए थे। चोरी के बाद कार आगे आगे चल रही नजर आ रही थी। ट्रेलर में जीपीएस सिस्टम लगा होने के कारण ट्रैकिंग में आसानी हुई और सुबह करीब 6 बजे शाहजहांपुर के पास चोरों ने नाकाबंदी देख ट्रेलर को छोड़कर फरार हो गए। पुलिस ने ट्रेलर को बरामद कर लिया है और चोरों की तलाश जारी है। पुलिस के अनुसार, इस वारदात में चार चोर शामिल थे। पुलिस की तेज कार्रवाई और सतर्कता से चोरी का ट्रेलर बरामद कर लिया गया, हालांकि चोरों की गिरफ्तारी अब भी बाकी है। पुलिस इस मामले में आगे की जांच कर रही है।

अपनी कलम अपनी आवाज़

दोषी कौन

इंसानियत जिसकी मर चुकी है भला वह क्या कर सकेगा। लाभ लेने से पेट भरे तो फिर भी नहीं दे सकेगा।।

दोषी अपने आप हैं हम जो हम उन्हें साथ देते हैं। भला कर कर के भी बदले में कुछ न लेते हैं।।

हम भी दोषी आप भी दोषी दोष मैं किसका कहूँ। ग्राहक बनकर रह गया तो हिसाब मैं किससे करूँ।।

मूक बनकर रहे हो तुम और मूक बनकर रहना होगा। चुंग जातो चिड़िया खेत जब तो पछताकर कुछ कहना होगा।।

जब तक कुछ कहोगे नहीं कौन किसका सुनता हैं। दोषी अपने आप में हैं तो शायद कोई कह पाता हैं।।



मुन्ना प्रसाद मुरली शिक्षक सह कवि रोहतास बिहार

जिद पर अड़ी रोशनाई

लिखूंगी सच से भरी लिखाई होगा ऐसा वो लेख, बन जायेगा एक दिन अभिलेख गर्वित हो जाए पढ़ने वाला चाहेगा बनाना शिलालेख।

लिखते लिखते कलम, कभी कर जाए धृष्टता छुपा ना पाये निज मन की व्यग्रता, कोई ना समझ पाए उसकी अधीरता किस बात की है ये आतुरता? जानती है कलम, लेख की महता देखी है उसने लोगों की उदासीनता पर समझती है वो सवेदनशीलता जिस दिन कलम की ताकत, सबको समझ आ जाएगी सच्चाई लिखने से कलम कभी ना घबराएगी।

मार्ग में आए चाहे कितनी भी कठिनाई चाहे हो कितनी निंदा, कितनी भी बुगई जानती है रोशनाई, होगी बहुत जग हंसाई सत्य लिखने की कीमत बहुतों ने जान देके चुकाई पर कलम को करनी होगी खूब ढिंढाई चुनौती भरी राह में सब छोड़ देंगे साथ जीवनपर्यन्त साथ चलेगी, परछाई बनके रोशनाई हर्षित है, गर्वित है आज रोशनाई लाख कठिनाइयों के बावजूद लिख पाई सच से भरी लिखाई ।



आराधना पी मौर्य लखनऊ

गीत

प्यार अपना मैं दिल में छुपाने चला खुद को ही मैं जहां से मिटाने चला। तुम मिलो न मिलो अब है परवाह नहीं झूठी दुनिया से अब मैं जाने चला। नाम तेरे लिखे जो थे सुंदर सपन खाक उनका मैं अब तो बहाने चला। तुमसे मिलने का अरमां दिल में लिए अरमानों की चिता मैं सजाने चला। प्यार अपना मैं दिल में छुपाने चला.... याद में तेरी दिल यह मचलता बहुत कर लिए सौ जतन मन भटकता बहुत । राह तकते कई दिन ओ राते गयीं नापते रास्ते रूक हैं सांसें गयीं। प्यार अपना मैं दिल में छुपाने चला.... चांद की शाम भी तन्हा कटती नहीं महफिले भी कोई जख्म भरती नहीं । तुम आओ तो खुलकर बता दो हमें जिंदगी बिन तुम्हारे है गुजरती नहीं । प्यार अपना मैं दिल में छुपाने चला खुद को ही मैं जहां से मिटाने चला।



स्वरचित मौलिक अंजू विश्वकर्मा
%अवि % गोरखपुर, उ.प्र.।

फिसली दलबदलूओं की जुबां,

हरियाणा में फिसली दलबदलूओं की जुबां, अपने ही पार्टी का कर रहे काम तमाम। खुद की ही पार्टी को बता रहें है दमनकारी, समझ नहीं आ रहा यह कैसी है कलाकारी। पार्टी उम्मीदवार के खिलाफ बयान दे रहे, कार्यकर्ता सकते में है वह भी खफा हो रहे। कांग्रेस नेताओं के बयान ज्यादा गड़बड़ा रहे, वे तो अभी भाजपा की सरकार बनवा रहे। एक ने तो पुरानी पार्टी के लिए वोट मांग लिए, कार्यकर्ता बोला जीत के भी बुझा दिये दिए। उम्मीदवार ने कांग्रेस को ही गैस पर घेर दिया, ओरे, जीत रहा था वह खुद ही पानी फेर दिया। विपक्षी दल बयानों पर खूब तंज कस रहे हैं, मतदाता वोट देने से पहले ही खूब हँस रहे हैं। कौन गुसा, कौन बलवान? रंगा या मोहित! पता नहीं किस-किसका कौन कर रहा अहित? अब तो न जाने क्या-क्या हो रहा है वायरल? किसी की जीत और हार का बज रहा सायरन।



संजय एम. तरणेकर (कवि, लेखक व समीक्षक) इंदौर (मध्यप्रदेश) 98260-25986

बेटी है तो सब कुछ है

बेटी है तो कल है बेटी है तो सर्टि है बेटी है तो दुनिया है सच तो यह है कि बेटी ही, परम् पिता ईश्वर की, दुनिया की जनक है सुख , सुकून, और आनन्द बेटी केवल कोमलता लिए नाजूक , किसी विषय का आधार नहीं, बल्कि समय पर, बनी, दुर्गा, काळी, लक्ष्मी का नाम भी बेटी क्या नहीं है सही सोच, चिंतन कर सौचें, लोपाग, सचमुच बेटी है तभी सभी सुख और दुनिया के आनन्द है वही तो सृष्टि की जनक वही तो जन्म देती दुनिया को चलती हुई देवत्व है, पूजा है, विकास है, उन्नति है प्रणाम करता हूँ इस बेटी दिवस पर दुनिया की तमाम बेटियों को, सत् सत् प्रणाम करता हूँ



डॉ रामशंकर चंचल झाबुआ, मध्य प्रदेश

मौत के पहले का

जीवन का इस से बड़ा सुख और सुकून क्या है कि जिस पावन भूमि पर जन्मा, उस शहर को आज, कुछ ही सही देकर जा रहा हूँ आज यह शहर याद भले न करें, कोई दु:ख नहीं मैंने सदा, मेरा नाम नहीं शहर का नाम चाहा और वो, आज, जब कुछ हद तक, हासिल किया तो, सचमुच गर्व हुआ मेरी सालों की, पूरी रात जाग कर की साधना को प्रणाम करता हूँ उस ईश्वर को जिसने, पग पग पर मेरा साथ दिया और मैं, जीवन की सार्थकता को कुछ अंश तक ही सार्थक कार्य करते हुए जी गया, बहुत है यह महान बनने का कोई शोक नहीं जब कर्म ही उस पावन भूमि के लिए करना है , तो खुद की बात कहीं आती है खुद का जीवन तो वैसे ही, धन्य हो गया कि ईश्वर सदा ही साथ साथ रहा प्रणाम उस ईश्वर को

डॉ रामशंकर चंचल झाबुआ मध्य प्रदेश

निशुल्क चिकित्सा शिविर का आयोजन

प्रयागराज 28 सितंबर 24, चिकित्सा के क्षेत्र मे बिमल होमियो सदन पिछले बीस वर्षों से लगातार सुविधा प्रदान कर रहा है। इसी क्रम मे 29 सितंबर को एन पी ए आर्केड निकट सुभाष चौराहा सिविल लाइन मे अपरहा 12 बजे से शाम 3 बजे तक निशुल्क चिकित्सा परामर्श शिविर का आयोजन कर रहा है। शिविर के आयोजक व

बिमल होमिओ सदन ट्रस्ट के संस्थापक डॉ प्रदीप कुमार श्रीवास्तव बताते है कि स्वास्थ्य के क्षेत्र मे लगातार इस तरह के निशुल्क शिविर का आयोजन कर लोगो को उनके स्वास्थ्य के प्रति जागरूक करने का कार्य किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि शिविर मे अधिक से अधिक लोग पहुँच कर निशुल्क सेवा का लाभ अवश्य ले

ड्राइवर ने ट्रंसपोर्टर को लगाया लाखों का चूना, माल लेकर फरार



दि ग्राम टुडे, कानपुर। (सौरभ मिश्रा) थाना बाबूपुरवा क्षेत्र के ट्रंसपोर्ट नगर स्थित नेशनल ट्रंसपोर्ट कारपोरेशन के मैनेजर राम जी त्रिपाठी ने आरोप लगाते हुए बताया कि विगत 3 सितम्बर को अहमदाबाद कार्यालय से उनके ट्रंसपोर्ट की ओर जे 19 जी क्यूं 2814 गाड़ी ग्राम उदयपुर जामु कला अंबेडकर नगर निवासी ड्राइवर पप्पू पाल अहमदाबाद से कानपुर को रेंडिमेड कपड़े भरी गाड़ी लेकर निकला। रास्ते में ड्राइवर पप्पू ने 27 नग रेंडिमेड कपड़ो को चोरी कर उन्हें चूना लगाकर फुर्र हो चला। माल की कीमत तकरीबन 15 लाख रुपए है। जैसे ही उनकी गाड़ी ट्रंसपोर्ट पहुंची तथा माल का मिलान करने पर उन्हें 27 नग कम नजर आए। उन्होंने बताया की उनका ट्रंसपोर्ट तकरीबन 20 वर्षों से संचालित हो रहा है। ड्राइवर के द्वारा

लाखो की चोरी करने से उनकी विश्वसनीयता पर भी सवाल उठ रहे हैं। उन्होंने आलाधिकारियों से गुहार लगाते हुए अपील की जल्द ड्राइवर की गिरफ्तारी की मांग की। मैनेजर त्रिपाठी ने बताया की उनकी प्राथमिक सूचना स्थानीय पुलिस ने दर्ज कर ली है तथा ड्राइवर लाखो की चपत लगाकर गायब है। और उसके पारिवारिक जन आरोपी ड्राइवर का साथ देते हुए उन पर ही दबाव बना रहे हैं। रामजी त्रिपाठी ने घटना की जानकारी देते हुए कहा कि ट्रंसपोर्ट यूनियन को भी उक्त मामले की जानकारी दे दी गई तथा यूनियन ने हर कदम पर साथ देने की बात कही है। वहीं दूसरी ओर ट्रंसपोर्ट के मैनेजर ने अपील करते हुए कहा कि लाखों का माल लेकर फरार हुए ड्राइवर की सूचना पुलिस प्रशासन एवं ट्रंसपोर्ट यूनियन को देने वाले को उचित इनाम दिया जाएगा।

भाजपा एक से 15 अक्तूबर तक सदस्यता अभियान का दूसरा चरण शुरू करेगी



दि ग्राम टुडे,कानपुर।शनिवार को केशव नगर स्थित भाजपा दक्षिण पार्टी कार्यालय में दक्षिण जिलाध्यक्ष शिवराम सिंह की अध्यक्षता में सदस्यता अभियान की समीक्षा बैठक सम्पन्न हुई।

भाजपा कानपुर बुंदेलखंड क्षेत्र के क्षेत्रीय अध्यक्ष प्रकाश पाल ने जिला पदाधिकारी, मोर्चा अध्यक्षों, मंडल अध्यक्षों के साथ बैठक कर दक्षिण जिले की सदस्यता अभियान की समीक्षा की।

क्षेत्रीय अध्यक्ष प्रकाश पाल ने कहा कि जिन बूथों पर लक्ष्य से कम सदस्यता हुई है वहां पर रविवार को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के मन की बात सुनने के बाद कार्यकर्ता घर-घर जाकर कम से कम 100 सदस्य बनाएंगे। कम सदस्यता वाले चिन्हित बूथों पर सदस्यता बढ़ाने के लिए प्रदेश , क्षेत्रीय, जिला पदाधिकारी एवं वरिष्ठ कार्यकर्ताओं को विशेष रूप से लगाया गया है। भाजपा एक से 15 अक्टूबर तक सदस्यता अभियान का दूसरा चरण शुरू करेगी। पार्टी द्वारा 16 से 31अक्तूबर तक सक्रिय सदस्यता अभियान चलाया जाएगा। सक्रिय सदस्य बनने के लिए प्रत्येक कार्यकर्ता को 100 सदस्य बनाना अनिवार्य होगा एवं 7100 की धनराशि नमो ऐप के माध्यम से भुगतान करना होगा।

उन्होंने कहा कि एक से 15 अक्तूबर तक सदस्यता अभियान के दूसरे चरण में प्रमुख बाजारों, रेलवे स्टेशन बस स्टेशन, कचहरी, विश्व विद्यालय, महाविद्यालयों में संपर्क के अलावा सामाजिक संगठन सभी सामाजिक वर्ग युवा, महिला, उद्यमी, किसान , अधिवक्ता, रिटायर्ड अधिकारी द्वारा कैंप लगाकर सदस्यता अभियान चलाया जायेगा।

उन्होंने कहा कि संगठन की शक्ति का आधार सदस्यता है। संगठन की सदस्यता ही संगठन की आत्मा है। पार्टी की सदस्यता हमारी विचारधारा की प्रक्रिया है। भाजपा राजनीतिक सुख हासिल करने के लिए राजनीति नहीं करती है। उन्होंने कहा कि भाजपा का सदस्यता अभियान सर्व स्पर्शी और सर्व समावेशी होगा। इसका मूल उद्देश्य भाजपा की राष्ट्र प्रथम की विचारधारा को जनता के बीच पहुंचाना है। पार्टी कार्यकर्ता घर घर संपर्क कर सदस्यता अभियान में जुटें। बैठक में कौशल किशोर दीक्षित, राम बहादुर यादव, सुनील नारांग, विनोद मिश्रा,विजय अवस्थी, अर्जुन बेरिया,मनीष त्रिपाठी, राजन चौहान, प्रकाश वीर आर्य, दिलीप सिंह,अर्चना आर्या, वंदना गुप्ता,शैलेंद्र त्रिपाठी,संजय कटियार, शिवम मिश्रा, वीरेंद्र दिवाकर,संजीव बेरी आदि मौजूद रहे।

भारतीय स्कूल लक्ष्मणगढ़ के नाम 10 जिला ट्रॉफी - रामस्वरूप महला

पप्पू लाल शर्मा सीकर...शिक्षा निदेशालय बीकानेर द्वारा आयोजित 68वीं जिला स्तरीय खेलकूद प्रतियोगिता में मणासिया रोड़ स्थित भारतीय शिक्षण संस्थान में चल रहे क्रिकेट व रग्बी फुटबॉल प्रतियोगिता में मेजबान टीम भारतीय के खिलाड़ियों ने लगातार तीसरे चरण के खेलों में शानदान प्रदर्शन कर 10 ट्रॉफी पर कब्जा किया।

प्रबंधक धर्मेन्द्र थालौर ने बताया कि बीपीएस कॉन्वेंट स्कूल ने 17 वर्षीय छात्रा वर्ग क्रिकेट में रा मा उ वि बगड़ी टीम को हराकर ट्रॉफी पर कब्जा किया। बीपीएस कॉन्वेंट लक्ष्मणगढ़ ने 19 वर्षीय छात्रा वर्ग रग्बी फुटबॉल में राजकीय स्कूल पनलावा को हराकर जिला खिताब हासिल किया। भारतीय स्कूल लक्ष्मणगढ़ ने 19 वर्षीय छात्रा वर्ग रग्बी फुटबॉल में रा मा उ वि ताजसर को हराकर जिला ताज अपने नाम किया। सॉफ्टबॉल 17 वर्षीय बालिका वर्ग में जिला उपविजेता का खिताब भारतीय स्कूल के नाम रहा। क्रिकेट 19 वर्षीय छात्रा वर्ग, और 17 वर्ष छात्र रग्बी फुटबॉल में भारतीय



शिक्षण संस्थान की टीम तृतीय स्थान पर रही।

संस्था निदेशक रामस्वरूप महला ने मुख्य अतिथि, खेल संयोजक, प्रभारी, निर्णायक दल एवं सभी कोचेज व प्लेयर्स को सफल आयोजन हेतु

धन्यवाद ज्ञापित किया एवं विजेता, उपविजेता व रनर अप टीम को हार्दिक बधाई दी एवं उन्हें ट्रॉफी से नवाजा गया। उन्होंने बताया कि लक्ष्य निर्धारित कर कड़ी मेहनत करने से सफलता अवश्य की मिलती है।

अविष्कार अभियान की क्रिज प्रतियोगिता आयोजित की गई

हिंदी दैनिक दि ग्राम टुडे गणेश प्रसाद द्विवेदी ब्युरो चीफ प्रयागराज नवाबगंज।शनिवार को खंड शिक्षा अधिकारी कौंडिहार प्रयागराज क्षमा शंकर पांडेय की अध्यक्षता में ब्लॉक संसाधन केंद्र नवाबगंज में राष्ट्रीय अविष्कार अभियान की क्रिज प्रतियोगिता आयोजित की गई जिसमें विकासखंड के विभिन्न उच्च प्राथमिक विद्यालय के छात्र-छात्राओं एवं कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय कौंडिहार प्रयागराज की बालिकाओं ने प्रतिभाग किया छात्र-छात्राओं ने लिखित एवं मौखिक प्रतियोगिता को क्वालीफाई करते हुए क्रिज स्तर में अपनी भागीदारी बनाई।

इस प्रतियोगिता में कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय कौंडिहार प्रयागराज की पांच बालिकाएं बैभववी मौर्या,नैसी यादव, साक्षी गौतम, रिमझिम और कोमल अंतिम 20 में चर्यनित हुई तथा दो बालिकाएं नैसी यादव और रिमझिम



जनपद स्तर हेतु चर्यनित हुई।कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय की छात्राओं सहित सभी विजेता छात्र-छात्राओं को खंड शिक्षा अधिकारी द्वारा सीलड एवं अन्य शैक्षिक सामग्री ,उपयोगी पुस्तकों आदि के द्वारा पुरस्कृत किया गया। कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालयों की

बालिकाओं द्वारा जनपद स्तर पर चर्यनित होना यह सिद्ध करता है कि कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय की छात्राएं भी विज्ञान और गणित जैसे विषयों में अपनी प्रतिभा दिखा सकती हैं और इस क्षेत्र में सफलता हासिल कर सकती है।

संपूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय के दीक्षांत समारोह में रचना मिश्रा को गोल्ड मेडल मिला



दिलीप कुमार संवाददाता कादीपुर सुलतानपुर । चांदा कोवलावी क्षेत्र के कोइरीपुर कस्बे के मोहल्ल

विवेकनगर निवासी रचना मिश्रा पत्नी प्रभात रंजन दुबे आचार्य की परीक्षा में सर्वोच्च अंक प्राप्त कर गोल्ड मेडल

इंडियन मेडिकल एसोसिएशन के संयोजन में सेमिनार का हुआ आयोजन

अंजनी दूबे संवाददाता सुल्तानपुर इंडियन मेडिकल एसोसिएशन शाखा सुल्तानपुर के संयोजन में नगर के गार्डन यू हाउस में जनपद के वरिष्ठ फिजीशियन एवं हृदय रोग विशेषज्ञ डॉक्टर जेपी सिंह की अध्यक्षता में रिफ्लेक्स ओशोगाइटिस पर सेमिनार का आयोजन किया गया। सेमिनार के मुख्य अतिथि हेल्थ सिटी विस्तार के गेस्ट्रोएंटेरोलॉजिस्ट डॉक्टर अभिनव कुमार ने उपस्थित लोगों को संबोधित करते हुए कहा कि इस समय गैस के कारण पेट में दर्द जलन और उल्टी होता है। तो इसके लिए सभी को शाम के समय भोजन जल्दी करना होगा

और दिन में फल फ्रूट ताजी सब्जियों का प्रयोग करें। साथ ही साथ गैस की समस्या होने पर अपने चिकित्सक की सलाह अवश्य लें। पेट में हो रहे किसी भी तरह के दर्द को हल्के में न लें। दर्द होने के कई कारण होते हैं। जिसमें प्रमुख कारण गैस भी होता है। डॉ अभिनव कुमार ने मोनोपराजॉन एसिड सप्लेशन के बारे में विधिवत रूप से चर्चा किया। यह एक नई दवा है इसे किसी भी समय गैस बनने पर लिया जा सकता है। सेमिनार में डॉक्टर राजीव रतन मिश्रा ने डॉक्टर अभिनव कुमार का बुके देकर स्वागत किया साथी साथ डॉक्टर ए पी अरोड़ा ने डॉ

जेपी सिंह को बुके देकर स्वागत किया बैठक में आई एम के अध्यक्ष जनपद के सुप्रसिद्ध सर्जन डॉक्टर ए के सिंह ने आए हुए सभी अतिथियों को धन्यवाद दिया कार्यक्रम में प्रमुख रूप से डॉ नीलिमा भटनागर उम्मुख्यमंत्री चिकित्सा अधिकारी डॉ लाल जी डॉ पवन सिंह वरिष्ठ ऑर्थोपेडिक सर्जन डॉक्टर पीके पाण्डे य वरिष्ठ बाल रोग विशेषज्ञ डॉक्टर रूप सिंह डॉ बीके शुक्ला डॉक्टर सुभाष चंद्र डॉ एसएम वर्मा वरिष्ठ हृदय रोग विशेषज्ञ डॉक्टर राजीव श्रीवास्तव डॉक्टर शैलेंद्र जायसवाल सहित आईएमए के सदस्यों व पदाधिकारियों की उपस्थिति रही।

लघु कविता

जीवन की इस दौड़ में
जीवन की इस दौड़ में,
कब समय निकल गया
कल तक थे जो अपने,
नीलाम हो गए,
कब कुछ लोगों की खुशियों के लिए
अपने सपनों का बलिदान कर दिया,
और आज उन्हीं लोगों ने मतलब के खातिर भुला दिया।
रूह आज भी पुरानी यादों में अटकी,
बस समय का पहिया बदल गया
चला था आशायें और सपने लेकर,
आज उन्हीं आशाओं और सपनों के बोझ तले दब गया
पैदल चलना सीखने वाला बच्चा कब
समय के साथ कब अपनी मंजिले लिखने
खुद अपने पैरों पर खड़ा हो चल दिया
जीने की कला रखने वाला कब जीना भूल गया।



अंकित अधाना
(एमवीए)
(ग्राम एंटी खुर्द
पोस्ट चेतावनी शेरपुर
मवाना मेरठ)

तिरुपति बालाजी समेत देश के सभी मुख्य मंदिरों का हो, उच्च स्तरीय जांच- स्वामी श्री सीताराम शरण जी महाराज



वरिष्ठ पत्रकार योगेश द्विवेदी राष्ट्रीय प्रभारी मीडिया
देश के मुख्य मंदिरों का सरकारीकरण नहीं, समाजीकरण हो- सुनील कुमार सिंह!
तिरुपति मंदिर में प्रसादम को गंभीर रूप से अपवित्र करने से आहत राष्ट्र सेवा फाउंडेशन के राष्ट्रीय अध्यक्ष स्वामी श्री सीताराम शरण जी महाराज ने कहा कि इस दुर्भाग्यजनक महापाप की उच्चस्तरीय न्यायिक जांच कर दोषियों को कठोरतम सजा होनी चाहिए। साथ ही भगवान के भक्तों को समाविष्ट कर ऐसी व्यवस्था की भी सुनिश्चित करनी चाहिए जिसमें इस तरह के षड्यंत्र की कोई संभावना न रह सके। उन्होंने कहा कि तिरुपति बालाजी मंदिर से मिलने वाले प्रसादम की पवित्रता के संबंध में आस्थावान हिंदुओं की अगाध श्रद्धा होती है। दुर्भाग्य से इस प्रसाद को निर्माण करने वाले घी में गाय व सूअर की चर्बी तथा मछली के तेल की मिलावट के अत्यंत दुखद और हृदय विधायक समाचार आ रहे हैं। क्योंकि यही लड़ु अयोध्या के राम मंदिर में रामलला की प्राण प्रतिष्ठा समारोह में भी बंटा था। इसमें आसुरी शक्तियों का प्रवेश हो गया, यह बहुत बड़ी अंतरराष्ट्रीय साजिश रची गई है। सनातन धर्म पर कुठाराघात हुआ है। भारत सरकार तत्काल इस मामले की जांच कर कठोर कार्यवाही करे। आज पूरे देश का हिंदू समाज अक्रोशित है, और हिंदुओं का क्रोध अलग-अलग रूप में प्रकट हो रहा है। कहा कि जिस तरह तिरुपति बालाजी के मंदिर में चर्बी युक्त लड्डू का मामला सामने आया है, इसको देखते हुए केंद्र सरकार द्वारा देश के सभी मुख्य मंदिरों की उच्च स्तरीय जांच होनी चाहिए। और जांच में दोषी पाए जाने वालों के ऊपर कठोर से कठोर सजा होनी चाहिए, यहां तक की फांसी की सजा तक मुकर्र की जानी चाहिए।ताकि हिंदुओं की आस्था के साथ खिलवाड़ करने वाले को इस तरह की षड्यंत्र करने से पहले सौ बार नहीं, हजार बार सोचना पड़े। वहीं राष्ट्र सेवा फाउंडेशन के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष सुनील कुमार सिंह ने कहा कि तिरुपति बालाजी के लड्डू जैसे बतौर प्रसाद में जानवरों की चर्बी मिलने वाली घटना हृदय विदारक है। यह देश के लगभग 120 करोड़ हिंदुओं की भावनाओं को आहत करने वाली घटना है। जिसकी उच्च स्तरीय जांच कर दोषियों को ऐसी कठोर सजा मिले की, ताकि देश की किसी भी मंदिरों में इस तरह की घटना घटित ना हो सके। क्योंकि इस घटना के बाद कुछ अन्य मुख्य मंदिरों के प्रसाद पर भी शंका उत्पन्न होने लगी है। दूसरी ओर सुनील कुमार सिंह ने कहा कि आज देश में जितने मुख्य मन्दिर हैं सरकार से मुक्त कर निजीकरण किए जाने की जरूरत है। कहा की तिरुपति बालाजी मंदिर का संचालन आंध्र प्रदेश सरकार द्वारा स्थापित बोर्ड करता है। वहां केवल प्रसाद निर्माण के मामले में ही हिंदू आस्थाओं के साथ खिलवाड़ नहीं किया गया, अपितु हिंदुओं के द्वारा अत्यंत श्रद्धा भाव से अर्पित की गई राशि आर्णि चढ़ावा के सरकारी अधिकारियों व नेता, मंत्रियों द्वारा दुरुपयोग के भी कष्टकारी समाचार मिलते रहते हैं। कई बार तो हिंदुओं के धर्म पर आघात कर हिंदुओं का धर्मांतरण करने वाली संस्थाओं को इस पवित्र राशि से अनुदान देने की समाचार तमिलनाडु, केरल, कर्नाटक जैसे अन्य राज्यों से भी मिलते रहे हैं। अर्थात राष्ट्र सेवा फाउंडेशन केंद्र सरकार से मांग करती है कि, यदि देश के मुख्य मंदिर सरकार के नियंत्रण में हैं, तो मजार, मस्जिद, गिरजाघर गुरुद्वारा भी सरकार के नियंत्रण में होनी चाहिए ? और यदि मजार, मस्जिद, गिरजाघर, गुरुद्वारा सरकार के नियंत्रण से मुक्त है तो, हमारे मठ मंदिर भी सरकारी नियंत्रण से मुक्त होनी चाहिए? क्योंकि जब तक मठ मंदिरों को समाजीकरण नहीं किया जाएगा, तब तक हमें इस तरह की खबरें हो सकता है दुर्भाग्य से मिलती रहे!?. अन्यथा राष्ट्र सेवा फाउंडेशन की इस मांग को जब तक केंद्र सरकार द्वारा पूरा नहीं की जाती है, तब तक संगठन इस आंदोलन की लड़ाई को जारी रखेगी !

एनपीएस और यूपीएस के खिलाफ पुरानी पेंशन के समर्थन में आक्रोश मार्च

जौनपुर। अटेवा जौनपुर के बैनर तले जनपद के सभी शिक्षक व कर्मचारियों ने बुधस्तिवार को एनपीएस और यूपीएस के खिलाफ पुरानी पेंशन के समर्थन में आक्रोश मार्च निकाला। सभी शिक्षक कर्मचारियों ने अम्बेडकर तिराहे से जोगियापुर, ओलंदगंज, जेसीज, रोडवेज, विकास भवन होते हुए डीएम कार्यालय पहुंच कर प्रधानमंत्री और मुख्यमंत्री को सम्बोधित जापन डीएम दिनेश चंद्र को दिया। प्राथमिक शिक्षक संघ के जिलाध्यक्ष अमित सिंह ने बताया कि पेंशन के नाम पर सरकार केवल यूपीएस का झुनझुना हाथ में पकड़ा रही है। सरकार को शिक्षकों और सरकारी कर्मचारियों से बातचीत करने के बाद ही कोई निर्णय लेना चाहिए। पुरानी पेंशन शिक्षकों और सरकारी कर्मचारियों की लंबे समय से मांग रही है। शिक्षक संघ के वरिष्ठ जिला उपाध्यक्ष सतीश सिंह ने कहा कि पुरानी पेंशन अवकाश के बाद जीवन का सहारा होती है। बुढ़ापे की लाठी होती है। अटेवा के जिलाध्यक्ष चंदन सिंह ने कहा कि पुरानी पेंशन की बहाली तक सभी आंदोलनरत हैं। हमें पुरानी पेंशन हर हाल में चाहिए। अटेवा के जिला प्रवक्ता विनय वर्मा ने कहा कि सरकार अपने सांसदों और विधायकों को पुरानी पेंशन का लाभ दे रही है और जबकि शिक्षकों और सरकारी कर्मचारियों के साथ सौतेला व्यवहार कर रही है। मौके पर नन्द किशोर सिंह अध्यक्ष विश्वविद्यालय कर्मचारी संघ, पूर्व माध्यमिक शिक्षक संघ के जिलाध्यक्ष डॉ अतुल प्रकाश यादव, महिला प्राथमिक शिक्षक संघ विजय लक्ष्मी यादव, श्री अनिल यादव जिलाध्यक्ष प्राथमिक शिक्षक संघ, उमानाथ यादव अध्यक्ष प्राथमिक शिक्षक महाराजगंज आदि उपस्थित रहे।

अपनी कलम अपनी आवाज़ मशहूर बनो तुम!

मशहूर बनो तुम ,
मुझे कोई चॉइस नही हैं।
मैं जीतकर भी ,
स्वयं से हार जाता हूं,
क्योंकि मुझे,
जीत की ख्वाहिश नही हैं।।

प्यार पाता हूं अपने से,
गैरों को भूल न पाता हूं।
गैरों से गले लगाता हूं,
उन्हीं का आशीष पाता हूं।।
उनको भी अपनाता हूं,
जो नाईस नही हैं।
मैं जीतकर भी,
अपनों से हार जाता हूं,
क्योंकि मुझे,
जीत की ख्वाहिश नही हैं।।

झूठे को पतवार हूं मैं,
साहित्य के कलमकार हूं मैं।
न वरिष्ठ हूं, न अशिष्ट हूं
न क्लिष्ट हूं,न रसिस्ट हूं।।

जुदि करता हूं
जीतने के लिए,
कोई गुंजाइश नहीं हैं।
मैं जीतकर भी,
स्वयं से हार जाता हूं,
क्योंकि मुझे ,
जीत की ख्वाहिश नहीं हैं।।



मुन्ना प्रसाद (मुरली)
शिक्षक सह कवि
रोहतास बिहार

एक तरफ कुआं और एक तरफ खाई है

आंखों में तुम्हारी खूबसूरती बसाई है
दिल मे तुम्हारी, यही तस्वीर बनाई है
निखरा है रंग हस्तीन तस्वीर का अभी,
आज इश्कमें इश्क ने लज्जत पाई है
इश्क में दर्दका मिलना तो लाजमी है,
क्योंकि दर्द अपना और प्रीत पराई है
सच्ची प्रीत मिलना नसीब की बात है,
आज इश्क के नाम पर इश्क हरजाई
इश्क में वफ़ा ये दुआओं से मिलती है,
बेवफा ने ये इश्क में बढुआ मिलाई है
सच्चा इश्क शमा परवाने का जान लो,
इनकी मोहब्बतमें तो गहरी गहराई है
इश्क इश्क नहीं रहा, हवस बन गया,
इश्क में एक तरफ कुआ और खाई है



सीताराम पवार
ग्राम पोस्ट तह वरला
जिला बड़वानी
मध्य प्रदेश
9630603339

जिन्दगी आखिर कट ही जायेगी

तुम अगर साथ दोगे तो उम्र गुजार जायेगी
तुम्हारे बिन जिन्दगी आखिर कट ही जायेगी 7

श्रृंगार और सावन दौनों का मेल दिखे अनुपम
तट बंध तोड़ देती सरिता उफान आ ही जायेगी 7

कड़के बिजली बहुत डराती आवाजें गर्जन की
मौसम ने लीअंगड़ाइ तेरीयाद आ ही जायेगी 7

मन का पंख पखेरू चाहे उड़ कर गगन को छूले
अमृत नभ से टपके पीकर गम कोभूल हीजायेगी 7

सावन के सांवरे चितवन की बात तो दिखती
सांवरेकीबंशी सुन जिन्दगीआखिर कट ही जायेगी 7

कान्हा की कृपा से धरती सोना उगले हरदम
मधुवन खिल जाता है उम्र प्यार से कट जायेगी 7

डॉ उषा अग्रवाल जलकिरण छतरपुर मध्यप्रदेश

अमीर की रोटी छोटी होती

बेईमानों के चेहरों पर, कभी मुस्कान नहीं होती7
इमानदार चेहरों पर कभी भी थकान नहीं होती7
सब कुछ खरीद सकती है दौलत इस दुनिया में,
शुकर है मुस्कुराहट किसी की गुलाम नहीं होती7
उड़ाके साथ अपने ले गई जो घर इन परियों का,
जिंदगी देने वाली हमें हर हवा तूफान नहीं होती7
हमारी श्रद्धा ही हमसे पत्थरों की पूजा कराती है,
वरना पत्थर की हर मूरत भी भगवान नहीं होती7
जिंदगी के हर मोड़ पे सुख दुख तो मिलते रहेंगे,
मगर हमसे सुख दुख की तो पहचान नहीं होती7
संतोष अगर है तो ये दुख हमको सुख लगता है,
संतोषी दिल की दुआएं भी, बेजुबान नहीं होती7
गरीब की रोटी बड़ी, अमीर की रोटी छोटी होती,
अंतर यही है रोटी अमीर का अरमान नहीं होती7



सीताराम पवार
ग्राम पोस्ट तह वरला
जिला बड़वानी
मध्य प्रदेश
9630603339

सस्ता है

देखो मस्ती मस्ता है ,
चौपट सारा रस्ता है।

महंगी है हर चीज यहाँ ,
मानव केवल सस्ता है।

दीवाने का हाल बुरा ,
उसकी हालत खस्ता है।

बच्चों के स्कूल खुल गए ,
उनका भारी बस्ता है।

मेरी है हर राह खुशी ,
तेरा दुख का रस्ता है।



स्वर्चित
महेंद्र कुमार वर्मा
भोपाल म.प्र.
मो 9893836328

सफलता की सीढ़ी

सफलता की सीढ़ी नीचे से शुरू होती है
शुरुआत में ये एकदम खड़ी होती है
गरीबों की ये कठिन परीक्षा लेती है
अमीरों को अक्सर आसानी में मिली होती है
ऐसा नहीं कि सफलता गुलाम है किसी की
ये सनकी की सनक में सवार होती है7

कई बार जीतने की तमाम कोशिश में
इसके पीछे दौड़ाया, चक्कर लगवाया
कई बार थकाया, मुझे भगाया, रुलाया
पर हम भी कहाँ कम थे, दीवाने थे इसका
हम डाल-डाल वो पात-पात
वो आगे-आगे हम भी उसके पीछे-पीछे7

खुब रुलाया खूब जगाया सपनों में भी
हर पल दिखती थी वो अपनों में भी
अब सफलता अब जीत लिया हूँ
लक्ष्य इसका भेद चुका हूं।
अब ये सीढ़ी मेरे साथ है
चढ़ना इसने बहुत आसान है
धैर्य से सीढ़ी चढ़ पाएँगे
तभी सफलता हम पाएँगे।



रचनाकार
रथाम कुमार कोलारे
छिन्दवाड़ा, मध्यप्रदेश
9893573770

भूख के किरदारों का यथार्थ चित्रण

धन कुबेरों को दौलत की भूख होती
भूख केवल पेट पिपासा की नहीं होती,
इसके भी कई किरदार ्होते।
दुनिया में सबसे बड़ी भूख,
रोटी की होती।
भूखी किसी व्यक्ति की नजरे भी होती।
राज नेताओं को कुर्सी की भूख होती।
भूखा व्यक्तिव भी होता,
भूखी इच्छा भी होती।
भूखी आत्मा भी होती,
कोई व्यक्ति देह का भी भूखा होता।
कोई प्यार का भी भूखा होता।
कोई अपनेपन का भूखा होता,
कोई सपने का भी भूखा होता।
ऊँचे महलों में रहने वालों को,
आंखों में नींद न होती।
कोई सब कुछ पाकर भी,
धन दौलत सम्मान का भूखा होता।
झुट कपट का व्यापार करने वालों की
नियत में खोट होती।
कोई खुले आसमां का भूखा होता,
भूख केवल पेट पिपासा की नहीं होती,
इसके भी कई किरदार होते।



(गोविन्द सूचिक अदनासा खिरकिया)
जिला -हरदा नर्मदापुरम संभाग
मध्यप्रदेश

तेरे खूबसूरत हाथों को चूम लूं कभी मैं भी।

कभी यूं भी बेवजह रुबरु हमसे हो जाया कर।
दीदार की तलब है करीब थोड़ा हो जाया कर।
मंजिलें इश्क मुझको तो अब मिलने से रही।
दिल पर मेरे दस्ते नाजुक ज़रा रख जाया कर।
आँखों में हर घड़ी तुझको सजा के रखता हूँ ।
धड़कनें मेरे दिल की तु भी सुन जाया कर।
तेरे खूबसूरत हाथों को चूम लूं कभी मैं भी।
अपने हाथों को नज़दीक भी मेरे लाया कर ।
इतनी बेकसारी भी अच्छी नहीं है मुश्ताक ।
दिल को भी अपने बैठकर समझाया कर ।



वॉ.मुश्ताक अहमद शाह सहज
हरदा मध्य प्रदेश

श्रृंगार गीत

डॉ.शिवदत्त शर्मा -शिव-+
मापनी 2122 2122 2122 212
(गीतिका छंद में)
चंद्रमा सी /देख छवि, न/क्षत्र शरमा/ने लगे।
शीलता शालीनता लखि, देव गण गाने लगे।।

स्वर्ण स्वप्निल सुंदरी सा, कोमलांगी तन वदन,
ज्वार भाटा उठ रहे है,
सैकड़ो शिव सिंधु मन।
सखि चपल चितवन तुम्हारी,प्रेम संदेशो? भरी,
मन के मंदिर में हमारे, दल भ्रमर गाने लगे।।
चंद्रमा सी देखि छवि.....!

मधु मिलन संदेश पाकर, तुमसे हे प्यारी सखी,
गति हृदय ऐसी बढी, तुमको पता क्या है सखी।
लगता है त्रिलोक का सुख पारंगूँ मैं है
सखी,
कान में ऐसे लगे, मुटु शंख बहु बजने लगे।।
चंद्रमा सी देखि छवि.....!

रात से नींद नदारद, दिन गवांता चैन है
देखनें को इक झलक, ब्याकुल हमारे नैन है।
हर पिपासा भूलता तन, कंठ भूले बोलना,
शब्द अक्षर ज्ञान भूले, मौन गुण गाने लगे।।
चंद्रमा सी छवि देखि.....!



जयपुर राजस्थान।

संजीव-जी।

आओ दें पैगाम शांति का।

जो जैसा बोयेगा बैसा ही तो पायेगा, हिंसा नफरत ईर्ष्या यदि विश्व में फैलाओगे शांति अमन चैन कहां से पाओगे।
रूस यूक्रेन युद्ध विस्तार वाद की परिणति लाखों लोगों ने देदी इस हिंसा में आहुति।
बेघर हुई मानव जाति बच्चे, बूढ़े ,स्त्रियां और मासूम यूक्रेन रूस युद्ध में कितने कितने हुए गुमसुम मुरझा गए आकाश कुसुम, अमेरिका ,यूरोप निर्दयी हो गए रूस-यूक्रेन ने युद्ध की आग में घी डालकर हवन कर गए।
पाकिस्तान आतंक को पालकर हिंसा को अपनी ढाल बनाकर अपने ही घर को जलाकर अब आंसू बहा रहा है, विदेशों से सहायता मांग कर अपना घर चला रहा है।
भारत ने बोया पौधा शांति का अब दुनिया को देशों को दे रहा है संदेश अमन चैन और शांति का।
अब भी संभल जाओ दुनिया वालों, आने वाली नस्ल के लिए एक नन्हा पौधा लगाओ पृथ्वी पर अमन चैन और बहाली का और पाओ फल वैश्विक खुशहाली का।
कुछ सीख लो भारतीय वैदिक सनातन संस्कृति से और पा जाओ कुछ ईश्वर से ऐसा प्रसाद जो तुम्हें देगा, एक पैगाम वृहद सद्गति और शांति का, फिर कहीं नहीं होगी हिंसा युद्ध और संताप।
नहीं करना पड़ेगा मानव जाति को युद्ध और हिंसा पर पश्चाताप और मृत्यु का भयानक संताप, फिर सब जिंएगे आत्मसम्मान और गौरव के साथ, अमन चैन होगा मासूमों के हाथ, अनंत शुभकामनाओं और खुशहाली के साथ।



संजीव ठाकुर, रायपुर छत्तीसगढ़, 9009 415 415,

गजल

हर तरफ यूँ उसकी ही नज़र से तो देखो छत पे फैली हुई ये उजली सहर को देखो।।

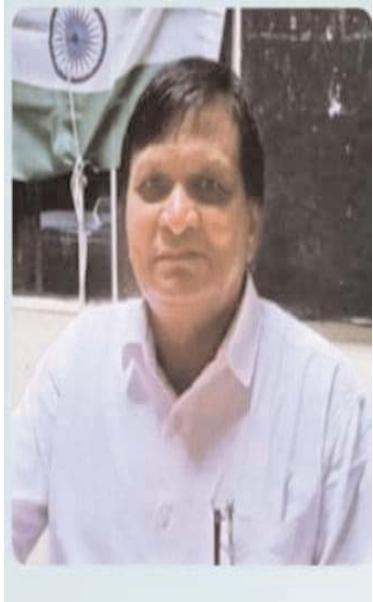
खुद को खुद की तुम आंखो से तो अच्छ देखो यूँ हकीकत यह कहते हर घर तो देखो।।

अब वफा देखो तो हर हाल बजा हो जाए उनके अनुसार ही कितना है असर देखो।।

रात के बाद ही सुन्दर पर अच्छ पाओ दिल से मेरे दिल में भी कसर तो देखो।।

उनकी तबियत से मुहब्बत का असर तो देखो आज बहती हैं जवा दिल कि बसर तो देखो।।

खुद के साथ में तुम भी अब यादों की भी कैसे माना हैं मेरे दिल पे असर तो देखो।।



कनक

सरका जाए आज दुपट्टा

अपने निश्चित स्थान से। और प्रदर्शन देह यष्टि का होता कितनी शान से।।

आंचल गिरता,घूंघट उठता चपल नैन चितचोरी में। एक निर्मंत्रण बंटता जाता संयम की कमजोरी में। अल्प वसन में फिसल रही है मर्यादा निज मान से।।

अंगों को आकर्षक ढंग से प्रस्तुत करना सुंदरता। और अंग से आमंत्रण दे घायल करना बर्बरता। कितने पायदान उतरी है इज्जत निज सम्मान से।।

दैहिक पतन चरम प्रतिगामी और चरित्र खिलौना है। आकर्षण के हुनर सिखे सब सुख साधना बिछौना है। मूल्य ह्रास,नारीत्व प्रश्न है छल होता इमान से।।

सतीश चन्द्र श्रीवास्तव रामपुर मथुरा जिला सीतापुर

जय मां शारदे

मंच को नमन शीर्षक-भगत सिंह विधा-कविता

बड़े गर्व की बात है, आज है यारों 28 सितंबर सबका प्यार, एक महान क्रांतिकारी का जन्मदिवस जो था सबसे प्यारा। 28 सितंबर 1907 को जन्मा बंगा गांव जो पाकिस्तान में है, सरदार किशन सिंह और मां विद्यावती का सबसे प्यारा।। बचपन से ही गिरना हो गई अंग्रेजी हुकूमत को ललकारा था 13 अप्रैल 1919 को जलियांवाला बाग,जिसने संघारा था। लाला लाजपत राय की मौत का बदला लेके तब सांस ली,भगत,राजगुरु,सुखदेव ने मिलकर सांडर्स को मारा था।। महान सेनानी एवं क्रांतिकारी का नमन वंदन करते हैं हम, भगत,राजगुरु,सुखदेव का फिर से अभिनंदन करते हैं हम। जन्म लिया बंगा भूमि लालपुर जो कितना प्यार होगा, जहां दबी हुई है तेरी अस्थियां उस माटी का चंदन करते हैं।। हिंदी,उर्दू,पंजाबी,अंग्रेजी,बांग्ला के ज्ञाता थे शहीद जी, जाति धर्म के कारण सुनते दुःखी हो जाते थे शहीद जी। जो कल्पना की थी तुमने वह अब तो साकार हो गया है, जो तुमको ख्याति थी मिलनी न मिला तुम्हें शहीद जी।। 23 वर्ष की अवस्था में जिसने फांसी फंदा चूस लिया हो, बम फेंक असेंबली में अंग्रेजों का माथा टनका दिया हो। डर गई अंग्रेजी हुकूमत ताकत देख 23 वर्ष के लड़के की, जिसने मिलकर अंग्रेजी सरकार के नाक में दम किया हो।।

स्वरचित रचना प्रभात सनातनी राज गोंडवी गोंडा उत्तर प्रदेश

प्यार कर या धिक्कार दे

साँस ले तू छिन के या मुझे तू मार दे कर हमेशा प्यार प्रिय, या मुझे धिक्कार दे मैं खो गया, सो हो गया आत्मा से जाग के, आ मुझे तू जान ले मगर बाहर, न कर इस भूख से स्वप्न के इस नींद से, हो गया, वो हार जीत ईश है, न हो भयभीत छोड़ो तुम वो कल की बातें जो बीते अकेली रातें वो थे वक्त, उधार के धूप भी श्रृंगार के, अब हो गई है, शाम नशीली बन गई दो नैन सहेली आ तू देख ऐसे, भीतर यों झाँक के मैं खो गया जो, तुझे यों देख के



मनोज कुमार गोण्डा उत्तर प्रदेश

*बुकटेल का भारत का सबसे बड़ा बुकफेयर लखनऊ में पूरे भारत में साहित्यिक प्रेमियों को एक साथ लाने और पढ़ने की संस्कृति को बढ़ावा देने के अपने मिशन को कर रहा है पूरा



दि ग्राम टुडे,लखनऊ। भारत का सबसे बड़ा बुकफेयर अब लखनऊ में यह अद्वितीय पुस्तक मेला 27 सितंबर से 6 अक्टूबर 2024 तक अवध शिल्पग्राम, सेक्टर 9, अमर शहीद पथ, अवध विहार योजना में आयोजित किया जा रहा है, और यह पुस्तकों, रचनात्मकता और पढ़ने के शौक का एक अविस्मरणीय उत्सव होने वाला है। एक अनोखा कॉन्सेप्ट- बॉक्स के लिए भुगतान करें, किताबों के लिए नहीं ! इस साल के बुकफेयर में, एक रोमांचक टिवस्ट के साथ बॉक्स के लिए भुगतान करें, किताबों के लिए नहीं कॉन्सेप्ट पेश किया जा रहा है। इस अनोखे फॉर्मेट में पुस्तक प्रेमी दो बॉक्स साइज में से एक चुन सकते हैं - मिनी बॉक्स (1500 रुपये) या बिग्गी बॉक्स (2500 रुपये)- और अपने बॉक्स में जितनी किताबें समा सकती हैं, उन्हें भर सकते हैं। विभिन्न प्रकार की किताबों से भरे इस मेले में हर तरह के पाठकों के लिए कुछ न कुछ है। यह नई किताबें खोजने और अपनी लाइब्रेरी को बढ़ाने का एक शानदार मौका है। क्या उम्मीद कर सकते हैं-

किसान यूनियन (टिकैत) द्वारा 15 सूत्रीय ज्ञापन जिलाधिकारी के नाम एसडीएम डॉ अवनीश कुमार को दिया



दि ग्राम टुडे तहसील प्रभारी मोहम्मदी खीरी। थाना पुलिस चौकी रेहरिया क्षेत्र के अंतर्गत ग्राम पंचायत मुंडा गालिब के मजरा रायपुर में किसान यूनियन (टिकैत) द्वारा समीक्षा बैठक किसान मजदूर पंचायत की गई जिसके मुख्य अतिथि युवा राष्ट्रीय अध्यक्ष चौधरी गौरव टिकैत ने पंचायत को सम्बोधित करते हुए कहा कि किसानों को धान की फसल का उचित दाम दिया जाए और पराली की उचित व्यवस्था की जाए किसान यूनियन द्वारा 15 सूत्रीय जापन जिला



रजिस्ट्रार प्रोफेसर राजीव मेहता, एमएससी, भौतिकी के छात्र एवं छात्राएं और फैकल्टी सदस्य उपस्थित रहे। भौतिक विभाग के असिस्टेंट प्रोफेसर डॉ अभिषेक सक्सेना द्वारा बताया गया कि इस अत्याधुनिक मशीन की स्थापना से वायु गुणवत्ता की सटीक निगरानी की जा सकेगी, जो न केवल शैक्षिक शोध के लिए बल्कि स्थानीय पर्यावरण स्वास्थ्य

मिनी बॉक्स 1500 रुपये, बिग्गी बॉक्स 2500 रुपये

भारत का सबसे बड़ा बुकफेयर सिर्फ एक पुस्तक बिक्री नहीं है, बल्कि यह पढ़ने, सीखने और रचनात्मकता का उत्सव है। यह एक ऐसा मंच है जहां पाठक एक-दूसरे से मिल सकते हैं, नई शैलियों को खोज सकते हैं और साहित्य और प्रकाशन की दुनिया के बारे में नई जानकारीयां प्राप्त कर सकते हैं। चाहे आप पहली बार किताबों में डूबने वाले बच्चे हों या फिर अनुभवी पाठक, यहां सभी के लिए कुछ न कुछ खास है।

बुकटेल का द स्टोरी बॉक्स बुकफेयर एक बार फिर से पूरे भारत में साहित्यिक प्रेमियों को एक साथ लाने और पढ़ने की संस्कृति को बढ़ावा देने के अपने मिशन को पूरा कर रहा है। हम लखनऊ के सभी निवासियों को इस अद्भुत मेले का हिस्सा बनने के लिए आमंत्रित करते हैं।

बुकटेल के बारे में बुकटेल पुस्तकों और कहानियों की दुनिया में एक अग्रणी नाम है, जो पाठकों और लेखकों के लिए उत्कृष्ट अनुभव बनाने के लिए प्रतिबद्ध है। देश भर में बुकफेयर आयोजित करने से लेकर एक समृद्ध रीडर्स कम्युनिटी बनाने तक, बुकटेल सभी के लिए किताबों को सुलभ और आनंददायक बनाने के लिए काम कर रहा है।

इसे मिस न करें! 27 सितंबर से 6 अक्टूबर तक अपने कैलेंडर में तारीखें सुरक्षित कर लें, और अवध शिल्पग्राम में इस अविस्मरणीय साहित्यिक अनुभव का आनंद लें। चाहे आप अपनी व्यक्तिगत लाइब्रेरी को बढ़ाने के इच्छुक हों, अपने पसंदीदा लेखकों से मिलना चाहते हों, या बस किताबों की दुनिया में एक दिन बिताना चाहते हों, भारत का सबसे बड़ा बुकफेयर में यह सब आपके लिए मौजूद है।

सनमन मंच को

सविषय- तुझको निखरते देखा है, सदिनांक- 27/09/2024 सदिन- शुक्रवार,

!! तुझको निखरते देखा !!

मोह लिया तूने मुझको ऐसे. कुछ और ना दिखाई दे .!

तेरे प्रेम के रस में ऐसे डूबे हर तरफ तुझहीझूतु दिखाई दे..

चांदनी को भी, जमीं पे बिखरते देखा,

जब से आइने में, तुझको संवरते देखा।

उस वक्त कायनात भी, ठहर सी गई,

जब गलियों से तुझको, गुजरते देखा।

छा गया मौसम में एक, अजब सुरूर,

फूलों का जब रंग, और निखरते देखा।।



पंकज एस पाण्डेय, शिकोहाबाद,

29 सितंबर को बलदेव मंदुरी में होगा किसान संवाद

दी ग्राम टुडे पेश आजमगढ़ किसान एकता समिति द्वारा किसान जन संवाद सम्मेलन का आयोजन बलदेव मंदुरी में 29 सितंबर 2024 रविवार को होगा। किसान एकता समिति के अध्यक्ष विनोद कुमार यादव ने कहा कि किसानों-श्रमिकों की समस्याएं जैसे नहरो में पानी न आना, खाद-बीज सहकारी समितियों पर समय से न उपलब्ध होना, ग्राम पंचायत कार्यालय में संबंधित कर्मचारी अधिकारी की समय सारणी का उपलब्ध न होना, श्रमिकों को मनरेगा के तहत काम न मिलना, उपजाऊ जमीन को भूमि अधिग्रहण से बचाना, गांव, खेत-खलिहान, बाग-बगीचा, मकान उड़ड़ने से बचाना, कृषि से संबंधित रोजगार पशुपालन, मत्स्य पालन, मुगी पालन, अच्छी फसल का उत्पादन कैसे किया जाए कि किसानों की आय बढे मुद्दों पर चर्चा होगी। किसान-श्रमिक नीतियों, किसान श्रमिक संगठनों की स्थिति और भूमिका, भारत के विकास में कृषि का योगदान विषय पर विमर्श होगा।

गजल

कब से तड़प रहा हूँ तुझे याद करते करते, निकलेगी जां हमारी ए फरियाद करते-करते।

कभी सामने तो आकर कुछ बात कीजिए, हद हो गई है अब तो मुलाकात कीजिए।

क्या ओभी भूला दिए हो जो पृछते थे हम, आते थे तुम मनाने जब रुठते थे हम।

कहते थे मैं हूँ तन्हां मेरा साथ दीजिए, हद हो गई है अब तो मुलाकात कीजिए।

जिस दिन हम लेट सोए आते थे तुम जगाने, गांव की कोई घटना बाभी से तुम बताते।

उन मंजोरें अब तो कुछ याद कीजिए, हद हो गई है अब तो मुलाकात कीजिए।

कैसे कहूं कि ए दिल तुम बिन तड़प रहा है, बीपी हुई है हाई कलेजा धड़क रहा है,

न हो रोशन पे गर यर्की तो आके नाप लीजिए,



हद हो गई है अब तो मुलाकात कीजिए।

,शहीद-ए-आजम भगत सिंह की 117वीं जयंती पर क्रांतिकारियों में कानपुर की भूमिका भगत सिंह का योगदान पर संगोष्ठी सफलतापूर्वक हुई सम्पन्न



दि ग्राम टुडे, कानपुर। शहीद-ए-आजम भगत सिंहजी की 117वीं जयन्ती के शुभ अवसर पर भारत सेवक समाज, कानपुर मंडल के तत्वाधान में *क्रांतिकारियों में कानपुर की भूमिका व भगत सिंह का योगदान- विषयक संगोष्ठी कृष्णा प्रांगण, गांधी पार्क के सामने, कानपुर में सम्पन्न हुई। सर्वप्रथम मुख्य अतिथि, अध्यक्ष एवं अतिथियों द्वारा सरदार भगत सिंह जी के चित्र पर माल्यार्पण करते हुये सभी लोगों द्वारा पुष्पांजली की गयी। महामंत्री एवं स्वागतार्थ्यक्ष द्वारा सरदार भगत सिंह जयन्ती समारोह में पधारे सभी गणमान्य प्रबुद्ध जनों का स्वागत किया। इस अवसर पर उत्कृष्ट सामाजिक कार्यो हेतु क्षेत्रीय पार्षद अन्य गणमान्य नागरिकों को मेंडल पहनाकर सम्मानित भी किया गया।

अतिथि व अन्य वक्ताओं ने बताया कि देश की आजादी में भगतसिंह सहित अनेक क्रांतिकारियों का भी महत्वपूर्ण योगदान रहा है, जिसका हमें सदैव सम्मान करना चाहिये। शहीद ए आजम भगत सिंह का जन्म आर्य समाजी सिख परिवार में 28 सितम्बर 1907 को तहसील जरावाला, पंजाब प्रांत में एवं मृत्यु 23 मार्च 1931 को लाहौर, पंजाब प्रांत में हुई थी। उनके पिता का नाम सरदार किशन सिंह और माता का नाम विद्यावती कौर था। सिखधर्म के स्थान पर राष्ट्रधर्म के कारण उन्होंने अपने केश व दाढ़ी को काटने में भी गुरेज नहीं किया। वे भारत के एक प्रमुख स्वतंत्रता सेनानी क्रांतिकारी थे। सरदार भगत सिंह ने 40 चन्द्रशेखर आजाद व पार्टी के अन्य सदस्यों के साथ मिलकर इन्होंने देश की आजादी के लिए अभूतपूर्व साहस के साथ

शक्तिशाली ब्रिटिश सरकार का मुकाबला किया था। उन्होंने लाला लाजपत राय की लाठीचार्ज के कारण हुई मृत्यु का बदला लेने हेतु पहले लाहौर में सावडर्स की हत्या में भाग लिया और उसके बाद दिल्ली की केन्द्रीय संसद (सेण्ट्रल असेम्बली) में बम-विस्फोट करके ब्रिटिश साम्राज्य के विरुद्ध खुले विद्रोह की आवाज बुलन्द की। इन्होंने असेम्बली में बम फेंकने के बाद भागने से भी मना कर दिया। इन्हें 23मार्च, 1931 को इनके दो अन्य साथियों, राजगुरु तथा सुखदेव के साथ अंग्रेज सरकार ने सारे नियम कानूनों को ताक पर रखते हुए सायं 7 बजे फाँसी दे दी। कानपुर में गणेश शंकर विद्यार्थी के संरक्षण में प्रताप प्रेस में छद्म नाम बलवंत सिंह के रूप में लेखन कार्य भी किया, जिन्हें पुलिस का कभी पकड़ नहीं पायी। भगत सिंह

किसानों को खाद-बीज नहीं उपलब्ध करा पा रही भाजपा सरकार



दि ग्राम टुडे कन्नौज । पत्रकारों से बात करते हुए आरिफ जमा विशेष आमंत्रित सदस्य ने भाजपा सरकार पर किसानों की उपेक्षा करने का आरोप लगाया है। उन्होंने कहा कि सरकार किसानों को खाद-बीज और अन्य सुविधाएं उपलब्ध नहीं करा पा रही है। किसानों को डीएपी एनपीके और अन्य उर्वरकों की आवश्यकता है लेकिन उन्हें ये नहीं मिल रहे हैं। सहकारी समितियों पर उर्वरक नहीं है और डीएपी के लिए दिनभर लंबी लाइन लगने के बावजूद किसानों को खाद नहीं मिल रही है। युवा सपा नेता इमरोज अहमद ने कहा भाजपा ने किसानों से आय दोगुणी करने से लेकर अन्य कई बड़े-बड़े वादे किये थे, लेकिन कोई भी वादा पूरा नहीं किया। भाजपा सरकार में अन्रदाता चौतरफा संकटों से घिरा हुआ है। तराई जिलों में किसान बाढ़ से पीड़ित हैं। किसानों को आलू, गेहूं और अन्य फसलों की बुआई के लिए डीएपी, एनपीके और अन्य उर्वरकों की आवश्यकता है, लेकिन कन्नौज, मैनपुरी,सहित अन्य जिलों के किसान डीएपी खाद और उर्वरकों के लिए भटक रहे हैं। सहकारी समितियों पर उर्वरक नहीं है। डीएपी के लिए दिनभर लंबी लाइन लगने के बावजूद किसानों को खाद नहीं मिल रही है। मौके योगेश शर्मा , कुलदीप यादव , आसिफ मुन्ना , रफ़ूद्दीन , गुलशад आदि लोग मौजूद रहे।

गाँव मे फैली गंदगी और सड़कों पर वह रहा गंदा पानी

दि ग्राम टुडे कन्नौज कस्वा जलालाबाद में गंदगी का अंबार लगा हुआ है। चोक नालियों से बहने वाला गंदा पानी लोगों के सामने एक बड़ी समस्या बन गयी है। कही नाला जाम है तो कही छोटी छोटी नालियाँ जिससे निकलने वाले राहगीरों को काफी समस्या का सामना करना पड़ रहा है ।सड़को पर बहने वाले गंदे पानी से भी लोग परेशान है। बहुत सी ऐसी जगह है जहाँ पर जमा कूड़ा लोगो को बदबू में रहने के लिए विवश कर रहा है ।ग्रामीण अपनी फरियाद ग्राम प्रधान से कहने के बावजूद उनकी बात को नकार दिया जाता है और अधिकारी चुप चाप सुनकर मामले को टाल देते है ।कस्वा में मोहल्ल सराय में इतना कूड़ा जमा है कि लोग अब बीमार पड़ने लगे है। और ग्रामीण ऋषभ ,शिवम ,आशीष ,आलम ,हिमांशु ने बताया कि वह कई बार शिकायत कर चुके है और उन्हें इस समस्या से निजात नहीं मिल पा रही है। वही दूसरी ओर सदर बाजार निवासी अमन तिवारी ,कन्हैया तिवारी ने बताया कि सदर बाजार में लगने वाला कूड़ा दो तीन महीने के एक बार साफ किया जाता है। जिससे बड़ी दुर्गंध आती है । आस पास के लोगो का जीना दुश्कार है ।स्टेट बैंक शाखा के एटीएम के ठीक सामने पूरा नाला जाम है जिससे पानी रोड पर बहता है वहाँ पर आने वाले लोग उसी गंदे पानी से होकर गुजरते है। इस संबंध मे वीडिओ सोनिया श्रीवास्तव ने बताया कि सफाई को लेकर रोस्टर तैयार कर दिया गया है और एक अक्टूबर से 31 अक्टूबर तक सफाई अभियान चलाया जाएगा । जिसमे गाँव की सफाई काई जाएगी ।ग्राम प्रधानो को निर्देश दिए गए है कि वह प्रथम खाते से सफाई करा सकते है जिसे गाँव की सफाई कराने की जिम्मेदारी ग्राम प्रधान की है और वह अब सफाई ब्यवस्था को लेकर कार्य करेंगे ।

थाने में शिकायत लेकर पहुंचे फरियादी डीएम एसपी ने सुनी शिकायतें



दि ग्राम टुडे कन्नौज। थाना समाधान दिवस में कल 11 शिकायतकर्ता शिकायत लेकर पहुंचे। जिसमें 2 का मौके पर हुआ निस्तारण। थाना दिवस में पुलिस अधीक्षक अमित कुमार आनंद और जिलाधिकारी रहे मौजूद । इंदरगढ़ थाना परिसर में शनिवार को थाना समाधान दिवस का आयोजन किया गया । जिसमें कन्नौज पुलिस अधीक्षक अमित कुमार आनंद और जिलाधिकारी सुभांत कुमार शुक्ला ने पहुंचकर थाना दिवस में पहुंचे फरियादियों की समस्याएं सुनी। इस मौके पर 11 फरियादी अपनी-अपनी समस्याएं लेकर पहुंचे । इंदरगढ़ थाना अध्यक्ष पारूल चौधरी ने बताया की दो समस्याओं का मौके पर निस्तारण कर दिया गया जो कि राजस्व विभाग से संबंधित थी। शेष समस्याओं को संबंधित अधिकारियों को देकर जल्द से जल्द निश्चित करने को कहा गया। जिससे कि क्षेत्र में शांति व्यवस्था बनी रहे।

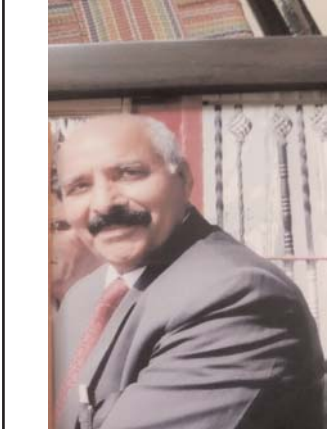
स्वास्थ्य कर्मी ने विद्यार्थियों के साथ निकली स्वच्छता रैली



दि ग्राम टुडे नितिन शर्मा कन्नौज। कन्नौज जिले में स्वास्थ्य टीम ने स्वच्छता पखवाड़ा के तहत स्वच्छता सप्ताह के रूप में विद्यार्थियों के साथ स्वच्छता रैली निकाली। स्वस्थ रखने की एक दवा स्वच्छता अपनाना। जलालाबाद ब्लाक के अंतर्गत ग्राम जेवा में स्वास्थ्य कर्मी एनम मधु के नेतृत्व में प्राथमिक विद्यालय के बच्चों के साथ स्वच्छता सप्ताह के तहत रैली निकाल कर लोगों को जागरूक किया। स्वास्थ्य संबंधी अधिकारी दी। स्वस्थ रहने के लिए स्वच्छता अति आवश्यक है। स्वास्थ्य कर्मी ने अपने उपकेंद्र पर स्वच्छता मित्रो का स्वास्थ्य परीक्षण किया जिसमे बीपी ,शुगर ,हिमोलाबिन आदि की जांच की गई। स्वास्थ्य संबंधी जानकारीयें देकर लोगों को जागरूक किया।

सरदार भगत सिंह की जन्म जयंती पर विशेष

भगत सिंह सरदार था, भारत मां का लाल, जिसने ऊंचा कर दिया, हिंद देश का भाल। हिंद देश का भाल, काल सांडर्स का आया, फांसी पर मेरा रंग दे बसंती चोला गया। गांधी जी की प्रेम,अहिंसा काम न आई, भगत सिंह ने आजादी की राह दिखाई। भारत माता अपनों से ही, आज रही है हार, इनसे भी आजाद करा जा, भारत को, सरदार।



बाल किशन सारस्वत।

बेटी है अनमोल

हौसले की नींव है बेटीयां जज्बे की मिसाल हैं बेटीयां खुद पर इन्हें विश्वास है बेटी होने पर नाज है

छू लेने दो इनको आसमान जो बनती है अपनी पहचान करो हमेशा इनका सम्मान जो बढ़ती है देश का मान

लेकर कमान अपने हाथ जो करती लक्ष्य को प्राप्त सपने और विश्वास से भरा मूलमंत्र है इनके पास



लेखिका सीमा राव
साहयक अध्यापिका आजमगढ़

विश्व रेबीज दिवस पर कार्यक्रम का आयोजन

दि ग्राम टुडे कन्नौज। विश्व रेबीज दिवस के अवसर पर उप पशु चिकित्सालय तिर्वा में मुख्य पशु चिकित्साधिकारी कन्नौज कारण वीर सिंह की अध्यक्षता में एक कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस अवसर पर मुख्य पशु चिकित्साधिकारी द्वारा सभी पैरावेटों एवं पशुपालन विभाग के कर्मचारियों को रेबीज के लक्षणों , बचाव के उपायों तथा टीकाकरण संबंधी बातों एवं सावधानियों से अवगत कराया गया। एवं पूरे जनपद में इनका प्रचार प्रसार करने हेतु निर्देशित किया गया। इस अवसर पर उप मुख्य पशु चिकित्साधिकारी , तिर्वा एवं उप मुख्य पशुचिकित्साधिकारी कन्नौज भी उपस्थित रहे।

लगनशीलता का परिणाम है आईएसओ प्रमाण पत्र निरंजन त्रिवेदी



दि ग्राम टुडे कन्नौज। सौरिख ब्लॉक को प्रदेश भर में पहला आई एस ओ प्रमाणित होने पर ब्लॉक कर्मचारियों एवम जनप्रतिनिधियों ने खंड विकास अधिकारी निरंजन त्रिवेदी का फूल मालाओं से स्वागत किया। प्रधान संघ के जिलाध्यक्ष ओम प्रताप चौहान ने कहा कि आईएसआई प्रमाणपत्र अंतर्राष्ट्रीय गुणवत्ता एवं प्रबंधन का मानक है । सौरिख ब्लॉक को यह प्रमाण पत्र मिलना गौरव का की बात है । ब्लाक अध्यक्ष संजय सिंह बैस ने कहा कि इस उपलब्धि में खंड विकास अधिकारी एवम ब्लाक के सभी कर्मचारियों की अथक मेहनत रही है। प्रधान अवनीश कुमार सिंह बैस ने कहा खंड विकास अधिकारी त्रिवेदी का कुशल प्रबंधन है। आईएसओ प्राणपत्र खंड विकास अधिकारी ने स्वागत से अविभूत होकर कहा कि इस उपलब्धि हम सबकी लगनशीलता का परिणाम है। इस अवसर पर अतुल मिश्रा , गोपाल सिंह बैस , विक्रम सिंह , मुनीश बाबू , पंकज कुमार , राजू यादव , अवनीश कुमार आदि उपस्थित रहे।

खुद पर ध्यान

दूसरों पर ध्यान देने से अच्छा है। थोड़ा खुद पर ध्यान दिया जाए। या कुछ बन जाओगे, या कुछ सीख जाओगे।

खुद पर ध्यान देगे तो निखर ही जायेंगे यूहीं नहीं कहें खो जायेंगे।

खुद पर ध्यान देना याद रखना लोग आएंगे लोग जाएंगे।

कुछ साथ देंगे कुछ साथ छोड़ देंगे, तुम मत घबराना तुम खुद पर ध्यान देना।

अपना साथ कभी नहीं छोड़ना कभी खुद को मत खोना तुम्हें कभी कोई तुमसा ना मिलेगा ये बात याद रखना



कीर्ति की कलम ???

भ्रूण

मैं, भ्रूण हूँ, कन्या भ्रूण, चकित न होवें, संशय न पालें, कि, हत्या होगी मेरी, सांसें टूटेगी मेरी। संचित हूँ मैं, वंचित नहीं, स्वीकार्य हूँ मैं, शापित नहीं। अजन्मा हूँ मैं, अतृप्त नहीं, कुचित मानसिकता में लिस नहीं। साझा करती हूँ व्यथा मेरी, गौरवान्वित है आत्मकथा मेरी। निरक्षर हैं अम्मा मेरी, बाबा भी कुशाग्र नहीं। संपन्नता ने दहलीज न लांघी, निर्धनता से खुशियां न आंकी। अंगने में बरतन मांज रहीं थीं अम्मा, दतुअन की करची छील रहे थे बाबा। भान हुआ अम्मा को कुछ, बाबा से बोला दलान पहुंच। %उम्मीद से हूँ%। बाबा ने बोला इट् घूंघट डाल, जांच कराये बच्चे का हाल। जा पहुंचे वे निकट हस्पताल, पर, भारी थी अब अम्मा की चाल। भांप गई बाबा का ख्याल, कि, %कैसा होगा मेरा लाल।% डाक्टरनी बोली लाली है चंगी, कैसे ब्याहोग, जब पैसे की तंगी। हूक उठी अम्मा के दिल में, नहीं बन्गूनी कातिल मैं। रोका जो शमशीर उठा लूंगी, सोच लिया दिल ही दिल मे। वो कहते हैं, %स्त्री जीवन बस त्याग का नाम, परहित जिया उग्र तमाम। फिर क्यों उसको धिक्कार दो, उसे जीने का अधिकार दो।% ना-ना ! तू क्यों मांगे अधिकार की भीख, जो तेरा है, उसे जीना सीख। फैसला निष्पक्ष होगा अभी यहीं, मैं आजाद हवाओं की, कैद पंछी नहीं। ख्याल टूटा बाबा की खनक से, पर, आवाज एक न निकली हलक से। दब गई थी जो तथाकथित संस्कार से, परंपरा, रिवाज, और लिहाज की मार से। शायद बरसेगा अब कहर उनका, पर भींचक थी सुन उत्तर उनका। %गोरी, घूंघटा खोल दे, सब जकड़न-बंधन तोड़ दे। अद्धांगिनी ! तू आराध्या है, सशक्त-सबल इक कन्या है। दूषित ज़माना बीता-रीता, घर आएगी कलयुग की सीता। मिशाल बनेगी दुलारी मेरी, कल्पना,सिंधु या फिर मेरी। %निरक्षर हूँ निर्मम नहीं, बेटीयां बेटीों से कम नहीं।%



लेखिका स्वस्तिक रंजन

मां शारदे को नमन शहीदो को नमन

मुक्तक शहीदों के पराक्रम की, धरा पर लाज रही होगी। कण कण में राष्ट्र प्रेम की, एक भावना जगी होगी। देश पर मर मिटने वालों शहीदो, है नमन तुमको। देश के वीर शहीदों की,इतिहास की लाइन लिखी होगी। कविता। जय श्री राम लोक कल्याण में, पूरे इस जहान में राम जी के देखो आज, गीत हम मंगाएंगे। सत्य न्याय धर्म से, अपने-अपने कर्म से, देखो इस कलयुग में वे ही स्वर्ग जाएंगे। माया मोह त्याग कर,मिलकर के हम सब, धरती पर देखो राम राज्य लायेगे। धरती पर देखो राम राज्य लायेगे।

डॉ0 रामनिवास तिवारी आशुकवि, निवाडी मध्यप्रदेश

विश्व हृदय दिवस विशेष कोरोना के बाद से बढ़ रहे हार्ट अटैक के मरीज

- डॉ. संजय खण्डेलवाल

जयपुर।कोरोना के बाद अचानक हार्ट अटैक के मामले तेजी से बढ़े हैं। खासतौर से युवाओं में बहुत कम उम्र में ही हार्ट अटैक के कई केस सामने आ चुके हैं। सैलिब्रिटी से लेकर आम लोग हार्ट अटैक के शिकार हो रहे हैं। इसकी बड़ी वजह हमारी लाइफस्टाइल को बताया जाता रहा है। टेंशन,मोटापा, हाई ब्लड प्रेशर और गलत खान-पान की वजह से हार्ट अटैक के मामले बढ़ रहे हैं । कोविड-19 ने लोगों की लोगों की लाइफस्टाइल पर गहरा असर डाला है। लोगों की फिजिकल एक्टिविटीज कम हुई हैं। इससे लोगों का कोलेस्ट्रॉल लेवल बढ़ गया है। हार्ट अटैक के शिकार हुए लोगों में प्री-डायबिटीज, प्री- हायपरटेंशन, मोटापा जैसे कारण भी जिम्मेदार हैं। कई मामलों में बिना पर्याप्त वार्म अप के हाई एक्सरसाइज के कारण हार्ट अटैक आ रहे हैं। अगर आप दिल के मरीज हैं तो गर्म कपड़े पहने , सर्दियों में खुद को सेहतमंद रखने के लिए स्वस्थ आहार का सेवन करें। इसके लिए अपनी डाइट में विभिन्न प्रकार के फल और सब्जियां, साबुत अनाज, कम वसा वाले डेयरी प्रोडक्ट, बिना स्किन के पोल्ट्री और मछली, नट्स आदि को शामिल कर सकते हैं।



(गांव का घर)

शर्मा जी अपने परिवार के साथ इक्कीस वर्ष बाद शहर से गांव जा रहे थे । मन में तरह तरह के ख्याल उभर रहे थे ?। क्या क्या बदल गया होगा गांव में विद्यालय का वो बड़ा वाला पीपल का पेड़ अब भी तो होगा हीं , श्यामलाल के द्वार का आँ शायद भर गया होगा और भी बहुत कुछ । इक्कीस वर्ष पहले की चीजें शर्मा जी के मन में उभर रही थीं । अब अपने स्टेशन पर गाड़ी पहुंचने वाली थी मिट्टी की सोंधी - सोंधी खूशब महकने लगी थी । मन हीं मन इतना दिन से गांव नहीं आने का पश्चाताप भी हो रहा था कि गांव का घर गिर गया होगा , झाड़ियां उग आई होंगी , वहां झाड़ियों में मेरे शहर में पले बच्चे कैसे रहेगे ? काश मैं पहले भी आता जाता तो ऐसा स्थिति नहीं होता ।

आखिरकार स्टेशन भी आ गया गांव का छोटा सा रेलवे स्टेशन जहां कुछ भीड़ तो थी पर शहर जैसे कस्मकस वाली नहीं । सभी लोग गाड़ी से उतर गए शर्मा जी ने उतरते हीं जैसे अपनी मां से मिल गए हों वैसे हीं आंखों में झरझराते अश्रुओं के साथ धरती माता को प्रणाम किया और बच्चे देख न लें इसलिए फटाफट रुमाल से आंख पोंछ सामान हाथों में लिए टैपू में बैठ गए । कुछ हीं देर में शर्मा जी अपने गांव के निकट पहुंच गए और एक दम से निहारने लगे अपने स्वर्ग से सुंदर गांव को जहां उन्होंने अपने अनमोल तीस वर्ष गुजारे थे । परन्तु अब अपना गांव पहचान में नहीं आ रहा था सब कुछ बदला बदला सा लग रहा था जो उनके मन-मस्तिष्क में छवियां बसी थी वैंसा कुछ भी नहीं दिख रहा था । सब बगीचे कट गए थे ऊंचे-ऊंचे नए और पक्के मकान बन गए थे अच्छे-अच्छे दुकान भी खुल गए थे । हालांकि बच्चों को इसका कोई असर नहीं था क्योंकि वो पहली बार गांव आ रहे थे ।तबतक शर्मा जी बोले रुको रुको भैया यहीं किनारे कर लो गाड़ी वाले ने आगे बढ़ाकर गाड़ी रोक दी । शर्मा जी ने कहा भैया यहां नहीं थोड़ा और पीछे चलो नहीं तो यहां से सामान खोना पड़ेगा । टेम्पु वाला हंसा और कहा कि ठीक है पर वहां तो बस . ! कहते हुए पीछे कर लिया । शर्मा जी पत्नी बच्चों सहित उतर गए और गाड़ी वाले को पैसे देकर विदा किए । अब रास्ते पर सब खामोश हो कर खड़े थे बच्चों ने पूछा पापा अब किधर जाना है अपना घर कहाँ है ? इस जंगल के पास क्यूं उतर गए ?

मानों शर्मा जी के मुंह में कोई जबाब हीं नहीं था , डबडबाई आंखों और अवरुद्ध गले से शर्मा जी ने कहा बेटा यही जंगल तो हमारा घर है ।



ऋषि तिवारी

चक्ररीधाम , बिहार ।

वो कत्ल करता रहा मेरा,मैं मुस्कुराता रहा

जाने कितना लहू बहा मेरा,मैं मुस्कुराता रहा ऊपरवाले के नाम पर अलग कर दिया उसने खो गया पता यहां वहां मेरा,मैं मुस्कुराता रहा अब फिर से चुनाव आ गए हैं,वो झूठ आ गया वो खुश है मजाक बना मेरा,मैं मुस्कुराता रहा चाहा बहुत उसे,दिन रात की खबर नहीं थी इश्क आखिर को मरा मेरा,मैं मुस्कुराता रहा रोजगार नहीं है,क्या करूं,मैं नौजवां इस मुल्क का वोटों के नाम रहा मुद्दा मेरा,मैं मुस्कुराता रहा विद्यालय में पढ़ाई जा रही,धर्म की राजनीति हर बार राजनीतिकरण हुआ मेरा, मैं मुस्कुराता रहा अंधेर नगरी चौपट राजा,मुना था हमने कभी इससे था मन,मनमना मेरा, मैं मुस्कुराता रहा नीला,हरा,लाल,पीला,जाने कौन सा रंग है उसका उसने कोई एक रंग कहा मेरा,मैं मुस्कुराता रहा विज्ञान के मुताबिक,छः बार प्रलय आई है यहां मेरा तर्क बस रहा ज़रा मेरा,मैं मुस्कुराता रहा

डॉं विनोद कुमार शकुचंद्र

उद्गार

चोर हैं दोनों कैसे फिर,
बोलें =हम ही चोर +

वक्तव्यों की इसलिए, झूड़ी महज घनघोर घन कजरांरे जा कहां,
मेरे दिल की बात

=बिन तेरे न दिन कटे,
न ही कटती रात छविगृह के पट की तरह,
वो क्षण आए जाय बीते समय में लौटने,
अरु मन को उकसाय दम होगा मेरे प्रीत में,
आओगी मेरे पास कर टुक जंजीरें सभी,
भर मन में उल्लस जान सको तो जान लो,
ओ !मेरी जान ए जान आँखें खेरी करती हैं ,
मेरी दशा का बखान मसलों का बोझा लदा,लगता न कोई हल तब भी कोशिश वो करें,
गुन होऊंगा सफल जिस दिन स्व को भूल के,
रत होंगे तुम हम विश्व गुरु बन के पुनः,
देश होगा तम जिनके कारण चैन से,
लेते हम तुम स्वॉस झूल गए वो फांसी पे,
ले मुख में मृदु हास



कवि प्रभात

कोरबा नगर (छ. ग.)

सूरज को दीपक क्या दिखाना

सुना था अच्छे व श्रेष्ठ रचनाकार, कवि चलते चलते जो देख लेते हैं, उस पर तुरन्त कविता लिख देते हैं, वही तो अब हम सभी देख रहे हैं।

आपकी प्रतिक्रिया को ही केवल नमन नहीं मैं करता हूँ, आपकी बृहमलीनता की भी अंतर्मन से मैं कद्र करता हूँ।

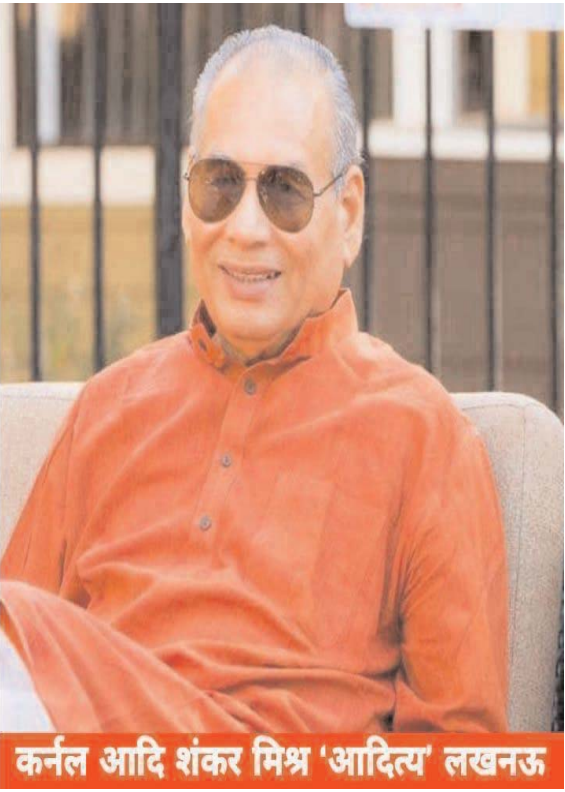
कविता में लीन होना भी उतना ही उत्तम होता है जितना ब्रह्मलीनता में, विश्वास अगर है इन दोनों के प्रति, तो नमन अवश्य है ऐसी प्रवीणता में।

चमकते सूर्य को दीपक दिखाना क्या, चाँदनी रात में जुगनू का उजाला क्या, धरती-अम्बर के मध्य सुरभिंत सुषमा, सीमाहीन सागर तट की सीमा क्या।

पाठकों, श्रोताओं की आकांक्षा में पूर्णरूप से खरे उतर रहे हो, किसी की प्रशंसा या आलोचना में निर्विवाद होकर खड़े हो रहे हो।

जब साधारण संवाद कविता के माध्यम से कोई कर सकता है, आदित्य रचनाधर्मिता की तुलना क्या साधारण कवि कर सकता है?

कर्नल आदि शंकर मिश्र 'आदित्य' लखनऊ



कर्नल आदि शंकर मिश्र 'आदित्य' लखनऊ

स्वच्छ रखें अपना परिवेश

स्वच्छता से हो उज्जवल अपना हर दिन प्यारा। स्वच्छ रखें सदैव हम यह परिवेश हमारा।।

जगमग करे हर गलियाँ सजीले हो हर आँगन। धरा का कोना-कोना महके जैसे चंदन।।

मिट्टी की सोंधी खूशबू हवा का हो आलिंगन। नदियों की धारा में बहे निर्मल सा जल जीवन।।

अपने कर्म से हर गली में गंदगी की दीवारें तोड़ो। स्वच्छता का ज्ञान फैलाकर नये सपनों को जोड़ो।।

कूड़ा न बिखराओ धरा पर न इसे राह पे छोड़ो। साफ-सफाई रखो सदा दिल को प्रेम से जोड़ो।।

परिवेश को संभालने का यह जिम्मा हमारा। स्वच्छता के दीप से सदा चमके देश हमारा।।

संजीवनी बने ये धरती स्वस्थ हो सात समाज। स्वच्छता से ही उन्नति का बनेगा सच्चा रिवाज।।
प्रतिमा पाठक कवियत्री/समाज सेविका दिव्नि

मौसम ऐ बारिश का खेल

आसमान में काली घटाएँ छाई है अपने आंचल में पानी भर लाई है बादलों ने भी खुब दौड़ लगाई है नदियों तालों की गोद भर आई है।।
ये धरा पर भी है अब हरा भरा उजाड़ जंगल भी है बेहद हरा हरा पहाड़ों का दर्शन भी है छहरा प्रकृति का दर्पण भी देखो भरा भरा।। झरनों में अब भी प्राण आ गए सोए थे भी वो नींद में जाग गए मस्त झीलों के दौर वापस आ गए घूमने झूमने वाले को ये भा गए।।
धरा का अभिषेक कर रहा आसमान वसुंधरा भी कर रही इसका गुणगान अब नहीं दिखेगा कई भी वीरान तारीफ़ करते है बहुत से कदरदान।।
कुदरत का ये खेल निराला है कहीं काली घटा कहीं उजाला है ये गर्मी अमस से राहत देने वाला है क्या कहें ये मौसम दिलवाला है।।



सुदीप सतीश सकरगायें(दीप)

आनंद नगर खण्डवा (मध्यप्रदेश)

द्रोपदी की करुण पुकार

गूंज रहा आर्तनौद सभा में,
दुपद सुता का।
मदद न कोई करता है।
पाँचो पति बैठे मौन,
बलहीन, शीश झुकाए।
पितामह भीष्म,द्रोण,
कृपाचार्य, विदुर भी,
दिख रहे लाचार बहुत हैं।।
दुर्योधन, दुश्शासन ,कर्ण,
शकुनि खुश हो,
अट्टहास करते हैं।
दुपद सुता का चिर खींच रहा दुश्शासन।
लिया वस्त्रहीन करने का संकल्प आज है।।
करुण पुकार द्रौपदी कर रही।
हे माधव! हे कृष्णा भाई!
जल्दी आओ,लाज बचाओ
अपनी बहना की।
सुन बहन की करुण पुकार,
माधव दौड़े आए हैं।।
चिर बढ़ाया अंतहीन माधव ने
दुश्शासन घबराया है।
खींचते-खींचते होश उड़ गए।
पर अंत नहीं पाया है।।
देख अद्भुत लीला माधव की।
चकराई सारी सभा है।
दुपद सुता? ने हाथ जोड़े,
माना आभार है।
जयहो मुरारी , जय गिरधारी।
भक्ति का मोल चुकाया है ।



चंद्रकला भरतिया नागपुर??

अंत :करण

अंत:करण व्यवहार का बना हुआ आधार पाप पुण्य की प्रेरणा को करता ये साकार अंत:करण यदि शुद्ध हो उठते पुण्य विचार कलुषित अंत:करण से बढते अत्याचार परनिन्दा सुनकर मिले तुमको खुशी अपार तो निश्चित ये जानिए मन कलुषित है यार निन्दा जिसकी भी सुने उससे होवे द्वेष अपार निन्दा सुनने से बचो जीवन का ये सार मन जब कलुषित हो जाता है हो जाते हैं पाप अंत:करण निर्मल रखे बचें पाप से आप अंत:करण की शुद्धता से बने त्याग के भाव परनिन्दा से मन पर तब नहीं पडता प्रभाव रूप रस व गन्ध का छोड़ो अब तो राग इन्द्रियों को वश में रखें हो जाएं सब त्याग मन में सुख साधन रमे निर्बल बुद्धि जान मन चंचल जब हो जाता जाए विषय भोग पर ध्यान फिर उस इन्सान के पतन को निश्चित मान विषय राग सब छोड़कर करो ध्यान अभ्यास त्याग करो तुम मोह माया का कितना भी हो कोई खास बचना हो यदि अगर तुम्हें करना फिर तुम ये काम सम्यक कर्मों को चुने कर्म करें निष्काम



स्व रचित प्रेम चंद सोनी तिजारा (राजस्थान) वाले अजरौदा फरीदाबाद

विषय, शहीद भगत सिंह

भारत का गौरव, भगत सिंह

28 सितंबर 1907 को बंगा में भगत सिंह ने जन्म लिया, 23 वर्ष की उम्र में शहीद होकर जनता को एक पैगाम दिया। भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन का था वो एक क्रांतिकारी, देशभक्ति की उसकी सोने में जलती रहती थी चिंगारी।

भगत सिंह एक लेखक के रूप में बहुत अच्छा लिखते थे, उनके लेखन को पढ़कर सबके दिल आजादी को धड़कते थे। भगत सिंह ने आजादी के लिए क्रांतिकारी संगठन बना लिया, लाहौर षड्यंत्र के मामले में सरकार ने फांसी की सजा का ऐलान किया।

23 मार्च 1931 को भारत का यह लाल फांसी पर चढ़ गया, मरते मरते भी वो सबके दिल में आजादी चिंगारी भर गया। भगत सिंह के रास्ते पर चलकर कई लोगों ने अपनी जान गंवाई, कई मासूमों के खून के बाद ही भारत ने सच्ची आजादी पाई।

कितने मतवाले थे भारत के यह साहसी वीर जवान, हंसते-हंसते दे देते थे अपने देश के लिए जान। काश! आज भी ऐसे सच्चे देशभक्त पैदा होने लग जाए, भारत को विश्व गुरु बनने से फिर कोई रोक न पाए।



सौ, भावना मोहन विधानी

बेटी

हिंदी के निवासी मेरे प्यारे भारतवासी सुनो।
बेटियों को गर्भ में गिराना बंद कीजिए।।
बेटी न बचेगी तो फिर कहाँ से लाओगे बेटे।
आदम के वंश को मिटाना बंद कीजिए।।
वर्ना भाई की कलाई रह जाएगी निहित सूनी।
अधम के पाप को बढ़ाना बंद कीजिए।।
एक ही के गर्भ से जन्म लेते बेटा- बेटी।
दोनों में यह भेदभाव लाना बंद कीजिए।।
एनआरआई की चमक देख के बने हो लोभी।
बेटियों का यूँ देश निकाला बंद कीजिए।।
अपने ही देश में भी खुश रहेगी बेटी।
पहले खुद बेटी को ठुकराना बंद कीजिए।।
सहनशीलता की होती है मूरत बेटी।
बेटी के हक को यूँ दबाना बंद कीजिए।।
हिंद के निवासी मेरे प्यारे भारतवासी सुनो।
बेटियों को गर्भ में गिराना बंद कीजिए।।



सरला विजय सिंह सरल